शाश्वत धर्म

सितम्बर + अक्टोबर १९९१

श्री सिद्धचक्रजी

नवपद सुखकारी, कर्म काटे करारी,
नमत भय निवारी, सेवना शुद्ध धारी.

संपादक - जे. के. संघवी

साहित्य मनिषी आचार्य देव श्रीमद्विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी द्वारा लिखित / सम्पादित उपलब्ध साहित्य आज ही मंगवाइये।

* नमो मन से नमो तन से — पांच रूपये
  नवकार पर आधारित प्रवचनों का सुन्दर संकलन (द्विरंगी मुद्रण)
* जीवन ऐसा हो — पांच रूपये
  (मार्गानुसारी के पेंतीस गुणों का वर्णन, द्विरंगी आकर्षक मुद्रण)
* जयन्तसेन सतसई — चार रूपये
  (विविद विषयों पर ७०७ दोहों का संकलन)
* ज्योतिष प्रवेश — सात रूपये
  (ज्योतिष सम्बन्धी प्रारंभिक जानकारी)
* नवकार गुण गंगा — पांच रूपये
  (नवकार पर सुन्दर / भाववाही स्तवनों का संकलन)
* चिर प्रवासी — चार रूपये
  (जीवन यात्रा के विभिन्न पड़ावों पर उपदेशात्मक मुक्तक)
* गुरूदेव पुष्पांजलि — तीन रूपये
  (श्रद्धेय गुरूदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरिजी के भक्ति गीतों का संग्रह)
* तीर्थ - वंदना — तीन रूपये
  (विविध तीर्थों के मूलनायक भगवंतों के स्तवन)
* भगवान महावीर ने क्या कहा ? (हिन्दी/गुजराती) — बीस रूपये
  (आगम ग्रन्थों से चुनी हुई २५० सुक्तियों पर सुन्दर विवेचन)
* भक्ति सागर — दो रूपये
  (स्तवनों का संकलन)
* अरिहंते शरणं पवज्जामि (हिन्दी/गुजराती) — दस रूपये
* यतीन्द्र मुहुर्त दर्पण — इक्कावन रूपये
  (मुहूर्त संबंधी वृहद् संकलन)
* भक्ति प्रदीप (स्तवन) — दो रूपये
* हेम मुक्ति स्वयं सुधा (गुजराती) — पांच रूपये
* नवकार आराधना (हिन्दी / गुजराती) — पांच रूपये
  (नवकार पर मननीय प्रवचन)
* अष्टान्हिका व्यख्यानम् — दस रूपये
  (पर्युषण व्याख्यान)
* जिनेन्द्र पूजा संग्रह (वृहद्) (गुजराती) — इक्कीस रूपये
  (विविध पूजायें रंगीन चित्रो के साथ)
* जिनेन्द्र पूजा संग्रह (लघु) — दस रूपये
  (विविध पूजाये रंगीन चित्रो के साथ)
* पंचप्रतिक्रमण विधी सह (पॉकेट साईज) — दस रूपये
  (प्रतिदिन आवश्यक क्रिया में उपयोगी)

उपरोक्त पुस्तकें मंगवाने हेतु मूल्य के साथ प्रति पुस्तक पोस्टेज एक रूपया जोड़कर मनीआर्डर निम्नांकित पते पर भिजवायें —

शाश्वत धर्म कार्यालय, जामली नाका, थाने - ४०० ६०१ (महाराष्ट्र)

1313

शाश्वतधर्म

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रवर्तक हिन्दी मासिक

संस्थापक - व्या. वा. आचार्यदेवश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

संपादक : जे. के. संघवी

सहसंपादक : शांतिलाल सुराना

: संपर्क सूत्र :

☎ 5340724

शाश्वतधर्म कार्यालय,

जामली नाका, थाने - ४०० ६०१. (महाराष्ट्र)

सदस्यता शुल्क

बीस वर्षीय	- तीन सौ रूपये
पांच वर्षीय	- एक सौ रूपये
वार्षिक	- पच्चीस रूपये

विज्ञापन शुल्क (एकबार)

पूरा पृष्ठ	- ३००/- रूपये
आधा पृष्ठ	- १७५/- रूपये
पाव पृष्ठ	- १००/- रूपये
अंतिम पृष्ठ	- ५००/- रूपये

(विशेषांक पर यह दर लागू नहीं है ।)

वर्ष : ३९ ★ अंक - ४-५ ★ सित.+अक्टू. १९९१

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा संचालित

अवैतनिक सम्पादन : अव्यवसायिक प्रकाशन

अनुक्रमणिका

सितम्बर + अक्तूबर १९९१

अपनी बात .... जे. के. संघवी 3
पूजा अर्चना .... आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी 5
कड़वा सच .... संकलित 6
मनुष्य का सनातन धर्म अहिंसा ....स्व. आचार्य श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी 7
प्रात पर्युषण का............................ श्री लक्ष्मीचंद सरोज 10
क्षमापना के दोहे .... मुनिराज श्री सम्यग्रत्नविजयजी 10
श्री सुविधानाथ जिन स्तवन (९) .... मुनिराज श्री जयानंद विजयजी 11
तप -अंतरग तप के लाभ .... कु. संगीता जे. संघवी 13
आचारांग की सूक्तियाँ (३) .... श्री पुखराज भंडारी 17
जिज्ञासा .... श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी 20
ज्ञानकसौटी (९) ....श्री महेन्द्र जे. संघवी 23
शब्दसागर ज्ञान स्पर्धा (५) .... प्रदीप एम. जैन 25
समाचार दर्शन 27

(ગુજરાતી વિભાગ)

શ્રી સદ્‌ ગુરુ પ્રસાદ...................................... શ્રીમદ્‌રાજચંદ્રજી ૪૮
આંખે ભર્યો સૂર્ય તણો પ્રકાશ ....મુનિ પ્રશાન્તરત્ન વિજયજી ૪૯
ચિતશુદ્ધિ : ધ્યાનને માટે અનિવાર્ય - વિનોબા ભાવે ૫૧

મૃગાવતી ....પં. શ્રી પૂર્ણાનંદ વિજયજી, કુમાર શ્રમણ' ૫૩

लेखक के विचारों से सम्पादक अथवा परिषद की सहमति आवश्यक नहीं है।

★ मिच्छामि दुक्कडम् ★

छद्मावस्था में भूल होना स्वाभाविक है। पयुर्षण पर्वाराधना के पावन अवसर पर विगत वर्ष में हमसे जाने- अनजाने में हुई समस्त भूलों, प्रमाद तथा अविनय के लिये आप सभी गुरुवर्यों, ग्राहकों, लेखकों, शुभेच्छकों से क्षमापना करते हैं। - 'शाश्वत धर्म' परिवार

शाकाहार कीजिये..... तन-मन से शुद्ध रहिये। ✩✩✩✩✩

अपनी बात

स्वतंत्रता के चवालीस वर्ष : एक लेखा–जोखा

– जे. के. संघवी

स्वाधीनता के चवालीस वर्ष पूरे कर हम पेंतालीस में प्रवेश कर गये हैं, तब आज की स्थिती पर दृष्टिपात करें तो हम पायेंगे कि देश रसातल में पहुंच गया है। 'सत्यमेव जयते' 'अहिंसा परमो धर्म' आदि हमारी संस्कृति की जो पहचान थी, आज सरेआम उसकी धज्जियाँ उड़ायी जा रही है। साक्षरता के अभियान हम बराबर तेज करते जा रहे हैं, किन्तु 'सा विद्या या विमुक्तये' वाली बात को भूलकर शिक्षा की पहचान डिग्री तक ही सीमित रह गयी है। राजनीति के गंदे वातावरण में विद्यार्थियों को ले जाकर युवा शक्ति का व्यय हो रहा है। छात्र व युवा वर्ग में विवेकशून्यता व विवेकहीनता बढ़ रही है। भ्रष्टाचार के राक्षस द्वारा नैतिकता की इज्जत लूटी जा रही है। काश्मीर, पंजाब व आसाम की समस्याएं, जिनका स्वाधीनता के पूर्व नामोनिशान नहीं था, आज विराट दैत्य की तरह मुंह फाड़कर सामने खड़ी है। निर्दोष नागरिकों की हत्या का सिलसिला आम बात हो गयी है। अपहरण, लूट व बलात्कार कांडो की कतार लग गयी है। इन वर्षों में हमारे नौकरशाहों, राजनेताओं एवं राजनैतिक दलों ने हमें खुद अपनी नजरों व दुनिया की नजरों में नंगा खड़ा कर दिया है। यही लोग गरीब जनता की गाढ़ी पसीने की कमाई पर ऐयाशी करते रहे व बजट बनाते गये। वातानुकूलित कमरों में बैठकर तरकी की नीतियाँ बनाते रहे। 'गरीबी हटाओ' 'आराम हराम है' के मात्र नारे देते रहे, 'गांधीवाद' 'रामराज्य' या 'समाजवाद' के सुनहले सपने दिखाते रहे। इनके वादों, नारों और घोषणाओं पर भोलीभाली जनता ने विश्वास किया और सारे अधिकार इनको सौंप दिये। इन्होंने जब भी जैसा चाहा मनमाने ढंग से पंचवर्षीय योजनाओं के चक्रव्यूह रचे। संविधान निर्माण से लेकर उनमें मनचाहे परिवर्तन तक की छूट जनता ने इन्हें दी उसका पूरा लाभ उठाया इन्होंने अपनी स्वार्थपूर्ति में। इनकी हर सुख–सुविधा के लिए प्रजा ने कुर्बानी दी। इनकी बातों पर भरोसा कर आम प्रजा करों के भारी बोझ को इसलिए सहन करती गयी कि अगले वर्ष के बजट में घाटा पूरा हो जायेगा। किन्तु घाटे की खाई इनकी गलत नीतियों के कारण प्रतिवर्ष बढ़ती चली गयी, इन चवालीस वर्षों में आम जनता को मात्र विश्वासघात मिला।

आज उपस्थित महंगाई, आतंकवाद, वर्ग विग्रह आदि घटनाओं के लिये शासक वर्ग के नेता जबाबदार है, जब तक उनके द्वारा मात्र अपने या दल के हित को मध्यनजर रख कर लिये जाने वाले निर्णयों में सुधार न होगा, उनकी कथनी करनी में समानता नहीं आयेगी, दो मुंही बातें बन्द नहीं करेंगे तब तक समस्या का समाधान संभव नहीं है। विरोधाभास खत्म करने पर ही सारी समस्याओं को ईमानदारी से निपटाया जा सकता है।

आझादी के बाद नेहरूजी ने गांधीजी की नीतियों पर चलने की कसम खाई थी। गांधीजी ने कहा था कि यदि मुझे सत्ता मिले तो सबसे पहला मैं यह कार्य करूंगा कि

शराब बिक्री बंद हो। जिस व्यसन ने भारत की गरीब प्रजा को बुराई के गर्त में डूबोया है उस बुराई को गांधी के नाम की दुहाई देनेवाली सरकार क्यों बंद नहीं करती? विक्रीकर का प्रावधान इसीलिए किया गया था कि सरकार की आय शराबबंदी करने पर कम मिलने वाले टेक्स की इसके द्वारा पूर्ति हो सके, किन्तु आज शराब के लायसेन्स भी, अपनी जेबें भरकर, राजनेता बराबर देते जा रहे हैं व विक्रीकर भी लागू है।

धर्म निरपेक्षता को अल्पसंख्यकों के तुष्टिकरण एवं बहुसंख्य के दमन का हथकंडा बना दिया गया है। जब भारत का संविधान सभी नागरिकों से समान व्यवहार की बात करता है तब मजहब के आधार पर व्यक्तिगत कानून अलग क्यों बनाये गये हैं। समस्त भारतवासियों के लिये समान नागरिक कानून क्यों नहीं?

सरकार यह मानती है कि धुम्रपान स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है, इसीलिए सिगरेट के पॉकिट पर यह प्रकाशित करना अनिवार्य किया है, दूसरी ओर महिला सिगरेटों के उत्पादन के लिये भारत की ख्यातनाम सिगरेट कंपनी गोल्डन टोबेको कंपनी को मेस (एम. एस.) सिगरेट उत्पादन के लिये लायसेंस देती है।

जातिवाद का विरोध करने वालों द्वारा मंडल आयोग के जरिये जातिवाद को प्रोत्साहन दिया जाता है। आरक्षण द्वारा अयोग्यों को योग्यों से उपर वरियता दी जाती है।

सेंसर बोर्ड द्वारा हिंसक एवं नग्नता से भरपूर चलचित्रों को सर्टीफिकेट दिये जा रहे हैं, फलस्वरूप युवाशक्ति वासना एवं हिंसाचार का शिकार होती जा रही है।

डॉक्टरों द्वारा संशोधनों के पश्चात् यह सिद्ध हो चुका है कि शाकाहार मानवीय आहार है। अंडे या मांसाहार से कई रोगों की उत्पत्ति होने के साथ ही मानव की हिंसक प्रवृत्ति में सहायक बनता है फिर भी सरकार योजनापूर्वक कत्लखाने खोल रही है। विदेशी मुद्रा के भ्रमजाल में देश का पशुधन नष्ट करने पर तुली हुयी है। हम सभी से टेक्स के नाम पर वसूल किये गये पैसों का पॉल्ट्रीफार्मों आदि हिंसाजन्य कार्यों में सबसिडी के रूप में उपयोग करना कहाँ तक न्याय संगत है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व किसी ने महात्मा गांधी से पूछा कि गो–वंश हत्या बंदी व स्वतंत्रता, इन दोनों में से किसी एक को चुनना पड़े तो आप क्या चुनेंगे। गांधीजी का जबाब था कि मैं गो–वंश हत्या बंदी को अग्रता दूंगा। खेद है कि आज भारत को स्वतंत्रता मिलने के ४४ वर्षों बाद भी यह कानून नहीं बन पाया है। मध्यप्रदेश राज्य मात्र में तीन महिने पहले भा. ज. पा. के शासन काल में यह कानून बन पाया है।

इस प्रकार वोटों की राजनिति, दलगत एवं निजी स्वार्थ के कारण देश कर्ज के गर्त में डूबता चला जा रहा है। भ्रष्टाचार, राजनेताओं की असामाजिक तत्वों से सांठ–गांठ एवं न्याय में देरी के कारण आम जनता का विश्वास सत्य, ईमानदारी आदि मानवीय गुणों से बराबर उठता चला जा रहा है। फलस्वरुप अराजकता, महंगाई का साम्राज्य फैलता चला जा रहा है।

सारी स्थितियाँ हमारे सम्मुख है, अब भी आंखे मूंद कर अंधी दौड़ लगाने के बजाय यदि हम शांति से सोचकर पुनर्विचारणा करें तो ठीक वरना स्थिती और बदतर होती जायेगी।

पूजा - अर्चना

आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी

जिससे
आत्मसंतोष हो!
मानसिक सन्तोष हो!
चित्त में प्रसन्नता हो, परमात्मा से अभिन्नता हो,
और हो जीवन की परम श्रेष्ठ अनुभूतियाँ।
वही पूजा है,
वही अर्चना है
और वही है वन्दना, अभिवन्दना।

चित्त से पूजा का चिन्तन हो, मन से मनन हो और फिर आत्मिक भावों का आकलन एवं संकलन हो, तब ही पूजा की पूर्णता के राजमार्ग पर आरूढ़ हो सकती है आत्मा

जीवन-वृक्ष को सफल एवं सघन बनाने के लिए यह भी योग बतलाया है शास्त्रकार महाराजाओं ने

देवाधिदेव एवं उनकी पूजा में—

द्रव्य एवं भाव के भेद का ज्ञाता बन कर आत्मा प्रवृत्तिशील रहती है तब विशुद्धि के चरम शिखर पर आसीन हो सकती है।

अङ्गपूजा, अग्रपूजा, अष्टप्रकारी, नवाणुप्रकारी, पंचोपचारी, षोड़षोपचारी, कर्मनिवारणकारी, सतरभेदी आदि अनेक प्रकारी पूजाओं का वर्णन शास्त्रों में वर्णित है।

इन पूजाओं का परिणाम है भाव की शुद्धि, भाव की वृद्धि एवं आत्मगुणों की समृद्धि।

परमोत्कृष्ट पद पर आसीन देवाधिदेव देवदेवेन्द्रों नरनरेन्द्रों से संपूजित विश्ववन्द्य हैं। उनके चरणों में जो आत्मा सर्व मुक्त हो समर्पित हो जाती है उस आत्मा का अभ्युत्थान होकर समुत्थान हो जाता है।

अनन्त करुणावत्सल वीतराग प्रतिमा की पूजन तब से चली आई है जब से अक्षर का आकार चला है। इसलिए कि निराकार को समझने के लिए आकार चाहिये।

मन की गति या मन्थन की स्थिति सुदृढ़ करने के लिए परमात्मा के बाह्य स्वरूप को समझना अनिवार्य है।

जब तक अप्रशस्त आकार से सम्बन्ध है तब तक निराकार के प्रशस्त आकार से सम्बन्ध रखने से ही परिणामों की विशुद्धि, समृद्धि एवं उत्थान सम्भवित है।

परमात्मा को सम्यग्ज्ञान से समझना, सच्ची श्रद्धा से मानना एवं समझपूर्वक स्वीकार कर उनकी पूजा-अर्चना, आचारणा एवं भक्तियुक्त क्रियात्मक प्रवृत्ति में लीन रहना ही आत्माभिमुखी बनने का और अंततोगत्वा सदानन्दी परमानन्दी बनने का श्रेष्ठतम साधन है।

भावपूर्वक की गई पूजा भव को मिटाती है, भावना बढ़ाती है और आत्म-रमणता की ओर प्रेरित करती है।

कडवा सच.

- इस अकाट्य तथ्य को हम अपनी आँखों से ओझल नहीं होने दे सकते कि हम वही होते हैं, जो खाते हैं, जो पीते हैं, और जो फेफड़ों में खींचते है।
- जो लोग मांसाहार करते हैं उनकी आतों में स्कैटोल, इंडोल, टाइरैमिन, फेनिलएथिलैमिन-जैसी घातक, जहरीली और जानलेवा रसायनें पैदा हो जाती हैं।
- यह मान्यता पूरी तरह तर्कसंगत है कि रासायनिक दृष्टि से मनुष्य का पाचन-तन्त्र अधिक प्रोटीन खाने-पचाने के लिए नहीं बना है।
- पशुओं का एक पौंड मांस बीस पौंड वनस्पतिजन्य प्रोटीन खाने पर बनता है, फिर हम सीधे ही वनस्पति-प्रोटीन ग्रहण क्यों नहीं कर लेते ?
- पश्चिम के एक आहार-समीक्षक ने लिखा है कि 'अविकसित और अल्प-विकसित मुलकों से लाभ उंने के लालच में हमने उन देशों में जहां पहले शाकाहार प्रचलित था, मांसाहार को लोकप्रिय बनाने का दुष्प्रयास किया है।
- आहारविद् जॉन रसल का कथन है कि यदि मनुष्य वनस्पतिजन्य आहार को सीधे ही ले तो उत्पादन प्रति एकड़ दस गुना बढ़ सकता है।
- दुनिया की तमाम सरकारें, अर्थशास्त्री, उद्योगपति और अन्तर्राष्ट्रीय कल्याण संगठन अब यह अनुभव करने लगे हैं कि हमारी अपव्ययी जीवनशैली में गौ, चूजों और अन्य जीव-जन्तु-जनित प्रोटीन की जगह वनस्पतिजन्य प्रोटीन आ जाए तो यह विश्व अधिक बेहतर शक्ल ग्रहण कर सकता है।
- पेड़-पौधें जल; कार्बन डायोक्साइड, और नाइट्रोजन से, जो प्रोटीन के प्राथमिक स्रोत हैं, प्रोटीन तैयार करते हैं।
- यदि हम वनस्पति-जन्य आहार और मांस की निष्पक्ष तुलना करें तो पायेंगे कि कैलेरियों, प्रोटीनों तथा अन्य अनिवार्य पोषक तत्त्वों की दृष्टि से शाकाहार अधिक सस्ता, सहज-सुलभ और स्वाभाविक है।
- यदि विज्ञान ने एक बार भी नैतिक मूल्यों से तलाक ले लिया तो फिर बुराइयों और बर्बरताओं के लिए किसी भी गहराई तक द्वार खुल जायेंगे।

—आधार : फूड फॉर ए फ्यूचर/जॉन विने टायसन

मनुष्य का सनातन धर्म अहिंसा

स्व. आचार्यश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी

अहिंसा सव्वं च अतेणगं च, तत्तो य बंभं अपरिगहं च।
पड़िवज्जिया पञ्च महव्वयाणि, चरिज्ज धम्मं जिणदेसियं विद्।।

उत्तराध्ययन सूत्र के २१ वें अध्ययन में कहा है कि अहिंसा, सत्य, अस्त्येय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इन पाँच महाव्रतों को स्वीकार कर के बुद्धिमान मनुष्य जिनेन्द्र द्वारा उपदिष्ट धर्म का आचरण करे, भली-भाँति से पालन करे।

अहिंसा सत्यमस्त्येय त्यागो मैथुनवर्जनम्।
पञ्चस्वेतेषु धर्मेषु, सर्वे धर्माः प्रतिष्ठिताः।।

१ अहिंसा—प्राणिमात्र की रक्षा करना, किसी का बुरा न चाहना। २ सत्य—कभी किसी प्रकार का झूठ न बोलना। ३ अस्त्येय—छोटी या बड़ी किसी जाति की चोरी न करना, तस्कर-वृत्ति को छोड़ना। ४ त्याग—लोभ लालच का त्याग करना, सन्तोष रखना और ५ मैथुनवर्जन-विषयाभिलाषा को छोड़ना, इन्द्रियों के विषय का परित्याग करना। ये पाँच शाश्वत-धर्म कहलाते हैं। इनमें अहिंसा धर्म सर्वोपरि है जिसके बिना सत्यादि धर्म सत्य रूप में परिणत नहीं होते।

सर्वतः और देशतः अहिंसा परिपालन के दो प्रकार है। सर्वत्यागी श्रमण, निर्ग्रन्थ, इसका पालन त्रिविध योग से करते हैं, अतः उनकी अहिंसा बीसविस्वा मानी जाती है। जो आरम्भ-समारम्भी गृहस्थ नियमित धंधे में निमग्न हैं और मोहनीय कर्म के वशवर्ती हैं, वे इसका पालन देशतः करते हैं। उन की अहिंसा सवाविस्वा कही जाती है। दूसरे रूप में कहा जाय तो इसको सर्व विरति और देशविरति धर्म के नाम से अथवा साधु-धर्म और श्रावकधर्म के नाम से भी पहचान सकते हैं। इसका वास्तविक संक्षिप्त स्वरूप नीचे दिये विवरण से भली भाँति समझ में आ सकता है।

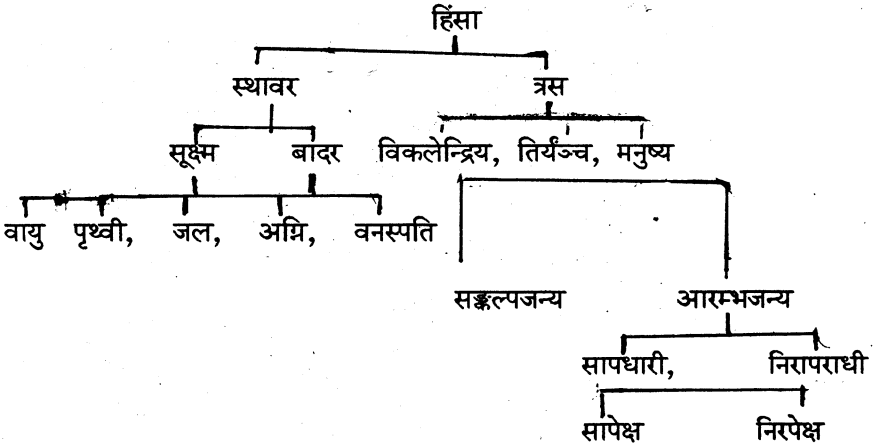

१ पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति,ये पांच सूक्ष्म, नारक और देव ये जीव शस्त्रादि के प्रहार से नहीं मर सकते अपने आयुष्य के पूर्ण होने से ही मरते हैं। इस लिये गृहस्थ या किसी भी व्यक्ति से इन का विनाश होना असम्भव और सर्वथा अशक्य है। परन्तु जीवन-निर्वाह के लिये बादर, स्थावर जीवों की हिंसा गृहस्थों के लगे बिना नहीं रहती। भोजन बनाने-बनवाने, घाँस काटने-कटवाने, चूल्हा-दीपक सिलगाने, मिट्टी खोद कर मँगाने, पङ्खा ढालने-ढलवाने, नहाने, वस्त्रादि धोने-धुलवाने आदि क्रियाओं के करने कराने में हिंसा होना अनिवार्य है। इसीलिये गृहस्थ बादर-स्थावर की हिंसा का त्याग नहीं कर सकता, पर उसका प्रमाण कर के उस हद में रह कर हिंसा करता है।

२ खेती, धान्य आदि का व्यापार, मकानादि का निर्माण करना-कराना और शरीर के सटित अवयवों में पड़े हुए कीट आदि का उपचार करना-करवाना इत्यादि क्रियाओं में विकलेन्द्रिय जीवों का वध होना स्वाभाविक है। अत: गृहस्थ आरम्भजन्य हिंसा से अलग रह सकता है। द्विन्द्रिय जीवों का बचाव कर सकता है।

३ चोर चोरी करने को घर में आया, धाड़पाडुओं के फ़ंद में फँसना पड़ा, अपनी स्त्री पर किसी ने बलात्कार किया और हिंसक शेर व्याघ्र भुजंग आदि का मरणांत कष्ट उपस्थित हुआ अथवा राज्य की नौकरी के कारण युद्ध में जाना पड़ा। ऐसी परिस्थिति में अपने बचाव के लिये उचित उपाय लेना पड़ता है। इसलिये गृहस्थ को सापराधी हिंसा से छुटकारा नहीं होता। अपराधी को हाथ दिखाना ही पड़ता है। गृहस्थ निरपराधी के वध से सदा अलग रह सकता है।

४ अपने पुत्र, पुत्री, स्त्री, नौकर, कुटुम्बी आदि को उचित शिक्षा देने, दिलाने के लिये ताड़ना-तर्ज़ना, बैल, भैंसा, घोड़ा आदि को वादिया करना या उनके नाक में डोरी डालने के लिये छेद करना-कराना, उनका वाहन में अरठ, घाणी में जोतना, उन पर शक्ति उपरान्त बोझा लादना-लदाना, न चलने पर उन पर लकड़ी आदि से प्रहार करना-कराना इत्यादि सापेक्ष निरपराधी हिंसा से गृहस्थ बच नहीं सकता। अपने निर्वाह के लिये उसे उक्त कार्य विवश हो करने, कराने पड़ते हैं। इसलिये मारने की बुद्धि से निरपराधी, निरपेक्ष, त्रस ज़ीवों की हिंसा गृहस्थ को नहीं करना, कराना चाहिये।

कहने का मतलब यह है कि गृहस्थाश्रम की समस्या बड़ी विकट है, उसको हल करने के लिये कई पहलू का आश्रय लिये बिना काम नहीं चलता। इसीसे शास्त्रकारों ने लिखा है कि इरादा पूर्वक किसीको जानबूझ कर सताना और सत्तामद, लौलुपता, कौतुक एवं उच्छृङ्खलता से किसी को कष्ट पहुँचाना या मारना हिंसा है, परन्तु अपने ऊपर अथवा कुटुम्ब, देश, समाज, गांव और धर्म पर अत्याचार, अन्याय एवं जुल्म गुजारने वालों को हाथ दिखाना, उनका हर तरह प्रतिकार करना और उनको उचित शिक्षा देना गृहस्थों के लिये हिंसा नहीं है। वरनाग श्रावक (गृहस्थ) ने दो उपवास की तपस्या का पारणा करने के लिये बैठते समय युद्ध-बिगुल सुन कर तेला का प्रत्याख्यान लिया और स्वदेशादि की रक्षा के निमित्त युद्ध किया। इसी प्रकार महामन्त्री उदयन, वाग्भट्ट, विमलशाह, वस्तुपाल, तेजपाल,

भामाशाह आदि कई वीर पुरुषों ने युद्ध किये। आततायियों को शिक्षा दिये दिलाये बिना गृहस्थ-जीवन का उचित रीति से निर्वाह नहीं हो सकता।

इस विवेचन का यह आशय नहीं कि गृहस्थ जीवन के निर्वाहार्थ हिंसाजनक प्रवृत्ति अकारण करते ही रहना। अपना-अपना जीवन प्राणि-मात्र को प्रिय है। सुख सब को अच्छा और दुःख सबको अप्रिय लगता है। जितने अंश में हिंसा कम करने का प्रयत्न किया जाय और गृहस्थाश्रम में काम आने वाली भोग्योपभोग्य वस्तुओं को यतना से अच्छी तरह निरीक्षण कर वापरी जाय उतना ही लाभ है। सारा पापाश्रव अयत्नाचार समाचरित होने से पाप-बन्ध का कारण बनता है। कहा भी है कि :—

मरदु व जियदु व जीवो, अयदाचारस्स णिच्छिन्दा हिंसा।
पयदस्य णत्थि बन्धो, हिंसा मेत्तेण समिदस्स।। १।।

यत्ना-रहित आचार प्रवृत्ति में चाहे जीव मरे या न मरे हिंसा का पाप लगता ही है और यत्न पूर्वक प्रवृत्ति में हिंसा होने पर भी उसका पाप नहीं होता। इसलिये योग्य चूल्हा, बरतन, आटा, दाल, लकड़ी, छाना, शाक, धान्य, व्यवसाय, जल , मकान-निर्माण आदि गृहस्थ जीवन निर्वाह कार्यों में यतना और विवेक पूर्वक पूरी सावधानी से तपास कर के काम लिया जायगा तभी तज्जन्य पापकर्म का बंध कम होगा। आत्म-रक्षा शासन और सङ्घ आदि की रक्षा के वास्ते किसी को उचित शिक्षा देनी पड़े तो वह गृहस्थ के लिये अनुचित नहीं है। हो सके जहाँ तक हिंसाजन्य प्रवृत्ति कम करने की भावना रखनी चाहिये जिससे आत्मा पापकर्म के बन्ध से बच सके।

आत्महत्या महाहत्याओं में से एक है। कहावत भी है कि— 'आत्म-घाती महापापी' महा पापी को सद्गति कभी नहीं मिलती। इससे अपनी इज्जत रक्षा या किसी कारण की उपस्थिति में आत्महत्या करनी अच्छी नहीं है। ऐसे अवसर को टालने के लिये देश या गाँव को छोड़ कर चले जाना अच्छा है। अगर ऐसा भी मौक़ा न मिले और आत्मा की हत्या किये बिना न चल सके तो अनशन करके सब वस्तु का परित्याग कर चार मङ्गल शरण का ध्यान करते हुए इस शरीर को छोड़ देना विशेष लाभकर है— समाधि-मरण से मरना सर्वोत्तम है। आर्त, रौद्र ध्यान के साथ मरना कभी अच्छा नहीं है।

हिंसादि दुराचरणों की लालसा को छोड़कर जो मनुष्य अहिंसादि सद्धर्माचरणोंका जितने जितने अंश में अधिक पालन करता है उसकी उतनी ही अधिक आत्म-प्रगति होती है जिस के फलस्वरूप वह अपने ऊँचे ध्येय पर पहुंच कर अपना और दूसरों का आत्मोद्धार करता हुआ सदा शाश्वत सुख का अधिकारी बनता और जन्म-मरण से छुटकारा पाता है, ऐसा शास्त्रकारों का मन्तव्य है।

★ दूसरों को सुधारना है? मात्र उपदेश से यह काम नहीं होगा। जिसको सुधारना है, उसकी आप के प्रति स्नेहयुक्त श्रद्धा है? फिर ज्यादा उपदेश की आवश्यकता नहीं है। आपके इशारे से ही वह सत्पथगामी बनेगा।

प्रात पर्यूषण का

लक्ष्मीचन्द्र 'सरोज'

स्वर्ण पुरुष की सृष्टि, प्रात पर्यूषण का।
शुभ भावों की वृष्टि, गात मन भूषण का॥
क्षमा कह रही क्षमा मांग ले भूलों वाले।
धोले मन का मेल, प्रात पर्युषण का॥
मन्द छन्द कह गया, मार्दव, मन के धन सा।
अब तो तज अभिमान, प्रात पर्यूषण का॥
दिखा रहा लो मन-दर्पण में, आर्जव मुखड़ा।
उज्ज्वल कर व्यवहार, प्रात पर्यूषण का॥
लख रहा पर बढ़ा कहाँ तक सौच, स्वयं ही।
एकरूपता धार, प्रात पर्यूषण का॥
सत्य सजग हो, सिखा रहा है अपनी भाषा।
साहस कर मत हार, प्रात पर्यूषण का॥
संमय कहता, जीवन कर ले शुद्ध स्वर्ण सा।
पा जग से उपहार, प्रात पर्यूषण का॥
तप कहता पत तो रख, मानव निज जीवन की।
तप करता उपकार, प्रात पर्यूषण का॥
त्याग कहे जो त्याग करे, बादल सा ऊँचा;
निश्चय हो जयकार, प्रात पर्यूषण का॥
आकिञ्चन्य सिखाता, निशि-दिन जग-जन को।
कर अपना उद्धार, प्रात पर्यूषण का॥
ब्रह्मचर्य-सन्देश दे रहा, बढ़ आगे अब।
अमर मुक्ति स्वीकार, प्रात पर्यूषण का॥
दिव्य ध्वनि की दृष्टि, प्रात पर्यूषण का॥
हर्षमयी सब सृष्टि, प्रात पर्यूषण का॥

क्षमापना के दोहे

अप्पा वैर न राखीये, कोई जीव सुं आज।
खमी खमावो सर्व ने, आतम शुद्धि काज॥ १॥
वैर विरोध कीधा हसे, लक्ष चौरासी मांय।
जीव योनि खमावीये, शत्रु मित्र सम जोय॥ २॥
जिन आणा शिरधारी ने, खमुं संवच्छरी दिन।
वाहळा वैरी ने सवि, रहुं आत्म मां लीन॥ ३॥
खमजो बंधु प्रेम थी, मुज थी थया अपराध।
बे कर जोडी विनवुं, **सम्यग्** पर्व आराध॥ ४॥

मुनिराज श्री सम्यग्रत्नविजयजी

श्री सुविधिनाथ जिन स्तवन (९)

विवेचन-मुनिराज श्री जयानंदविजयजी

(वाटलडी विलोकुं रे बीजा जिन तणी रे-राग)

सुबुद्धि विचारूं रे, सुविधि जिनेश नी रे, यतीन्द्र ने कही जिणे जेह।
सूत्र संक्षेपे रे सूक्ष्म संपदा रे, तंत न लहु कित तेह।। सु. ।। १ ।।

भावार्थ : *नवम सुविधिजिणंदजी ने जब लोकालोक का स्वरूप अपनी ज्ञानचक्षु से पूर्णरूपेण जान एवं देख लेने के बाद प्रथम पर्षदा में जो देशना दी उस समय के भावों को वाचा बद्ध किया है प्रथम गाथा में गुरुदेव श्री ने।*

हे भगवंत! सुविधिजिनेश्वर! आप श्री की सुबुद्धि का विचार कर रहा हूँ कि आप श्री ने यतिओं के इन्द्र अर्थात् साधु भगवंतो के गुरु स्वामी गणधर भगवंत को सूत्रागम रहस्य अर्थ रूप में समझाया और गणधरों ने उसे सूत्र रूप में गुंफित किया। अर्थात् आप श्री के द्वारा त्रिपदी को प्राप्त कर द्वादशांगी की रचना अंतर्मुहूर्त में की।

यतिओं के लिए मुमुक्षुओं के लिए द्वादशांगी मौलिक संपत्ति है, जिस संपत्ति से आत्मिक सुख की प्राप्ति सहज सुलभ है। पर उसके गहन तत्त्वों का किनारा मैं अपनी अल्प बुद्धि से पा नहीं सकता। इसके लिए तो आप की कृपादृष्टि ही चाहिये जो आप श्री की भक्ति द्वारा प्राप्त होगी।

आप श्री की भक्ति अर्थात् आज्ञा पालन करना। पर कालिकाल में यह भी कितना कठिन हुआ है उसका दिग्दर्शन आगे की गाथा में दर्शाया है।

गच्छान्तर गेले रे गुरुगम गम्यो रे, निर्पक्षी नहीं नाथ।
जेह जेह जपे रे निज निज जुक्ति ने रे, पडिया गच्छ मत पाथ।। सु. ।। २ ।।

भावार्थ : *पंचम काल में/कलिकाल में गीतार्थ गुरु भगवंतों के अभाव में एवं निर्पक्षी सुगुरु भगवंत न होने से हे सुविधिनाथ! गच्छों में अन्तर गिरने लगा। विशेष दुःखद हकीकत यह हुई कि सभी जन स्व-स्व कल्पनानुसार स्व-स्व युक्तियों को प्रथम स्थान देने लगे जिससे गच्छ भेद अधिक हुए और मन भेद बढ़ने लगा। जिससे आज्ञापालन रूप भक्ति अधिक कठिन हो गई।*

सिद्धांत साखे रे संजम संचरुं रे, लोक लहे लखवाद।
ग्रंथ गणावे रे गच्छ गुरु ज्ञान ने रे, वचन वहां विषवाद।। सु. ।। ३ ।।

भावार्थ : *कालिकाल के प्रभाव से मतिभ्रम लोग जन्मने लगे उसमें किसी ने कहा कि हम तो सिद्धांत की साक्षी से संयम का परिपालन करते हैं। हमारे गच्छ संस्थापक ने ग्रंथ की प्रामाणिकता जितनी दर्शाई है वे ही प्रामाणिक ग्रंथ है, दूसरे अप्रामाणिक। उन ग्रन्थों में जो*

लिखा है उस अनुसार हम संयम का परिपालन करेंगे। इस प्रकार वचन विषवाद भी अधिक होने लगा है।

पंचांगी रंगी रे पेखुं पादरी रे, जेह थी जग जय जोर।
स्याद्वाद साधुं रे संशय शोधवा रे, तर्क नी ए तो नहीं तोर। सु. ।। ४ ।।

भावार्थ : हे सुविधिनाथ भगवंत मुझे तो आप की पंचांगी में जो कहा है, वही प्रमाण है, मैं तो उस पंचांगी को सरल देख रहा हूँ। चाहे जैसा कालिकाल हो पर जिन शासन की जय जयकार पंचांगी की प्रामाणिकता से हो रही है। उसमें (पंचांगी में) स्याद्वाद की मुख्यता है संशय का कहीं नामों निशान नहीं। वहां तर्क का तो तोर अर्थात् शक्ति काम ही नहीं कर सकती।

तो हवे लाजी तुम निर्वद्यता रे, धारु धर्म धुरेन्द्र।
संयम साह्यो रे स्नेही स्वामीजी रे, राखं ज्यो सूरि राजेन्द्र ।। सु. ।। ५ ।।

भावार्थ : इस कालिकाल में हे धर्म धुरेन्द्र! श्री सुविधिनाथ भगवंत अब मुझे आपकी निर्वद्यता स्पष्ट रूप से दृष्टि गोचर होती है, अतः मेरे लिए तो अब पंचांगी पूर्ण रूपेण प्रमाण है कारण कि उसी में निर्वद्य समाचारी निहित है वही निर्वद्य आचरणा दर्शा रही है उसी अनुसार धर्मक्रिया द्वारा संयम परिपालन कर रहा हूँ अतः हे देवाधिदेव मेरी सुरक्षा करना।

गुरुदेव श्री ने इस स्तवन में पंचांगी को प्रमाणभूत मानने का एवं पंचांगी प्ररुपित क्रिया ही सही मार्ग है, ऐसा दर्शाकर भक्त गण का मार्ग प्रशस्त किया है।

ज्ञान कसौटी (९) के उत्तर

(२०१) तेजस शरीर (२०२) आगम, पैंतालिस (२०३) अर्धमागधी(२०४) हाँ, आगमों के आलावा भी जैन साहित्य बहुत विशाल है (२०५) क्रमशः १४ हजार, ३६ हजार, १,५९,००० और ३,१८,००० (२०६) पुरोहित मरूभूति के भव में (२०७) मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, योग और प्रमाद (२०८) उत्कृष्ट- सात हजार वर्ष एवं जघन्य अंतर्मुहूर्त (२०९) उ.-तीन दिन, ज.- अंतर्मुहूर्त (२१०) उ.-तीन हजार वर्ष, ज. अंतर्मुहूर्त (२११) दो- प्रत्येक एवं साधारण (२१२) उ -बारह वर्ष, ज.-अंतर्मुहूर्त (२१३) उ. ४९ दिन, ज. अंतमुहूर्त (२१४) उ-छः माह, ज.-अंतमुहूर्त (२१५) चार। देवता, मनुष्य, तिर्यंच, नारकी (२१६) चार-वैमानिक, ज्योतिष, भवनपति, व्यंतर (२१७) उ-३३ सागरोपम, ज.-दस हजार वर्ष (२१८) उ. एक करोड़ पूर्व ज.-अन्तर्मुहूर्त (२१९) एक पूर्व (२२०) हाँ, महाविदेह क्षेत्र में (२२१) उ.-३३ सागरोपम, ज.-दस हजार वर्ष (२२२) उ.-सात हाथ, ज.-एक हाथ (२२३) उ.-पांच सौ धनुष ज.-तीन हाथ (२२४) नहीं (२२५) आठवें सहस्त्रार

★ सदाचारों के पालन से जीवन में शान्ति मिलती है। सदाचारों को छोड़कर सुख पाने का पुरुषार्थ करने से सुख के साथ अशान्ति मिलती है। अशान्ति में सुख का उपभोग नहीं हो सकता।

तप - अंतरंग तप के लाभ !

□कु. संगीता जे. संघवी (थाने)

साधक का लक्ष्य मोक्ष होता है। लेकिन बिना किसी माध्यम के मोक्षपुरी पर कदम रखना मुश्किल ही नहीं असंभव भी है। जिस प्रकार ध्वनि को प्रसारित होने के लिए हवा के माध्यम की आवश्यकता होती है और उसी प्रकार प्रकाश के प्रसारण के लिए भी हवा के माध्यम की आवश्यकता होती है। कुल मिलाकर यह नक्की हो जाता है कि मन्जिल तक पहुँचने के लिए किसी न किसी माध्यम की आवश्यकता होती है। तप को माध्यम मानकर मोक्ष की मन्जिल तक पहुँचने का सरल रास्ता साधक चुन सकता है।

इच्छाओं पर अंकुश रखना ही तप का मूल उद्देश्य रहा है। तप से साधक कलह और कपट से भरी दुनिया से दूर अपनी एक अलग दुनिया बसा लेता है, जिसमें सिर्फ वह और उसका लक्ष्य है। न तो कोई विघ्न है न कोई बाधा। वह अपने लक्ष्य से सीधा संबंध रखने की लगातार कोशिश करता रहता है। भावनाओं की शुद्धि/अशुद्धि के अनुपात से वह उसमें सफल/असफल होता है। हालाँकि सफलता की सीढ़ियों पर चढ़ना बहुत कठिन काम है, इसमें पैर फिसलने से गिरने का डर बना रहता है लेकिन फिर भी साधक का हौंसला बुलंद हो तो कठिन काम भी उसके लिए आसान बन जाता है।

निम्नलिखित अंतरंग तपों के सहारे साधक मोक्ष का द्वार खटखटाने का अधिकार पा सकता है।

प्रायश्चित, विनय, वैयावच्च, स्वाध्याय, ध्यान और व्युत्सर्ग।

१) **प्रायश्चित :** यह आत्मा को पवित्र बनाने वाला अंतरंग तप का पहला भेद है। जब आत्मा में अनिवृत्तिकरण रूपी सर्वथा अभुतपूर्व शक्ति आती है तब सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है। बिजली का बटन दबाते ही जिस प्रकार अंधकार के तामस पुद्गल भी तैजस प्रकाश करनेवाले हो जाते है। उसी प्रकार मिथ्याज्ञान भी पलक झपकते ही सम्यग्ज्ञान में रूपांतरित होता है। सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति के बिना मोक्ष का टिकट मिलना असंभव है। अपनी त्रुटियों को जानकर उनकी आलोचना करना ही प्रायश्चित है। प्रायश्चित साधक को दृढ़संकल्पी बनाता है। और उसे मनोवैज्ञानिक ढंग से सोचने की समझ देता है। मोक्ष जैसी दुर्लभ वस्तु उसके लिए सरल और सुलभ हो जाती है। वह प्रायश्चित के माध्यम से जल्दी ही शिवपुरवासी बन जाता है।

२) **विनय :** शायद शेर और बकरी एक ही घाट पर पानी पी सकते हैं; साँप और नेवला साथ-साथ रह सकते हैं; लेकिन विनय और अहंकार एक साथ नहीं रह सकते। दोनों की जन्मजात दुश्मनी है। जब तक मनुष्य में विनय का प्रवेश नहीं हो जाता, अहंकार रूपी केंसर उसके भीतर फैलता है, और अंदर ही अंदर खोखला कर देता है। लेकिन जैसे ही उसमें

विनय बीज का अंकुरण हो जाता है वह संभल जाता है और अपनेआप को बचा लेता है। अहंकार रूपी बादल से दिग्भ्रमित होने वाले मानव को बचानेवाला गुण ही विनय कहलाता है। विनय मानव को नम्र और सरल बना देता है। वह मानव का सच्चा मित्र है जो सुख-दुःख में सदा उसके साथ रहता है। वह मानव में उत्तरोत्तर सरलता को विकसित कर उसे मोक्ष के समीप खड़ा कर देता है।

३) **वैयावच्च :** आदर भाव पूर्वक की गयी सेवा को वैयावच्च के नाम से जाना जाता है। निष्कामवृत्ति से की गयी सेवा, बिना स्वार्थ से की गयी सेवा और बिना शंका को स्थान दिए की गयी सेवा वैयावच्च की श्रेणी में आती है। सेवा को सेवा ही रहने देना चाहिए, उस पर स्वार्थ का काला साया नहीं पड़ने देना चाहिए। साधु मुनिराज, उपाध्याय मुनिराज और आचार्य महाराजादि की सुश्रुषा करने से घने पुण्यकर्मों का संचय होता है और यही पुण्यकर्मों का संचय हमें मोक्ष की ओर ढ़केलता है। लेकिन उसमें अभिमान लेश मात्र भी नहीं होना चाहिए, उस सुश्रुषा में पूर्ण रूप से समर्पण का भाव होना चाहिए।

४) **स्वाध्याय :** स्व याने स्वयं और अध्याय अर्थात् पठन, इस प्रकार स्वाध्याय का अर्थ हुआ—स्वयं का पठन। साधक जब बाहरी दुनिया को भूलाकर स्वयं और सिर्फ स्वयं को पहचानने की कोशिश करता है, स्व तक पहुँचने की कोशिश करता है, स्वयं को पाने की कोशिश करता है, और जब अंत में स्वयं को पा लेता है तो वह स्वाध्याय कहा जाता है। स्वाध्याय को शुद्ध रूप से करना किसी निर्ग्रन्थ या निर्ग्रन्थतूल्य के अलावा किसी के बस की बात नहीं है। स्वाध्याय का प्रमुख ध्येय इन्द्रियों की आसक्ति से छुटकारा पाना है। साधक के हृदय में हिंसा, असत्य, दुराचार और परिग्रह को कोई स्थान नहीं चाहिए। स्वाध्याय में साधक को इतना स्वाद आता है कि दुनिया के सारे स्वाद उसके सामने उसे फिके लगने लगते हैं। वह उस रस में डुबकियाँ लगा-लगा कर आत्मा का कर्म मेल साफ करके आत्मा को पवित्र कर देता है। जब उसकी आत्मा पुरी तरह से कर्ममुक्त हो जाती है तो साधक मोक्ष का अधिकारी बन जाता है। इस प्रकार श्रावक स्वाध्याय के माध्यम से मोक्ष तक पहुँचने का रास्ता आसानी से पार कर लेता है।

५) **ध्यान :** मन को आत्मा पर केन्द्रित करना या आत्मा पर चित्त को एकाग्र करना ही ध्यान है। इससे साधक को शक्ति मिलती है। साधक आत्मा के स्वभावों जैसे अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, वीतरागता, अनन्त वीर्य, अनन्त सुख, अक्षय स्थिति, अगुरु लघुता और अरुपिता को पहचान जाता है तो उसमें समता भाव आ जाता है। उसके लिए बड़े-छोटे, काले-गोरे और उँच-नीच का भेद मिट जाता है। वह सबको समान दृष्टि से देखता है। ध्यान में उसे एक प्रकार का आत्मबल प्राप्त होता है। उस आत्मबल के सहारे वह वीतरागता के करीब पहुँच जाता है और क्रमशः स्वयं भी वीतराग बन जाता है।

६; **व्युत्सर्ग :** इस तप का प्रमुख उद्देश्य है, मोह-माया से दूर रहकर त्याग के रास्ते पर चलना। त्याग की आग में अपने आप को इतना तपाना कि आत्मा में निखार आ जाय और क्रोध, मान, माया, लोभ जलकर खाक हो जाय। इन कषायों के समाप्त होते ही आत्मा परमात्मा बन जाती है।

इन सब अभ्यंतर तपों के सहारे साधक आत्मशोधन का कार्य शुरू करता है। उसका कार्मण शरीर शनैः शनैः शिथिलित होता जाता है, लेकिन आत्मा के स्वभावों का साफ-साफ ज्ञान हो जाता है और अपने सभी दोष चल-चित्र की भाँति नजर आने लगते है, अहंकार का सर्वनाश हो जाता है और चित्त स्थिर हो जाता है। ग्रन्थों का अवलोकन करते-करते वह आत्मा की तरफ बढ़ता जाता है। उसका आत्मबल बहुत सक्षम हो जाता है और इसी आत्मबल के आधार पर वह निरंतर मोक्ष की तरफ कदम बढ़ाते जाता है।

छपते-छपते.....

कोंकण शत्रुंजय थाना तीर्थ में ट्रस्ट मंडल के चुनाव सम्पन्न

थाने (महाराष्ट्र)- कोंकण शत्रुंजय श्री थाना तीर्थ में श्री ऋषभदेव स्वामी जैन धर्म एवं ज्ञाति ट्रस्ट के नवचुनाव श्री राजस्थान जैन संघ द्वारा सानंद सम्पन्न हुए। चुनाव में मेनेजींग ट्रस्टी- श्री बाबुलालजी भीकमचंदजी जैन (खिवान्दी); उपमेनेजींग ट्रस्टी- श्री उत्तमचंदजी सोलंकी (वनजार); सेक्रेटरी- श्री.जे.के. संघवी (आहोर); उपसेक्रेटरी- श्री फूलचंदजी मुलतानमलजी (खुडाला) एवं ट्रस्टी श्री जुगराजजी केसरीमलजी राठोड (सादडी); श्री बाबुलालजी दलीचंदजी जैन (सादडी); श्री जुगराजजी जावंतराजजी पुनमिया (रानी स्टे.) श्री उत्तमचंदजी केसरीमलजी (खिंवाडा); श्री चम्पालालजी पुखराजजी जीवावत (आहोर); श्री जयंतिलालजी रुपचंदजी रांका (बाली) एवं श्री सुरेशजी. देवीचंदजी जैन (खिंवाडा) चुने गये। उक्त जानकारी श्री राजस्थान जैन संघ-थाना के अध्यक्ष श्री चंदनमलजी पूनमचंदजी बलदोटानेदी।

शाश्वत धर्म को सप्रेम भेंट~

300/- महिला आराधक मंडल- बागरा की ओर से साध्वीजी श्री कुसुमश्रीजी, कुमुदश्रीजी आदि ठाणा की प्रेरणा से चातुर्मास निमित्ते

॥ शासन नायक श्री महावीर स्वामि ने नमः ॥

दीपावली पर्व दया के दिल से - ज्ञान के प्रकाश से मनाये !

दया के सागर श्री महावीर प्रभु के मोक्षगमन से भाव (ज्ञान) दीपक के विरह से पावापुरी में अठ्ठारह गण राजाओं ने द्रव्य दीपक प्रगटाये, तब से घर - घर में दीपमालाओं की श्रेणी प्रकट हुयी व दीपावली पर्व मनायां जाने लगा। प्रत्येक जीव स्वयं सुख - दुःख का अनुभव करता है। मुझे कोई दुःख न दे, उसी प्रकार में भी किसी को दुःख न दूं - ऐसा दिव्य ज्ञान प्रकाश देने वाले श्रमण भगवान महावीर का मोक्षकल्याणक आराधना पूर्वक मनाये, विराधना द्वारा नहीं।

*** पटाखे से होने वाले विविध नुकसान –**

(१) पटाखे के जहरी धुऐं से फेफड़ो पर खराब असर होता है। (२) पृथ्वी - पानी - अग्नि - वायु - वनस्पति एवं उडती मक्खी, मच्छर आदि जीव जंतुओं का नाश होता है। (३) भयंकर आवाज से पक्षियों में घबराहट होती है। (४) कमजोर हृदय वालों को भय एवं दौरा पड़ने की संभावना होती है। (५) धड़ाके से मकान आदि की नींव कमजोर होती है। (६) पैसों का दुरुपयोग होता है। (७) दया, परोपकार के संस्कारों का नाश होता है। (८) हाथ, पांव जलने या मृत्यु आदि की दुर्घटना भी होने की संभावना रहती है।

*** कर्म को किसी की शर्म नहीं होती**

सावधान ! पटाखे छोडने से आठों प्रकार के कर्म का बंधन होता है –

(१) **कागज** - अक्षर जलने से - **ज्ञानावरणीय** (२) जीवों के अंगोपांग नाश से - **दर्शनावरणीय** (३) जीवों को दुःख पीड़ा पहुंचाने से - **अशातावेदनीय** (४) पटाखे की रोशनी एवं आवाज के आनंद से - **मोहनीय** (५) पटाखे छोडकर अभिमान करने से -**नीचगोत्र** (६) जीवों के शरीर को नाश करने से - **अशुभ नाम कर्म** (७) जीवों की शांति में बाधा पहुंचाने से - **अंतराय कर्म** (८) दया के नाश जैसे कठोर परिणामों से एवं जीव हिंसा से नरक गति या **तिर्यच** की आयु का बंध होता है। बांधे हुए अशुभ कर्मों के उदय से बहरापन, अंधापन, मूर्ख अथवा रोगी होना पडता है।

दीर्घकाल दुर्गति देने वाले पटाखे नहीं छोड़े ।

इसमें जीवों की हिंसा है। धन का विनाश है।

भेंट मिलेगी

चैत्यवंदन विधि एवं पंडित वीरविजयजी कृत 'स्नात्रपूजा' की पुस्तक हिन्दी में ५०पैसे पोस्टेज हेतु डाक-टिकिट भेजकर निम्नांकित पते से मंगवा सकते हैं–

संघवी कुन्दनमल भुताजी एन्ड कं.,जामलीनाका-थाने-400601

धारावाहिक -

।। 卐 ।। आचाराङ्ग की सूक्तियाँ (३) ।। 卐 ।।

संकलन-श्री पुखराज भण्डारी

(३७) 'कामा दुरतिकम्मा। जीवियं दुप्पडिबूहगं।।१-२-५-९०।।'

● ये काम दुर्लंघ्य है। जीवन बढ़ाया नहीं जा सकता।

(३८) 'आयतचक्खू लोगविपस्सी लोगस्स अहोभागं जाणति, उड्ढंभागं जाणति, तिरियंभागं जाणति, गढ़िए अणुपरियट्टमाणे।।१-२-५-९१।।'

● वह **आयतचक्षु** (दीर्घदर्शी) लोकदर्शी होता है। वह लोक के अधोभाग, ऊर्ध्वभाग व तिरछे भाग को जानता है।

(३९) 'संधिंविदित्ता इह मच्चिएहिं, एस वीरे पसंसिते जे बद्धे पडिमोयए।। १-२-५-९१।।

● साधक यहाँ (संसार में) मनुष्यों के मरणधर्मा **शरीर की संधि** को जानकर विरक्त हो। वह वीर प्रशंसा के योग्य है, जो **काम**भोग में बद्ध को मुक्त करता है

नोट : (१) काम के दो भेद आचार्य शीलांक ने बताये हैं:

(i) **इच्छाकाम :** - आशा, तृष्णा, रतिरूप इच्छा।

(ii) **मदनकाम** - वासना या विकाररूप कामेच्छा।

(२) **शरीर-संधि** - मनुष्य जन्म, ज्ञान प्राप्ति, आत्मविकास, व मोक्ष प्राप्ति के लिए स्वर्ण-अवसर रूप संधि है।

(४०) 'जहा अंतो तहा बाहिं, जहा बाहिं तहा अंतो। अंतो अंतो पूतिदेहंतराणि पासति पुढो वि सवंताइं। पंडिते पड़िलेहाए।। १-२-५-९२।।'

● यह देह/शरीर जैसा भीतर है, वैसा बाहर है; जैसा बाहर है; वैसा भीतर है। इस शरीर के भीतर भीतर अशुद्धि भरी हुई है - साधक इसे देखे। देह से झरते हुए अनेक अशुचिस्रोतों को देखे। अर्थात् कामभोग में वारंवार लिप्त न हो।

(४१) 'अमरायइ महासड्ढी। अट्टमेतं तु पेहाए। अपरिण्णए कंदति।। १-२-५-९३।।'

● जो मैं यह कहता हूँ कि वह कामी पुरुष माया तथा लोभ का आचरण कर अपना वैर बढ़ाता है, वह अपने शरीर की पुष्टि के लिए ऐसा करता है। वह कामभोग में महान् श्रद्धा (आसक्ति) रखता हुआ अपने को अमर समझता है। तू देख! वह आर्त, पीड़ित व दुःखी है। परिग्रह का त्याग नहीं करनेवाला क्रन्दन करता है।

(४२) 'अलं बालस्स संगेणं, जेवा से कारेति बाले। ण एवं अणगारस्स जायति।। १-२-५-९४।।

● इस प्रकार हिंसाप्रधान (काम) चिकित्सा करनेवाले अज्ञानी की संगति से क्या लाभ? जो ऐसी चिकित्सा करवाता है, वह भी बाल (अज्ञानी) है। अणगार ऐसी चिकित्सा नहीं

करवाता।

(४३) 'पडिलेहाए णो णिकरणाए। एस परिण्णा पवुच्चति कम्मोव संती।। १-३-६-९७।।

● यह जानकर (परिग्रह की परिणति-दुःख को) परिग्रह का संकल्प त्याग दे। यही परिज्ञा-विवेक कहा जाता है। इसी से कर्मों की शांति (क्षय) होती है।

(४४) 'जजे ममाइयमतिं जहाति से जहाति ममाइतं।
से हू दिट्ठपहे मुणी जस्स णत्थि ममाइतं।।१-२-६-९७।।'

● जो ममत्व-बुद्धि का त्याग करता है, वह ममत्व/परिग्रह का त्याग करता है। वही **दृष्टिपथ** (मोक्षमार्ग को देखनेवाला) मुनि है। जिसने ममत्व का परित्याग कर दिया है।

(४५) 'णारति सहती वीरे, वीरे णो सहती रति।
जम्हा अविमणे तम्हा वीरे ण रज्जति।। १-२-६-९८।।'

● वीर साधक **अरति** (संयम के प्रति अरुचि) को सहन नहीं करता, और **रति** (विषयों की अभिरूचि) को भी सहन नहीं करता। इसलिए वह दोनों में ही **अविमनस्क** (स्थिर-शांतमना) रहकर रति-अरति में आसक्त नहीं होता.

(४६) **''मुणि मोणं समादाय धुणे कम्मसरीरगं।। १-२-६-९९।। तथा।। १-५-३-१६१।।''**

● मुनि मौन (संयम और ज्ञान) को ग्रहण करके कर्मशरीर को धुन डालता है। आत्मा से कर्मों को झाड़ देता (दूर कर देता) है।

(४७) **'एस ओघंतरे मुणी तिण्णे मुत्ते विरते वियाहिते-त्ति बेमि।। १-२-६-९९।।'**

● वह (समदर्शी) मुनि जन्म-मरणरूप संसार-प्रवाह को तैर कर पार कर चुका है। वह वास्तव में मुक्त, विरत कहा जाता है-ऐसा मैं कहता हूँ।

(४८) **'दुव्वसुमुणी अणाणाए, तुच्छए गिलाति वत्तए।। १-२-६-१००।।'**

● जो वीर पुरुष वीतराग की आज्ञा का पालन नहीं करता, वह संयमधन (ज्ञानादि रत्नत्रय) से रहित **'दुर्वसु'** है। वह धर्म के निरुपण में ग्लानि (लज्जा या भय) का अनुभव करता है, क्योंकि वह चारित्र की दृष्टि से तुच्छ/हीन है।

(४९) **'जे अणण्णदंसी से अणण्णारामे, जे अणण्णारामे से अणण्णंदंसी।। १-२-६-१०१।।'**

● जो **अनन्य (आत्मा)** को देखता है, वह अनन्य में रमण करता है। जो **अनन्य (आत्मा)** में रमण करता है, वह अनन्य को देखता है।

(५०) **'जहा पुण्णस्स कत्थति तहा तुच्छस्स कत्थति।**
जहा तुच्छस्स कत्थति तहा पुण्णस्स कत्थति।। १-२-६-१०२।।'

● आत्मदर्शी साधक पुण्यवान व तुच्छ/दरिद्र को समानरूप से उपदेश करता है।

(५१) **'एस वीरे पसंसिए जे बद्धे पडिमोयए।। १-२-६-१०३।।'**

● वह वीर प्रशंसा के योग्य है, जो बद्ध मनुष्यों को मुक्त करता है।

(५२) **'से मेधावी जे अणुग्घातणस्स खेतण्णे जे य बन्ध मोक्ख मण्णेसी।। १-२-६-१०४।।'**

● वह मेधावी है, जो **अनुद्घात** (अहिंसा) का समग्र स्वरूप जानता है। तथा जो कर्मों के बंधन से मुक्त होने की अन्वेषणा करता है

(५३) **'कुसले पुण णो बद्धे णो मुक्के। से जं च आरंभे, जं च णारंभे। छणं छणं**

परिण्णाय लोगसण्णं च सव्वसो ।। १-२-६-१०४ ।।'

● कुशल पुरुष न बंधे हुए होते हैं न मुक्त होते हैं। उन कुशल साधकों ने जिसका आचरण किया है, और जिसका आचरण नहीं किया है, उसको जानकर अनाचरणीय का आचरण न करे। हिंसा व हिंसा के कारणों को जानकर उसका त्याग करे। लोकसंज्ञा को भी सर्वप्रकार से जाने, और छोड़ दे।

(५४) **'उद्देसो पासगस्स णत्थि ।। १-२-६-१०५ ।।'**

● **दृष्टा** (सत्य का दर्शन करने वाले) के लिए कोई उद्देश (विधि निषेध) नहीं है।

(५५) **'सुत्ता अमुणी मुणिणो सया जागरंति ।। १-३-१-१०६ ।।'**

● अमुनि (अज्ञानी) सदा सोये हुए हैं, मुनि (ज्ञानी) सदैव जागते (जागृत) रहते हैं।

□ तुलना— **भगवद्गीता - २/६९ :—**

'या निशा सर्वभूतानां, तस्यां जागर्ति संयमी।
यसयां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ।।'

(५६) 'लोगंसि जाण अहियाय दुक्खं ।। १-३-१-१०६ ।।'

● इस बात को जान लो कि लोक में अज्ञान दुःख (अहित) के लिए होता है।

(५७) **'जागर वे रोवरते वीरे ! एवं दुक्खा पमोक्खसि ।। १-३-१-१०७ ।।'**

● जागृत और वैर से उपरत वीर ! तू इस प्रकार (ज्ञान, अनासक्ति, सहिष्णुता, जागरुकता, और समता-प्रयोग द्वारा) दुःखों (दुःखों के कारण कर्मों) से मुक्ति पा जायगा।

(५८) **'जरामच्चुव सोवणीते णरे सततं मूढे धम्मं णाभिजाणति। मंता एथं मतिमं पास ।। १-३-१-१०८ ।।'**

● बुढ़ापे और मृत्यु के वश में पड़ा हुआ मनुष्य (शरीरादि के मोह से) मूढ़ बना रहता है। वह धर्म को नहीं जान पाता। हे मतिमान् तू मननपूर्वक इन (भावसुप्त आतुरों-दुःखियों) को देख।

(५९) **'मायी पमायी पुणरेति गब्भं। उवेहमाणो सद्दरूवेसु अंजू माराभिसंकी मरणा पमुच्चति ।। १-३-१-१०८ ।।'**

● माया और प्रमाद के वश हुआ मनुष्य बारबार गर्भ में आता है। शब्द और रूप के प्रति जो रागद्वेष नहीं करता, वह ऋजु होता है। वह मार (मृत्यु या काम) के प्रति सदा आशंकित/सतर्क रहता है, और मृत्यु से मुक्त हो जाता है।

(६०) **अकम्मस्स वव हारो ण विजति। कम्मुणा उवाधि जायति ।। १-३-१-११० ।।'**

● कर्ममुक्त आत्मा के लिए कोई व्यवहार नहीं होता। कर्म से (ही) उपाधि होती है। **महात्मा आनंदघन** कहते हैं—

दोष रहित ने रे लीला नवि घटे, लीला दोष-विलास।' *[क्रमशः]*

☆ *सभी के विचारों को कभी भी एक नहीं किया जा सकता, पर उनके दृष्टिकोण को समझ लेने पर समन्वय स्थापित किया जा सकता है।*
— स्व.श्री अगरचंद नाहटा

☆ *नम्रता का असर दूर तक जाता है और उसमें कुछ भी खर्च नहीं होता।*
— स्माइल्स

जिज्ञासा

श्री भगवतीप्रसाद द्विवेदी

बंटी अपने कमरे में एकाग्रचित होकर अंकगणित के प्रश्न हल कर रहा था। टीचर ने होमटास्क के लिए पन्द्रह सवाल दे रखे थे।

बंटी अभी चौथा सवाल हल करने ही लगा था कि पापा की आवाज सुनाई पड़ी, बंटी बेटे, जरा इधर तो आना।

बंटी मन-ही-मन जल-भुन गया। जब भी वह पढ़ रहा होता है, पापा अक्सर उसे बुला लेते है और कभी सिगरेट लाने के लिए बाहर भेज देते है, तो कभी पान लाने के लिए। पापा तो अपने मित्रों के साथ बगल वाले कमरे में चाय पीते हुए ठहाके लगा रहे होते है, पर उन्हे क्या पता कि उसे पढ़ाई में कितना खलल पड़ता है कभी शोर-शराबा झेलो, तो कभी पान- सिगरेट लाने के लिए दौड़ो। आखिर पापा समझते क्यों नहीं कि मुझे कितनी बाधा पहुँचती है पढ़ाई में और यह किसी एक दिन की बात नहीं है, बल्कि प्राय: रोज की ही दिनचर्या है

जब पापा ने दोबारा आवाज लगाई तो बंटी सवाल को जहां-का-तहां छोड़ उठ खड़ा हुआ और बगल के ड्राईंग रुम में जा पहुँचा। आज भी चार दोस्त बातें करते हुए चाय की चुस्कियां ले रहे थे। बंटी ने हाथ जोड़कर सबको 'नमस्ते' किया और फिर पापा की ओर मुखातिब हुआ।

पापा ने जेब में हाथ डालकर पाठच का नोट निकाला और 'कैप्सटन फिल्टर' की एक पैकेट लाने को कहा।

नोट लेकर बंटी बाहर निकला और गली से होकर तेज कदमों से पान की गुमटी की ओर बढ़ा। मन-ही-मन वह सोच रहा था कि आखिर लोग सिगरेट पीते क्यों है? उसने टोटे पर 'वैधानिक चेतावनी' भी तो पढ़ी थी कि सिगरेट पीना स्वास्थ के लिए हानिकारक है। फिर भी जान - बूझकर पैसे और स्वास्थ की बर्बादी क्या अच्छी बात है? इन बड़ो की बातें भी बड़ी विचित्र हुआ करती है। हमें तो तमाम बुराइयों से दूर रहने की सलाह देंगे और स्वयं उन्ही बुराईयों में लिप्त दिखाई देगें। अजब विरोधाभास है यह।

बंटी मुस्कुराता हुआ पान की गुमटी के सामने जा पहुँचा और सिगरेट की पॅकेट लेकर लौटने लगा। गली में घुसते ही उसने सिगरेट के टोटे को सूंघा। वाह! कितनी अच्छी खुशबू है। तभी तो मम्मी ने जब एक दिन पापा के सिगरेट पीने पर नाराजगी जाहिर की थी तो उन्होंने कहा था, देखो डार्लिंग, सिगरेट ही तो है, जो मन-मस्तिष्क में ताजगी-ही ताजगी भर देती है।'

बंटी का दोस्त, सोनू भी तो कभी-कभार सिगरेट पीता है। उसने तो एक रोज बंटी से भी कहा था—'यार, एक कश तो लेकर देखो, मजा आ जाएगा'

'छी: ! यह भी कोई पीने की चीज है पिलाना ही है तो लस्सी पिलाओ!' बंटी ने जवाब दिया था।

मगर सोनू ने ऐसा मुँह बनाया था, जैसे उसने कोई फालतू बात कह दी हो।

आज बंटी की इच्छा हो रही थी कि कम—से कम एक बार सिगरेट पीकर देखना चाहिए। आखिर कैसा महसूस होता है, इसे पीने से? क्या सचमुच ताजगी लाती है यह?

कुछ सोचते हुए बंटी फिर गुमटी के पास लौटा और छुट्टे पैसे निकाल, एक सिगरेट और ले ली। उसे जेब में छिपाकर वह घर की ओर दौड़ा।

ड्राइंग रुम में कदम रखते ही बंटी के दिल की धडकन तेज हो गयी। पापा ने यदि पैसे की बाबत पूछा, तब? मगर जब उन्होंने बगैर गिने ही छुट्टे पैसे जेब में रख लिए, तो उसने राहत की सांस ली।

उन्होंने महज इतना पूछा, 'इतनी देर कहां लगा दी?

'दुकान में बड़ी भीड़ थी, पापा! कहता हुआ बंटी अपने कमरे की ओर बढ़ गया।

ज्यों ही वह सवाल हल करने बैठा, सबसे पहले उसका ध्यान जेब की ओर गया। सिगरेट को टटोलकर वह आश्वस्त हुआ। सवाल हल करने में उसका मन अब रमा नहीं। बार बार गलतियाँ हो जाती थी। अंतत: उसने पढ़ाई का कार्य अब सुबह पर टाल दिया और चुपचाप लेट गया। झपकी आते ही वह सपने के संसार में विचरने लगा। उसने सिगरेट पी है और बादलों की तरह हवा में तैर रहा है। हर काम तेजी के साथ करने लगा है। कैसा जादुई करिश्मा है सिगरेट का ! सचमुच मजा आ गया...

तभी मम्मी ने उसे झकझोर कर जगा दिया और भोजन करने के लिए कहा। बंटी जमुहाई लेता हुआ उठ बैठा।

खाना खाने के बाद उसने चुपके से किचन से दियासलाई लेकर जेब में रखी और टहलने के बहाने गली में निकल गया। पापा भी तो भोजन करने के बाद सिगरेट जरुर पीते है। आखिर मै भी तो जानू, क्यो लोग इसके पीछे इतने दीवाने हो जाते हैं?

एकान्त पाते ही उसने सिगरेट को मुँह में लगाकर सुलगाते हुए एक जोरदार कश लिया। मगर धुंआ अंदर जाते ही उसे जोरों की खाँसी आई और खाँसते खाँसते उसका बुरा हाल होने लगा। आँखो में पानी भर आया। छाती सहलाते हुए जब उसने कुछ राहत की सांस ली तो फिर दूसरा कश लिया। सिगरेट पीते हुए छल्ले बनाकर नाक-मुहँ से धुंआ उगलने में कितना मजा आता है।

तभी अचानक पडौस के चाचाजी को बगल से गुजरते हुए देखकर बंटी हक्का बक्का गया। डर के मारे उसका बुरा हाल था। हड़बड़ी में सिगरेट को छिपाने की असफल कोशिश में उसके हाथ की दो उंगलिया जल गयी थी, फिर उसने घबराकर जलती हुई सिगरेट ही जेब में रख ली। मगर ज्यों ही चाचाजी मुस्कुराते हुए आगे बढ़े उसके मुँह से एक हल्की-सी चीत्कार गूंजी। पैंट की जेब बुरी तरह जल गयी थी, साथ ही जांघ के पास की चमड़ी भी सिसकते हुए उसने सिगरेट को बाहर निकाल उसे पैर से रगड़ कर बुझाया।

जलन से बंटी की परेशानी काफी बढ़ गयी थी। मगर उससे मी कहीं अधिक परेशान था वह पडौस के चाचाजी को लेकर। उन्होंने पापा से जरूर सिगरेट पीने की बात कही होगी। फिर पापा की लाल-पीली आँखो का वह कैसे सामना कर सकेगा? पेंट जलने के संबंध में जब मम्मी पूछेगी, तो वह क्या जबाब देगा? अभी घर जाने पर मुँह से आती सिगरेट की गंध को वह किस प्रकार छिपा सकेगा?

बंटी ने भयाक्रांत होकर मन-ही-मन सिसकते हुए घर में प्रवेश किया। अपने कमरे में जाकर वह चादर ओढ़ चुपचाप लेट गया। थोड़ी देर के बाद मम्मी आई और उसे सोया जानकर बिस्तर ठीक-ठाक कर अपने कमरे में चली गई।

मगर बंटी को तो काफी देर तक नींद ही नहीं आई। वह आने वाली सुबह के प्रति चिन्तित था कि पता नहीं, क्या बीते! मार पड़ने के साथ ही कितनी बदनामी होगी उसकी। सबकी नजरों में गिर जाएगा वह।अब तक पढ़ाई में सदा प्रथम स्थान लाने वाला वह सीधा-साधा होनहार लड़का माना जाता था, मगर कल से सिगरेट पीने वाले बुरे लड़कों में उसकी गिनती होगी। क्या वह बर्दाश्त कर पाएगा?

अगले दिन सुबह बीती, शाम बीती, मगर किसी ने उस सम्बन्ध में कोई चर्चा नहीं की। मगर उंगली और पाँव के फफोले उसे बुरी लत की बुराई से अगाह करते है। लगता है, चाचाजी ने पापा को कुछ नहीं बताया हो। हो सकता है, चाचाजी ने भी उसके सिगरेट पीने पर गौर न किया हो।अगर उन्होंने कुछ कहा होता, तो पापा अब तक चुप थोड़े ही बैठे रहते! पापा के गुस्सैल स्वभाव से भला कौन अपरिचित है?

आज पापा के दोस्त भी नहीं आए। बंटी होमटास्क बनाने में व्यस्त हो गया।

तभी पापा ने उसके कमरे में प्रवेश किया, ''क्यों बेटे, क्या हो रहा है?''

'होमटास्क बना रहा हूँ, पापा! बंटी ने जबाब दिया।

तभी पापा कुर्सी खींच कर बैठ गए। फिर स्कूल की पढ़ाई-लिखाई के बारे में पुछताछ करने लगे।

'बंटी, ड्राइंग रुम से जरा सिगरेट की पैकेट और माचिस लाना तो! बातों के क्रम में पापा ने कहा।

बंटी ने दौड़कर उनके आदेश का पालन किया।

उन्होंने दो सिगरेट बाहर निकाली और एक स्वयं सुलगाकर पीते हुए दूसरी बंटी की ओर बढ़ा दी।

'यह क्या पापा? 'बंटी को काटो तो खून नहीं!

'बंटी, अब तो तुम कुछ बड़े हो गए हो न! बेटा जब कुछ बड़ा हो जाता है तो उसके साथ छोटे भाई के समान बर्ताव करना चाहिए।' फिर उन्होंने व्यंगपूर्वक कहा, जब तुमने सिगरेट पीनी शुरू कर ही दी है, तो फिर लुकाव-छिपाव क्यो? हम दोनो बाप बेटे साथ-साथ पिएँगे।

नही पापा, ऐसा न कहे। कल रात सिगरेट के प्रति मेरी जिज्ञासा ने मुझे गलत काम करने के लिए प्रेरित कर दिया था। मगर उंगली और जांघ के पास की जलन ने मुझे सबक दे दिया कि बुरे काम का नतीजा बुरा ही होता है, बंटी की आखों से टप-टप आँसू टपक पड़े। पापा मै आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जीवन में फिर दोबारा मै सिगरेट पीने की बात सोच भी नहीं सकता।'

इसके लिए मूलत: मै जिम्मेवार हूँ। बेटे! मैने ही तुमसे बार-बार सिगरेट मंगाकर इस नशे के प्रति तुम्हारे मन में जिज्ञासा पैदा की । मगर आज से मैं भी तुम्हारे साथ सिगरेट को कभी हाथ न लगाने की शपथ लेता हूँ। अभिभावक की बुरी लत का असर तो बच्चों पर होगा ही।' कहते हुए पापा ने सिगरेट को फर्श पर फेंक कर पैरों से मसल दिया।

'तो मुझे आपने माफ कर दिया न, पापा?' बंटी उनके पैरों की ओर झुकने जा ही रहा था कि उन्होंने उसे बाहों में भर लिया और पीठ थपथपा कर मुस्कान बिखरते हुए सिर हिलाने लगे।

(अमर उजाला से साभार)

ज्ञान कसौटी-९

– श्री महेन्द्र.जे.संघवी (थाने)

(स्वाध्यायी पाठक निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर पहले क्रमशः कागज पर लिखें, फिर इसी अंक में पृष्ठ 12 पर दिये गये उत्तरों से मिलान करें — संपादक)

(२०१) किये हुए आहार को पचाने का काम कौन करता है?

(२०२) जैन धर्म के मुख्य ग्रन्थों को क्या कहा जाता है? उनकी संख्या कितनी है?

(२०३) आगम किस भाषा में लिखे हुये हैं?

(२०४) क्या इन आगमों के सिवाय भी जैन साहित्य है?

(२०५) भगवान महावीर के संघ में साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका की संख्या कितनी थी?

(२०६) पार्श्वनाथ भगवान को किस भव में सम्यकत्व प्राप्त हुआ था?

(२०७) कर्म बंध किन कारणों से होता है?

(२०८) बादर अप् काय (पानी) के जीवों की उत्कृष्ट एवं जघन्य आयु कितनी है?

(२०९) बादर तेऊ काय (पानी) के जीवों की उत्कृष्ट एवं जघन्य आयु कितनी है?

(२१०) बादर वायु काय का उत्कृष्ट एवं जघन्यायुष्य कितना है?

(२११) वनस्पति काय जीवों के कितने भेद हैं? तथा कौन से है?

(२१२) दो इन्द्रिय वाले जीवों का उत्कृष्ट एवं जघन्यायुष्य मितना है?

(२१३) तीन इन्द्रिय वाले जीवों का उत्कृष्ट जघन्यायुष्य कितना है?

(२१५) पंचेद्रिय जीवों के कितने भेद हैं? तथा कौन से है?

(२१६) देवता कितने प्रकार के होते है? तथा कौन से हैं?

(२१७) देवताओं की उत्कृष्ट एवं जघन्य आयु कितनी है?

(२१८) कर्मभूमिज मनुष्यों की उत्कृष्ट एवं जघन्य आयु कितनी होती है?

(२१९) चौरासी लाख वर्ष को चौरासी लाख से गुणा करने पर, उस गुणनफल को कहते है?

(२२०) क्या पूर्वों की आयुष्य का मनुष्य आज भी विद्यमान हैं? है तो कहाँ?

(२२१) नरक के जीवों की उत्कृष्ट एवं जघन्य आयु कितनी है?

(२२२) देवताओं के शरीर की उत्कृष्ट व जघन्य अवगाहणा (ऊँचाई) कितनी होती है?

(२२३) नारकी के जीवों की उत्कृष्ट व जघन्य अवगाहणा कितनी होती है?

(२२४) क्या मनुष्य मरकर तेऊ काय या वाउकाय में पैदा हो सकता है?

(२२५) तिर्यंच पंचेन्द्रिय मरकर कौन से देवलोक तक ही जा सकता है?

शब्द सागर इनामी स्पर्धा (३) के उत्तर एवं परिणाम

परिणाम – प्राप्त उत्तरों में से ३६ प्रतियोगियों के उत्तर सही पाए गए। लकी ड्रॉ द्वारा प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय की घोषणा कर पुरस्कार सम्बन्धित को भेज दिया गया है।

पुरस्कृत प्रतियोगी के नाम क्रमशः इस प्रकार है –

प्रथम – सौ. अनिता किरणराजजी फूलफगर (लोनावला – महाराष्ट्र), **द्वितीय** – श्री. सुमेरमल गोलेच्छा – मदुराई (ता. ना.), **तृतीय** – श्री राजेन्द्रकुमार अमृतराजजी मांडोत – गुन्टुर (आ. प्र.)।

शेष सफल प्रतियोगी :– सुरेश शेषमलजी – मद्रास, आनंद जैन – थाने, महेन्द्र जैन – गुन्टुर, सौ चन्दा किरणकुमारजी जैन – कल्याण, विजयकुमार एफ. मोदी – नवसारी, एस. आर. डूंगरवाल – सेंधवा, प्रकाश जैन – अहमदाबाद, अलकाबहन खुबचंदजी शाह – सुरत, महेन्द्र जे. शाह – अहमदाबाद, दिलीप के. संघवी – थाने, रेखाकुमारी अमृतराजजी मांडोत – गुन्टुर, कु. चेतना मेहता – झाबुआ, जितेन्द्रकुमार राजमलजी जमीदार – इन्दौर, नेहाकुमारी पुष्पेन्द्रकुमारजी जैन – इन्दौर, सौन्दर्य श्री – इन्दौर, धर्मेन्द्र जैन – गुन्टुर, संगीता जे. संघवी – थाने, निर्मला बी. जैन – थाने, खीमराज जैन – बम्बई, प्रेमलता नरेन्द्रकुमारजी जैन – इन्दौर, सुदीप जैन – रतलाम, शैलेन्द्रकुमार जैन – इन्दौर, सेठ विजय बाबुलालजी – अहमदाबाद, मफतलाल आर. मेहता – नड़ीयाद, महेन्द्र जे. संघवी – थाने, मधुबाला बागरेचा – बालोतरा, सपनकुमार जैन – झाबुआ, प्रमिला कांतीलालजी जैन – कल्याण, प्रीतीबहन बाबुलालजी जैन – अहमदाबाद, हर्षदकुमार देवीचंदजी जैन – जोगेश्वरी (बम्बई), किशोर कुमार जैन – मदुराई, श्रीमती चन्द्र केशरसिंहजी कर्नावट – किशनगढ़ (मदनगंज), मूलचंद लालजी जैन – मोटी खाखर (कच्छ)

शब्द सागर इनामी स्पर्धा (३) का उत्तर

	ग	ज	सु		म	हु	आ		न	म	न	
रा	ज		पा	र			म्र		मे	रु		सं
त्री		पा	र्व		अ	जी	व			दे	व	ता
	अ	प		नि	र्ज	रा		सा	ध	वी		प
	ज		चै	त्य		व	र्ध	मा	न		न	
वि	र	ती		नि	रा	ला		यि		म	न्दि	र
त		र्थ		य	क्ष		कु	क	र्म		व	
रा			ता	म	स		ल			नि	र्ध	न
गी	र	ना	र			स	क	ल		त	न	
		ग	ण	ध	र		र					

आवश्यकता है!

विजयवाडा (आं. प्र.) में जैन धार्मिक अध्यापक/अध्यापिका की आवश्यकता है। इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करें।

सम्पर्कसूत्र :– श्री संभवनाथ राजेन्द्र जैन ट्रस्ट

सेक्रेटरी, जैन मन्दिर पेढ़ी, कुन्दुलबारी स्ट्रीट – विजयवाड़ा – ५२० ००१ (आं. प्र.)

शब्द सागर इनामी स्पर्धा (५)

संकलन – प्रदीप एम. जैन.

प्रस्तुत पृष्ठ काटकर दिये गये वर्गों में आवश्यक शब्द भरकर अपने नाम एवं पूर्ण पते के साथ कार्यालय में भिजवाऐं। सम्पूर्ण सही उत्तर वाले प्रत्येक प्रतियोगी को १०/– रुपये का साहित्य भिजवाया जाएगा। उत्तीर्ण प्रतियोगियों के नाम जनवरी १९९२ के अंक में स्पर्धा (५) के सही उत्तर के साथ प्रकाशित किये जाऐंगे। **– सम्पादक**

पुरस्कार सौजन्य – अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद – शाखा जोगेश्वरी (बम्बई)

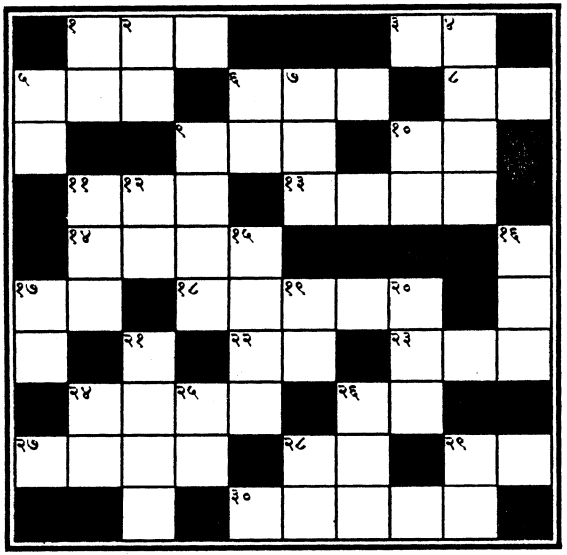

दायें से बायीं ओर

१) अमीझरा पार्श्वनाथ भगवान का तीर्थ (३)
३) राजा कुमारपाल अपने पूर्व भव में –– थे (२)
५) ––– वृक्ष के नीचे श्री वासुपूज्य भगवान को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ था (३)
६) दिन में ––– (निर्जन्तुक) भूमि पर चार हाथ आगे देखकर चलना इर्या समिति है (३)
८) श्री गौतमस्वामीजी नी –– होजो जी, 'श्री बाहुबली नो बल होजो जी, आदि बातें लक्ष्मीपूजन में जैनों द्वारा लिखी जाती है (२)
९) राजयोग का एक अंग (३)
१०) आकाश के जितने भाग में छहो द्रव्य होते हैं, वह –– है (२)
११) भगवान महावीर का एक श्रावक (३)
१३) तीर्थंकर प्राकृत में (४)
१४) चंडकौशिक के डसने पर भी प्रभु महावीर ने उस पर क्रोध करने के बजाय उसे ––– दृष्टि से देखा (४)
१७) श्री सुविधिनाथजी भगवान का छद्मस्थ काल –– महिनों का था (२)

१८) श्री अभिनन्दन स्वामी के यक्ष (५)
२२) मुछाला महावीरजी तीर्थ में भगवान महावीर की मूर्ति पर, पुजारी की अपार भक्ति के कारण मुछें उग आई थी, वह कौन सा राजा था, जिसने पुजारी से भगवान महावीर की मुछें दिखाने की जिद की थी (२)
२३) भगवान आदिनाथ का वह प्राचीन तीर्थ जिसके प्राचीन नाम थीरपुर थिरादि आदि थे (३)
२४) गुरुदेव श्री राजेन्द्रसूरिजी का सांसारिक नाम (४)
२५) जैन दर्शनानुसार -- भी एक एकीन्द्रिय जीव है (२)
२७) केसर पूजा के पहले की जाने वाली पूजा (४)
२८) इलायची कुमार को -- की तरह रस्से पर खेल दिखाते हुए केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ था (२)
२९) पर -- त्याग, मार्गानुसारी जीवन के ३५ गुणों में से एक (२)
३०) राजा दधिवाहन व राणी धारिणी की पुत्री वसुमति का दुसरा नाम, वह नाम जो धना सेठ/धना शाह ने रखा था (५)

उपर से निचे की ओर

१) भगवान आदिनाथ को -- वृक्ष के निचे केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था (२)
२) जहाँ -- पर सोने की चिड़ीया करती है बसेरा, वह भारत देश है मेरा (२)
४) ---- अर्थात वे व्यक्ति जो कर्म भूमि के आरम्भ में हुए, और जिन्होंने मानव कुलों के अवधारण की तर्कसंगत व्याख्या की (४)
५) सु -- नाथजी एक तीर्थंकर (२)
६) -- श्चित एक प्रकार का तप, जहां साधक अपनी भूलों को स्वीकारता है और स्वयं को दण्डित भी करता है (२)
७) --- नाथजी का च्यवन, जन्म, दीक्षा एवं केवलज्ञान भूमि अयोध्या है (३)
९) जिस प्रवृति के कारण हम लोगों की निंदा के पात्र बनते हैं, व ---- प्रवृति कहलाती है (४)
१०) लोक, अर्धमागधी में (२)
११) पधारे, साधू अतिथि आदि का -- पूर्वक स्वागत करना चाहिए (२)
१२) प्रमाण से द्रव्य के समस्त पर्यायों को जाना जाता है, तो -- से उसके एक पक्ष (२)
१५) भगवान श्रेयांसनाथजी के यक्ष (४)
१६) "--- व्यय, ध्रोव्य युक्तम् सत्" (३)
१७) भगवान संभवनाथ जी के प्रथम गणधर (२)
१९) कुछ तीर्थों के बारे में कहावत है "-- दियाणा, नान्दिया, जिवित स्वामी वान्दिया" प्रभु महावीर का यह तीर्थ राजस्थान के पाली जिले में हैं (२)
२०) प्रत्येक व्यक्ति को अपनी --- और करनी एक-सी रखना चाहिए (३)
२१) पन्द्रहवें तीर्थंकर का जन्मस्थान (४)
२४) नवकार में भी श्रृंगार, हास्य, वीर आदि नौ -- है (२)
२५) अधिकांश तीर्थंकरों के पिता -- थे (२)
२६) जहां पंचासरा पार्श्वनाथजी भगवान की मूर्ति है (३)
२८) दसवें तीर्थंकर के पहले गणधर (२)
२९) भगवान पार्श्वनाथजी का रंग (२)

जावरा में आचार्यश्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी के चातुर्मास से अभूतपूर्व – धर्म जागृति

तीर्थप्रभावक, साहित्य मनीषी, गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी, मुनिश्री नित्यानंदविजयजी, मुनिश्री विश्वरत्नविजयजी, मुनिश्री पद्मरत्नविजयजी, मुनिश्री सिद्धरत्नविजयजी, मुनिश्री अपूर्वरत्नविजयजी, मुनिश्री विद्धतरत्न विजयजी, मुनिश्री नयरत्नविजयजी आदि एवं साध्वीजी श्री आत्मदर्शनाश्रीजी, सम्यग्दर्शनाश्रीजी चारूदर्शनाश्रीजी के भव्यातिभव्य चातुर्मास प्रवेश के बाद जावरा नगर धर्मनगरी बन गयी है। नित्य नयी आराधनाओं का अपूर्व ठाट लगा हुआ है। प्रतिदिन प्रातः भक्तामर स्तोत्र का सामूहिक पठन एवं मधुर प्रवचनों का भाई–बहन खूब लाभ ले रहे हैं। व्याख्यान में उत्तराध्ययन सूत्र व भावनाधिकार में धन्यकुमार चरित्र चल रहा है। आचार्य श्री की निश्रा में १५–१६ अगस्त को अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद का अधिवेशन सम्पन्न हुआ, जिसका विस्तृत विवरण अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

नवकार मंत्र की नव दिवसीय आराधना में ८२१ आराधकों ने भाग लिया समापन अवसर पर २६ अगस्त को शोभा यात्रा आयोजित की गयी। जिसमें सबसे आगे श्वेत वस्त्रों में सज्ज पांच किशोर पंचरंगी ध्वज लेकर चल रहे थे। नौ घोड़े, बेन्ड, नवकार पट्टों से सजी जीपें, गुरूदेव के फोटो के साथ गाडियाँ, ढोल–तासे, नवकार धुन गाते हुए आराधक, पूज्य आचार्य श्री एवं मुनिमंडल, श्वेत वस्त्रों में आराधक, जावरानगर व बाहर से पधारे श्रद्धालुजन, केसरिया रंग के वस्त्रों में सज्ज बालिका परिषद की बालिकाऐं डांडीया नृत्य करती हुई, साध्वीजी महाराज, आराधक बहनें एवं धर्मप्रेमी महिलायें, नवकारपट्ट व बालकों को लेकर दो ट्रेक्टर ट्रॉलियों के साथ चल समारोह पीपली बाजार से जवाहर पेठ, चुड़ीबाजार, बजाजखाना, कोठीबाजार, पुरानी धानमण्डी, सब्जी मार्केट, कोर्ट गली, लक्ष्मीबाई मार्ग रतलामी गेट, स्टेशन रोड, गुरुनानक मोहल्ला, पॉवर हॉउस, गौशाला रोड़, आझाद चौक, सोमवारिया, शुक्रवारिया होकर पौषधशाला पहुंचा। रेवतड़ा शाखा परिषद के अध्यक्ष श्री भंवरलालजी हिराणी द्वारा श्रीमद् जयन्तसेनसूरि चातुर्मास समिति एवं स्थानीय परिषदों, मंडलों को शिल्ड वाणिज्य मंत्री – श्री बाबुलालजी जैन के हस्ते दी गयी।

मुनिराज श्री पद्मरत्नविजयजी ५५ उपवास (आचार्यश्री के जीवन के ५५ वर्ष के उपलक्ष में); मुनिराज श्री नयरत्नविजयजी ३० उपवास; मुनिराज श्री अपूर्वरत्नविजयजी १६ उपवास, मुनिराज श्री विश्वरत्नविजयजी ८ उपवास साध्वीजी श्री चारूदर्शनाश्रीजी २१ उपवास, सामूहिक अट्ठाई १५०; छत्तीस उपवास (४); इकतीस उपवास (१५); इक्कीस उपवास (२५); सोलह उपवास (५०); पन्द्रह उपवास (२५); अग्यारह उपवास (३०); दस उपवास (१२५); नौ उपवास (५०); आठ उपवास (४००); सात उपवास (१०५) आदि अनेकानेक आराधकों ने तपश्चर्या की। तपाराधना अनुमोदनार्थ भव्य शोभायात्रा आयोजित की गयी थी, जिसमें नगर व बाहर से पधारे दस हजार श्रद्धालुओं ने भाग लिया। तपअनुमोदनार्थ आयोजित विशाल धर्मसभा में मुख्यातिथी श्री दीलिपसिंह भूरिया (सांसद), श्री मोतीलाल दवे (विधायक), पूर्व मध्यप्रदेश शासन के गृहमंत्री श्री भारतसिंहजी युवा उद्योगपति श्री चेतनकुमार काश्यप, श्री पुखराज बाफना (भीनमाल) आदि का स्वागत किया गया। मुनिराज श्री नयरत्नविजयजी के पारणे का लाभ भीनमाल निवासी श्री सुमेरमलजी नाहर ने लिया शंखेश्वर पार्श्वनाथ अट्ठम में २२५ आराधकों ने भाग लिया।

पुस्तकों का विमोचन

आचार्य श्री द्वारा लिखीत / रचित 'भक्तिरंग' का विमोचन श्री हिम्मतकुमार धाड़ीवाल, 'गुरुवन्दना' का विमोचन श्री घेवरचंद लालचंदजी जोगाणी (भीनमाल); ने किया।

आचार्य श्री की प्रेरणा से भीनमाल निवासी श्री पुखराजजी बाफना ने जनहितार्थ अपनी ओर से जावरा महिला प्रसूति अस्पताल में एक वॉर्ड बनाने की घोषणा की व रतलामी गेट पर बन रहे मंदिर में सहयोग राशि भेंट देने की घोषणा की।

उल्लेखनीय है कि आचार्य प्रवर के मुनिमंडलसह नगर में चातुर्मासार्थ पधारने से एक अपूर्व धर्म जागृति छा गयी है। मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, तामिलनाडु से अनेकानेक श्री संघो व गुरुभक्तों का दर्शनार्थ शुभागमन हो रहा है।

शाश्वत धर्म को भेंट

१०१/– श्री चम्पालालजी तगराजजी हिराणी की ओर से चि. राजु के विवाहोपलक्ष पर सप्रेम भेंट।

५१/– आचार्य श्री सुशीलसूरीजी म. सा. की प्रेरणा से चातुर्मासार्थ निमित्त श्री जैन संघ खिमेल की ओर से भेंट।

५१/– श्री गेन्दालालजी राजमलजी डांगी सरसी वाला की ओर से सौ. का. सुशीला का विवाह जावरा निवासी अजयकुमारजी हिंगड़ के साथ दि.९–६–१९९१ को सम्पन्न हुआ, जिसके निमित्त सप्रेम भेंट।

५१/– आचार्य श्री अशोकरत्नसूरिजी म. सा. की प्रेरणा से श्री जैन श्वे. संघ कर्नुल (आ. प्र.) द्वारा आचार्य श्री लब्धिसूरिजी म. सा. की पूण्यतिथी निमित्ते सप्रेम भेंट।

१०१/– आहोर निवासी शा. शेषमलजी शांतिलालजी विजयवाड़ा की ओर से नूतन गृह प्रवेश निमित्त सप्रेम भेंट।

५१/– मे. श्री तलावत ट्रेडिंग कम्पनी मद्रास की ओर से सप्रेम भेंट।

५०१/– पू. साध्वीजी श्री दर्शितकलाश्रीजी श्री दर्शनकलाश्रीजी एवं जीवनकलाश्रीजी म. सा. के चातुर्मास अवसर पर सौधर्म वृहत्तपागच्छ जैन श्वेताम्बर संघ मंदसौर द्वारा सप्रेम भेंट।

२०१/– दुंदाड़ा निवासी श्री भूरमलजी पालरेचा की प्रथम पुण्यस्मृति में पू. सा. श्री महाप्रभा श्रीजी की प्रेरणा से मे. मोती ज्वेलर्स, धारावी – बम्बई की ओर से सप्रेम भेंट।

१००/– इन्दौर निवासी श्री महेशकुमार जयंतीलालजी कुक्षीवाला की ओर से मुकेशकुमार के अट्ठाई एवं सौ. का. साधना के १६ उपवास की तपश्चर्या निमित्त साध्वी श्री स्वयंप्रभाश्री जी की प्रेरणा से सप्रेम भेंट।

५००/– श्री त्रिस्तुतिक श्वेताम्बरं जैन संघ जालोर द्वारा पू. साध्वीजी महाप्रभाजीश्रीजी डा. प्रियदर्शनाश्रीजी डा. सुदर्शनाश्रीजी म. सा. की प्रेरणा से सप्रेम भेंट

आचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी म. सा. की प्रेरणा से विभिन्न तपस्याओं निमित्त प्राप्त भेंट –

१०१/– प्रकाशचंदजी बाबुलालजी कांठेड़ – जावरा (अट्ठाई)

१०१/– श्रीमती आशादेवी प्रकाशचंदजी कांठेड़ – जावरा (अट्ठाई)

१०१/– श्रीमती पुष्पादेवी नगीनकुमारजी सकलेचा जावरा (अट्ठाई)

१०१/– श्रीमती अलकादेवी ललितकुमारजी मेहता जावरा (अट्ठाई)

२०१/– श्रीमती कमलादेवी सुराणा ३६ उपवास एवं रीताकुमारी के अट्ठाई निमित्त श्रीभंवरलालजी सागरमलजी सुराणा जावरा द्वारा

२००/– सौ. का. राजकुमारी दसेड़ा के अट्ठाई निमित्त इन्दरमलजी रतनलालजी दसेड़ा जावरा द्वारा

२००/– श्री जीतमलजी रतनलालजी धाड़ीवाल परिवार जावरा द्वारा परिवार में विविध तपश्चर्या निमित

२००/– श्री भेरुलालजी शांतिलालजी जावरा द्वारा श्रीमती विमलाबाई दसेड़ा के २१ उपवास एवं शांतिलालजी दसेड़ा के अट्ठाई निमित्त

१०१/– श्रीमती सुगनबाई के अट्ठाई निमित्त श्री सागरमलजी मोतीलालजी दसेड़ा जावरा द्वारा

परिषद के प्रांगण से

जावरा में परिषद का १५ वॉ अधिवेशन सम्पन्न
श्री मोरखिया अध्यक्ष एवं श्री लोढा महामंत्री चुने गये

जावरा :– १५ व १६ अगस्त को जैनाचार्य श्रीमद्विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी आदि ठाणा की निश्रा में अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद का १५ वॉ अधिवेशन शानदार रूप से सम्पन्न हुआ। अधिवेशन के विभिन्न कार्यक्रमों में राजस्थान विधानसभा के पूर्वाध्यक्ष श्री गिरिजाप्रसाद तिवारी, विधायक श्री पारस कोठारी, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री सुन्दरलालजी पटवा त्रिस्तुतिक संघ के अध्यक्ष–श्री गगलदास संघवी, मंत्री–श्री भवरलालजी छाजेड़ आदि गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिती थी।

परिषद के नवचुनाव में अध्यक्ष–श्री सेवंतीभाई मोरखिया, महामंत्री–श्री सुरेन्द्रलोढा, उपाध्यक्ष – श्री चेतनकुमार काश्यप श्री मीठालाल हिराणी, कोषाध्यक्ष – श्री प्रकाश कांठेड आदि चुने गये। धार्मिक पाठशालाओं के संचालन एवं पाठ्यक्रम को गति देने के लिए 'यतीन्द्र – जयन्त ज्ञानपीठ, का गठन किया गया। मध्यप्रदेश शासनद्वारा गो–वंश हत्या बंदी कानून पारित करने की अनुमोदना स्वरूप मुख्यमंत्री श्री सुन्दरलालजी पटवा का शाल श्रीफल द्वारा स्वागत कर अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया।

अध्यक्ष का प्रतिवेदन

पर्युषण के पावन अवसर पर विगत वर्ष में मेरे द्वारा आपके दिल में जानकर या अनजाने कोई ठेस पहुंची हो तो 'मिच्छामि–दुक्कडम्' मांगता हूँ।

जावरा में सम्पन्न परिषद के १५ वें अधिवेशन में आप सभी ने मिलकर मुझे जबाबदारी सौंपी है, उसे गुरुकृपा एवं आप सभी के आत्मीय सहयोग की शक्ति से पूरी हो, यही भावना रखता हूँ।

परिषद अधिवेशन में आप सभी की उपस्थिती परिषद के प्रति विश्वास, कार्य के प्रति उत्साह व उमंग अंकित कर रही थी।

आइये, गुरुदेव श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी द्वारा संस्थापित अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के चातुर्मुखी उद्देश्यों की पूर्ति में हम सभी तन–मन–धन से जुट जाएं।

– सेवन्तीलाल एम. मोरखिया

महामंत्री का प्रतिवेदन

अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के केन्द्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढ़ा सूचित करते हैं कि परिषद के जावरा में, परमपूज्य जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी महाराज के सानिध्य में, सम्पन्न पन्द्रहवें अधिवेशन के निर्णयों का कार्यान्वयन प्रारंभ हो गया है। संगठनात्मक दृष्टि से महिला परिषदों का स्थान-स्थान पर गठन करने का अभियान शुरू हो गया है। धार्मिक शिक्षा प्रचार को प्रोत्साहित करने के लिए श्रीमद् यतीन्द्र-जयंत ज्ञान पीठ की स्थापना हो चुकी है तथा पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है। परिषद शाखाऐं पाठशालाओं को सुचारू रूप देने अथवा जहां नहीं है वहां पाठशालाऐं स्थापित करने के लिए कार्यरत हैं। बाग (जि. धार) में पाठशाला प्रारम्भ हो चुकी है। आर्थिक योजना के अन्तर्गत यहां परिषद शाखा के माध्यम से अल्पबचत योजना का शुभारम्भ भी हो गया है। कुक्षी नगर में अल्पबचत योजना अगले माह से प्रारम्भ किए जाने की आशा है। झाबुआ, दलौदा, राणापुर, खाचरोद आदि नगरों में पाठशालाएँ शीघ्र शुरु होने के संकेत हैं। परिषद की मध्य प्रदेश कार्यसमिति का गठन किया जा चुका है। केन्द्रीय कार्यसमिती की घोषणा भी हो रही है।

– सुरेन्द्र लोढ़ा

ज्ञानपीठ की बैठक

जावरा :– अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के अन्तर्गत स्थापित श्रीमद् यतीन्द्र-जयंत ज्ञानपीठ संचालन समिती की प्रथम बैठक यहां पूज्य जैनाचार्य श्रीमद्जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज के सानिध्य में सम्पन्न हुई जिसमें ज्ञानपीठ की नियमावली सर्वानुमति से स्वीकृत की गई। बैठक में पंचवर्षीय पाठ्यक्रम की संरचना भी की गई। पाठ्यपुस्तकों को मुद्रित करवाने का निश्चय किया गया। ज्ञानपीठ के अधिष्ठाता पद पर श्री सुरेन्द्र लोढ़ा (मन्दसौर) एवं कोषाध्यक्ष श्री प्रकाशचंद्र लुणावत (बामनिया) नियुक्त किए गए। संचालन समिती में इनके अतिरिक्त सर्व श्री मोहनलालजी एच. ढालावत (बम्बई) श्री प्रवीणभाई भोगीलाल शेठ (अहमदाबाद) श्री भीरवमचंदजी आजाद (जावरा) श्री अनिल जैन (अलिराजपुर) श्री चम्पालालजी मनोहरलालजी जैन (सुराना-राज.) श्री बाबुलालजी बोहरा (नागदा जंक्शन) श्री अशोककुमारजी श्रीश्रीमाल (टाण्डा) तथा श्री गेंदालालजी डांगी (सरसी) है।

सुरक्षा के लिए ज्ञापन भेजा

मन्दसौर :– अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद ने कर्नाटक श्रमण बैलगोला स्थित श्री गोम्मट स्वामी (बाहुबली) की प्रतिमा को उत्पन्न असुरक्षा के प्रति रोष प्रकट करते हुए कर्नाटक सरकार को ज्ञापन भिजवाते हुए मांग की है कि इस पूजनीय, ऐतिहासिक महत्ववाली प्रतिमा की पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था की जाए। स्मरण रहे श्रीलंकाई तमिलो के उग्रवादी संगठन लिट्टे ने इस प्रतिमा को नष्ट करने की धमकी दी है।

आलीराजपुर :– परिषद शाखा द्वारा जुलाई माह में एक ट्रक दुर्घटना में घायल करीबन ३५ लोगों को तात्कालिक सहायता व दवाई वितरण की गयी।

रिंगनोद (रतलाम) :– स्थानीय शाखा परिषद के चुनाव श्री भीकमचन्दजी आझाद की अध्यक्षता में संपन्न हुए। अध्यक्ष – श्री शांतिलाल जडावचंदजी जैन; मंत्री – श्री सुरेन्द्रकुमार श्रीमाल; कोषाध्यक्ष – श्री पारसचन्द चौपडा व अन्य पदाधिकारियों का चयन हुआ।

नागदा :– शाखा नागदा द्वारा पर्युषण पर्व पर भगवान महावीर के जन्मोत्सव के उपलक्ष में नगर में मेधावी छात्र–छात्राओं को जनसेवा ट्रस्ट के प्रमुख डॉ. नाहर के मुख्य आतिथ्य में प्रशंसा पत्र एवं पुरस्कार दिये जाकर सम्मानित किया गया।

झाबुआ :– परिषद की झाबुआ शाखा के चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें – अध्यक्ष – श्री अरविन्दजी लोढ़ा, उपाध्यक्ष – श्री सतीशजी कोठारी, एवं महेशजी संघवी, महामंत्री – श्री मुकेशजी जैन, कोषाध्यक्ष – श्री सुबोधजी राठोर एवं प्रचार मंत्री – श्री दिलीपजी सेठीया एवं पारसजी जैन सर्वानुमति से निर्वाचित किये गए। झाबुआ शाखा की ओर से ५ सितम्बर से १२ सितम्बर तक पर्युषण पर्व के उपलक्ष में विभिन्न धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रम रखे गए। विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाकर विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

दलौदा :– यहां स्थानीय शाखा का प्रान्तीय अध्यक्ष – डा. एस. एल. सुराणा की उपस्थिती में पुर्नगठन किया गया जिसमें अध्यक्ष – श्री रमेशचन्द्र मेहता, उपाध्यक्ष – श्री विनोदकुमार जैन, सचिव – श्री विनोद पोरवाल, कोषाध्यक्ष – राजेन्द्रकुमार जैन एवं प्रचारमंत्री श्री महेशकुमार जैन सर्वानुमति से निर्वाचित किये गये।

अंजड़ – परिषद शाखा के चुनाव में अध्यक्ष – श्री कमलचंद चांदमल चोरडिया, मंत्री – श्री राजेश जैन व कोषाध्याक्ष – श्री बसंतकुमार संचेती बनाये गये।

राजगढ़ (धार) – स्थानीय ईकाई के चुनाव सम्पन्न हुए, जिसमें अध्यक्ष – श्री सुरेशकुमार तांतेड़; मंत्री – श्री महेन्द्रकुमार मोदी; प्रचार मंत्री – श्री ऋषभकुमार बाफना; कोषाध्यक्ष – श्री दिलीपकुमार भंडारी बनाये गये। केन्द्रीय प्रतिनिधी के रुप में श्री केसरचंदजी तांतेड व श्री कांतिलालजी भंडारी लिये गये।

नारोली – स्थानीय शाखा के तत्वावधान में श्री संघ द्वारा पर्वाधिराज पर्युषण पर्व आराधना सानन्द सम्पन्न हुई।

बाग – परिषद के तत्वावधान में धार्मिक पाठशाला का शुभारंभ २१ सितम्बर को श्री वरदीचन्दजी जैन के करकमलों से सम्पन्न हुआ। ५९ छात्र–छात्राओं को शा. अमृतलालजी मगनलालजी की ओर से अभ्यास पुस्तकें वितरित की गयी।

पारा – शाखा पारा के तत्वावधान में पर्युषण पर्व विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों पूजा अर्चना, रात्री प्रभावना आदि के साथ सानन्द सम्पन्न हुए। जावरा में पू. आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी म. सा. की निश्रा में हो रही विभिन्न तपश्चर्याओं के अनुमोदनार्थ पारा से श्री संघ का दि. १६–९–१९९१ को जावरा हेतू प्रस्थान हुआ। कु. ज्योतिबाला कोठारी का ८ उपवास की तपस्या पर माला पहनाकर बहुमान किया गया।

दलोदा :– यहां श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद का गठन किया गया। प्रान्तीय अध्यक्ष–श्री एस्. एल. सुराणा केन्द्रीय कार्यकारिणी की सदस्या श्रीमती तारा सुराणा एवं दलौदा शाखा के अध्यक्ष श्री रमेशचन्द्रजी मेहता की उपस्थिती में अध्यक्ष – श्री प्रभादेवी जैन, उपाध्यक्ष – मंजुदेवी जैन, सचिव – पुष्पा देवी रूनवाल तथा कोषाध्यक्ष – निर्मला देवी दुग्गड़ सर्वानुमति से निर्वाचित की गईं।

महिला समिती की बैठक

जावरा :– परिषद की केन्द्रिय महिला समिति की बैठक पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज के सानिध्य में जावरा में सम्पन्न हुई। बैठक में परिषद के केन्द्रिय महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा विशेष रुप से उपस्थित थे। बैठक में श्रीमती नीता कश्यप, श्री पारसमणी मारवाड़ी, श्रीमती तारादेवी सुराणा, श्रीमती कैलाशीबाई कर्नावट आदि ने भाग लिया। निर्णय किया गया कि हर नगर में महिला परिषद की इकाई गठित की जाए। शीघ्र ही अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद का सम्मेलन जावरा नगर में आयोजित किया जाएगा।

पत्र, सम्पादक के नाम

दीक्षोत्सव के समय वरसीदान की शोभा यात्रा के समय दीक्षार्थी द्वारा चाँवल एवं अन्य सामग्री उछाली जाती है, उस समय काफी लोग पिछे पिछे हासिल करने के लिए दौडते हैं, जिसमें लडाई–झगड़े या दुर्घटना की नौबत भी आती है। उछाले जाने के कारण वे चाँवल भी उपयोग में नहीं आते, अतः यदि शोभायात्रा में यह प्रथा बंद कर दीक्षार्थी द्वारा एक जगह बैठकर चाँवल, कपड़े या अन्य सामग्री बांटी जाये तो उसका उपयोग सार्थक हो सकता है। कई श्री संघों ने तो वर्तमान स्थिती को देखकर इस प्रकार की प्रथा चालू कर दी है।

मेरा सभी गुरु भगवन्तों व श्री संघों से निवेदन है कि एक जगह बैठकर वरसीदान का कार्यक्रम करें। शोभायात्रा में यह प्रदर्शन न करें।

– पुखराज जैन 'अशान्त'

सूचना

रतलाम में एक धर्मप्रेमी सज्जन श्री माणकलालजी मुणोत टाइफाइड, पीलिया एवं अन्य कई तरह की बिमारियों के निदान हेतु आयुर्वेदीक औषधी निःशुल्क वितरण करते हैं, यदि कोई लाभ लेना चाहे तो निम्नांकित पते पर संपर्क करें। – न्यू क्लॉथ मार्केट–**रतलाम म.प्र.** (समय – प्रातः ७ से १२) सिर्फ रविवार को अवकाश होता है।

जालोर में दस दिवसीय श्री राजेन्द्र–जयन्तसेन सम्यग्ज्ञान कन्याशिबिर का आयोजन एवं तपस्याओं की धूम

आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी 'मधुकर' की आज्ञानुवर्ती साध्वीजी महाप्रभाश्रीजी, डा. श्री प्रियदर्शनाश्रीजी, डा. श्री सुदर्शनाश्रीजी की निश्रा एवं प्रेरणा से पर्युषण पर्व पर सामूहिक तपाराधना में मासक्षमण, सोलभत्ता, नौ उपवास एवं छत्तीस अट्ठाईयों सानन्द सम्पन्न हुयी। भाद्रव सुदी अष्टमी के दिन 'तप मुमुक्षु अभिनंदन समारोह के अंतर्गत सभी तपस्वियों को माला, श्रीफल, अभिनंदन–पत्र एवं श्री संघ की ओर से चांदी के सिक्के व महिला मंडल की ओर से चांदी की प्लेट व कटोरी प्रदान की गयी।

दि. ६–९–९१ को दोपहर सामान्य ज्ञान वर्धक प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसमें एक सौ अग्यारह सदस्यों ने भाग लिया। उत्तीर्ण छात्र–छात्राएं पुरस्कृत की गयी।

त्रिस्तुतिक श्री संघ की ओर से दिपावली अवकाश में २५ अक्टूबर से दस दिवसीय श्री राजेन्द्र–जयन्तसेन सम्यग्ज्ञान शिबिर का आयोजन रखा गया है। दसवीं कक्षा से उपर की छात्राएँ भाग ले सकेंगी। इच्छुक छात्राएँ इस पते पर पत्रव्यवहार करें –

साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी, राजेन्द्रभवन, तीन थुई धर्मशाला,
कांकरिया वास, पोस्ट – जालोर (राजस्थान)

जालोर नगरे साध्वीत्रय की निश्रा में विविध आराधनायें

जालोर – वह ऐतिहासिक पावन धरा जहाँ गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्र सूरीश्वरजी ने आठ माह की तपश्चर्या कर जालोर दुर्ग पर स्थित मंदिर से शस्त्रादि बाहर निकलवाकर जिनालयों का उद्धार करवाया था। यही जालोर शहर आज धर्म आराधना का केन्द्र बना हुआ है। इस वर्ष राजेन्द्र भवन कांकरिया वास स्थित धर्मशाला में वर्तमानाचार्य देव श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी की आज्ञा से वयोवृद्ध साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी साध्वीजी डा. सुदर्शनाश्रीजी साध्वीजी डा. प्रियदर्शनाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में नवकार आराधना के समापन पर ऐतिहासिक रथयात्रा आयोजित की गयी, जिसने नगर के विभिन्न राजमार्गों पर तीन घंटे भ्रमण किया। पंचरंगी तप आराधना में एक सौ बहनों ने भाग लिया। श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ के तेले, अरिहंत पद व सिद्ध पद आराधना, सामूहिक १०८ आयम्बिल, नवकार मंत्र अखंड जाप आदि विभिन्न अनुष्ठान सानंद सम्पन्न हुए। श्री पारसमलजी मुथा की धर्मपत्नी सुकीबहन ने मासक्षमण एवं तेरह वर्षीय पुत्री कु. सीमा ने अट्ठाई तप किया। अखंड सांकली अट्ठम व आयंबिल की तपश्चर्या चल रही है।

चंदनबाला के अट्ठम तप की सामूहिक आराधना भी शानदार सोल्लास सम्पन्न हुई। पारणे के अवसर पर झांकी बनायी गयी थी, जिनमें धन्ना सेठ, मूला सेठानी, चंदनबाला, शतानिक राजा, मृगावती रानी, पंचवृष्टि आदि के अनुरुप पोषाक धारण कर विविध भाई–बहनों ने कार्यक्रम को सुंदर व सफल बनाया।

श्री राज राजेन्द्र प्रकाशन ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित साहित्य अवश्य मंगवायें

साहित्य मनीषी आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी लिखित / सम्पादित नव प्रकाशन

भगवान महावीर ने क्या कहा? (द्वितियावृत्ति) – बीस रूपये
चिन्तन निधि – पांच रूपये
भक्तिरंग (स्तुति, स्तवन, सज्झाय) – तीन रूपये
मंगलमय नवकार (गुजराती) – पेंतीस रूपये
पारसमणी (चिन्तन) गुजराती – दो रूपये
गिरिराज गीतांजली (गुजराती) – दो रूपये

प्रत्येक पुस्तक के मूल्य के साथ एक रूपया पोस्टेज स्टेम्प जोड़कर मनीआर्डर या ड्राफ्ट निम्नांकित पते पर भिजवाएं –

शाश्वतधर्म कार्यालय, जामलीनाका, थाने – ४०० ६०१ (महाराष्ट्र)

राज राजेन्द्रसूरि जैन मन्दिर का शिलान्यास संपन्न

जावरा – आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी की निश्रा मे श्री शांतिलालजी जड़ावचंदजी कावेडीया द्वारा श्री राज राजेन्द्र जैन ज्ञान मन्दिर का शिलान्यास एवं श्री तेजमलजी सागरमलजी मेहता द्वारा भूमिपूजन सम्पन्न हुआ। मंदिर हेतु जमीन श्री शान्तिलालजी कावेडीया ने भेंट दी।

समग्र जैन चातुर्मास सूची १९९१ का विमोचन

अ. भा. जैन चातुर्मास सूची प्रकाशन परिषद–बम्बई द्वारा प्रकाशित एवं श्री बाबुलाल जैन 'उज्जवल' द्वारा सम्पादित समग्र जैन चातुर्मास सूची का विमोचन इन्दौर में आयोजित विशाल अहिंसा रेली में सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्री बाबुलाल पाटोदी एवं उद्योगपति श्री नेमनाथ जैन–इन्दौर के शुभ हस्ते सम्पन्न हुआ। समग्र सम्प्रदायों के चातुर्मास पतों के साथ इसमें 'गिनिज बुक रिकार्ड ऑफ जैन समाज' के लगभग १२१ रिकार्ड का विवरण भी प्रकाशित किया गया

परिषद द्वारा गिनिज बुक ऑफ जैन समाज रिकार्ड डायरेक्ट्री के प्रकाशन का निर्णय भी लिया गया है। सम्पूर्ण जैन समाज के प्रत्येक वर्ग में जो भी रिकार्ड बने हों उसकी जानकारी निम्नांकित पते पर भिजवाने का अनुरोध किया गया है – बाबुलाल जैन 'उज्जवल', उज्जवल प्रकाशन, १०५ – तिरूपति अपार्टमेन्ट्स, आकुर्ली – क्रॉस रोड़ नं. १, कांदिवली (पूर्व) बम्बई–४०० १०१

शोक – श्रद्धांजली

जैन शासन का एक तेजस्वी सूर्य अस्त हो गया

अहमदाबाद – श्रावण वदी १४ (गुजराती आषाढ वदी १४) शुक्रवार दि. ९–८–१९९१ को प्रातः १० बजे अहमदाबाद में परिमल रेल्वे क्रॉसिंग के पास 'दर्शन' बंगले में सैकडों साधु साध्वी एवं श्रावक–श्राविकाओं की उपस्थिति में नमस्कार–महामंत्र का श्रवण करते हुए सुविशाल गच्छाधिपति श्रीमद् विजय रामचंद्रसूरीश्वरजी कालधर्म को प्राप्त हो गए। ९६ वर्ष की उम्र में, ७९ वर्ष दीर्घकालीन संयम पर्याय, ५६ वर्ष आचार्य पर्यायी आचार्य भगवंत के नश्वर देह को छोड़ने के समाचार टी.वी., रेडियो, टेलीफोन के माध्यम से सुनते ही समस्त जैन संघ को वज्राघात सा अनुभव हुआ।

दूसरे दिन दिनांक १०–८–१९९१ को प्रातः ९ बजे 'जय जय नंदा – जय जय भद्दा' के गगनभेदी नादों के साथ पालखी निकाली गयी। नगर के विभिन्न राजमार्गों पर बावीस कीलोमीटर की दूरी लाखों नर–नारियों के साथ तय करती हुई यह ऐतिहासिक अंतिम – यात्रा करीब ८ घंटे बाद साबरमती पहुंची, जहॉ पूज्यपाद का अंतिम संस्कार किया गया। रेकार्ड बोलियॉ बोलकर श्रद्धालु – भक्तजनों ने विविध लाभ लिये।

जीवन – झलक –

(आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय रामचंद्रसूरीश्वरजी)

बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्रीमद् विजय रामचंद्रसूरीश्वरजी का जन्म दहेवाण गांव में फाल्गुन कृष्णा चतुर्थी वि. सं. १९५२ को हुआ। उनका नाम था – त्रिभुवनपाल। माता का नाम समरथबाई व पिता का नाम छोटालाल। कम उम्र में माता–पिता का वियोग हो गया किन्तु दादीमां रतनबाई ने ९० वर्ष की उम्र में धर्म संस्कारो का सिंचन किया, फलस्वरूप त्रिभुवनपाल के हृदय में वैराग्य का प्रकटीकरण हुआ। दीक्षा के लिये घर का वातावरण अनुकुल नहीं होने के कारण काफी कोशिश के बाद भी अनुमति नहीं मिलने पर घर से भागकर गुरु चरणों में पहुंच गये। गुर्वाज्ञा पाकर गांधार तीर्थ में दीक्षा ग्रहण कर मुनि प्रेमविजयजी के प्रथम शिष्य मुनि रामविजयजी बने। रत्नत्रयी की आराधना में रत रहते हुए अल्पकाल में ही सारे शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त किया। दीक्षा के प्रथम वर्ष में ही उपाध्यायजी का स्वास्थ्य ठीक न होने से गुरुआज्ञा शिरोधार्य कर ६७ बोल की सज्झाय पर प्रथम सुंदर व्याख्यान दिया। प्रवचन के बाद उपाध्यायजी ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा कि तू बड़ा शासनप्रभावक बनेगा। भविष्यवाणी सार्थक सिद्ध हुयी और पूज्यपाद अल्पकाल में ही सर्वत्र महान् प्रवचनकार के रूप में सर्वत्र विख्यात हुए।

वि. सं. १९७६ के अहमदाबाद चातुर्मास में भद्रकाली माता के मंदिर में प्रतिवर्ष आसोज सुदी १० को दी जानेवाली बकरे की बली को बंद करवायी।

वि. सं. १९९२ वैसाख सुदी ६ को बम्बई में आचार्य श्री प्रेमसूरीश्वरजी के वरदहस्तों से

आ. श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा
जि. गांधीनगर

आचार्यपद पर आरुढ हुए एवं पू. आचार्य श्री विजय रामचंद्रसूरीश्वरजी के नाम से प्रख्यात हुए।

आप १२२ शिष्यों के गुरुदेव एवं २५० साधुओं के दादा गुरुदेव व सैकड़ों साध्वीजी के निश्रादाता बने। अनेकानेक अंजनशलाकाएं, प्रतिष्ठाएं, छ 'रि' पालित संघ आदि धार्मिक अनुष्ठान आपकी निश्रा में सम्पन्न हुए। **'छोड़ने जैसा संसार, लेने जैसा संयम, पाने जैसा मोक्ष'** – यही मुख्य उद्घोषणा पूज्यश्री के प्रवचन में मुख्य रूप से रहती थी।

नव–नव दशकों से जैन धर्म का किर्तीध्वज लहरानेवाले जैन समाज के महान् ज्योतिर्धर शासन प्रभावक पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् रामचंद्रसूरीश्वरजी म. सा. के चरणों में कोटि–कोटि वंदना।

– जे. के. संघवी

☆ **बम्बई** – पाक्षिक हलकारा के प्रधान सम्पादक श्री जीवराज माणकचंदजी रांका का ६३ वर्ष की उम्र में हृदयगति रुक जाने से देहावसान हो गया। राजस्थान में सादड़ी निवासी श्री रांका ने १९६१ में पाली में 'हलकारा' की नींव डाली। पिछले १२ वर्षों से यह पत्र बम्बई से प्रकाशित हो रहा है। वे अपने पिछे धर्मपत्नी, दो पुत्र एवं छः पुत्रियों का भरा–पूरा परिवार छोड गये हैं।

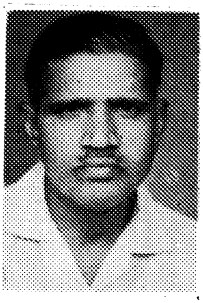

नीमच : अ. भा. श्री रा. जै. न. प. शाखा नीमच के भूतपूर्व उपाध्यक्ष श्री श्वे. जैन संघ नीचम के अध्यक्ष, वरिष्ठ अभिभाषक नीमच को. आप. बैंक के भूतपूर्व अध्यक्ष तथा समाजसेवी एवं गुरुभक्त श्री माधवसिंहजी चौधरी का लम्बी बिमारी के पश्चात संवत्सरी (११–९–९१) के दिन स्वर्गवास हो गया।

श्री लक्ष्मीचंद्र सरोज का दुःखद निधन

जावरा – विद्वान लेखक श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन 'सरोज' का ११ अक्टूबर की रात आकस्मिक दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। स्वर्गस्थ 'शाश्वत धर्म' के साथ प्रारंभ से जुड़े हुए थे। 'शाश्वत धर्म' के ग्राहक उनकी लेखनी से अच्छी तरह परिचित थे। खाचरौद में अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के तीसरे अधिवेशन में झंडा–वंदन व अध्यक्षता आपने ही प्रदान की थी।

अगस्त १९९१ में परिषद के पन्द्रहवें अधिवेशन में आपका अभिनन्दन शॉल, श्रीफल व रुपयों द्वारा किया गया।

श्री सरोज की चिरविदाय से एक ज्ञानवान सरल स्वभावी आत्मा की कमी हुयी है। शोकाकुल परिवार के दुःख में सहभागी होते हुए उनके आत्मशान्ति की कामना करते हैं।

निम्बाहेडा :– गुरुभक्त, संगीतज्ञ एवं गायक श्रीमान् मोडसिंहजी (भँवरलालजी) बोहरा का हृदयगति रुक जाने से दिनांक २६–९–१९९१ को देहान्त हो गया। शाखापरिषद निम्बाहेडा द्वारा शोकसभा आयोजित कर श्रद्धांजली अर्पित की गयी।

शाश्वत परिवार एवं अ. भा. श्री रा. जै. न. परिषद की ओर से भाव भीनी अश्रुपुरित श्रद्धांजली।

समाचार – सार

- **राजमहेन्द्री** – आंध्रप्रदेश जीवरक्षा संघ के उपमंत्री श्री भूपेन्द्रकुमार जैन ने बताया कि गोदावरी पुष्कर मेले के अवसर पर विडियो फिल्म, बेनर, पोस्टर आदि द्वारा शाकाहार प्रचार का कार्य संस्था द्वारा किया गया।

- **कल्याण** – श्री राजस्थान जैन संघ – कल्याण द्वारा ५ सितम्बर से ११ सितम्बर तक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। जिसमें विविध वक्ताओं ने विविध विषयों पर प्रवचन दिये।

- **बम्बई** – प्रार्थना समाज के चंद्रप्रभुजी जैन मंदिर में चातुर्मासार्थ बिराजित मुनिराज श्री विमलसागरजी आदि ठाणा की निश्रा में युवा पीढि में सुसंस्कारों के बीजारोपण हेतु रविवारीय युवा संस्कार – शिबिर का आयोजन किया गया है। जिसमें ५०० युवा भाग ले रहे हैं। १० नवम्बर को भव्य समारोह के साथ शिबिर का समापन होगा।

- **मुलुंड (बम्बई)** – श्री आहोर जैन सेवा संघ (बम्बई) का तृतीय वार्षिक सम्मेलन २ अक्टूबर को सारस्वतवाडी में सम्पन्न हुआ। आयोजन का लाभ थाना निवासी आहोर वाले भाईयों ने लिया। सम्मेलन में साधर्मिक भक्ति हेतु योजना बनायी गयी। दोपहर में विभिन्न प्रतियोगिताएं रखी गयी थी।

- **रानीबेन्नूर** – मुनि श्री भुवनसुन्दरविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में चातुर्मास के अंतर्गत विविध धर्माराधनाएं एवं तपश्चर्याएँ सम्पन्न हुयी।

- **मदनगंज – किशनगढ़** – साध्वीजी श्री कुसुमप्रभाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में विविध तपाराधनाएं सम्पन्न हुयी। प्रवचन में धर्मबिन्दु ग्रंथ व सागरदत्त चरित्र चल रहा है। रविवारीय संस्कार शिबिर भी बालकों के लिये आयोजित किया गया है।

- **ब्यावर** – आचार्य श्री गुणरत्नसूरिजी की निश्रा में १८ अक्टूबर से उपधान तप प्रारंभ होगा।

- **गुंटुर** – मुनिराज श्री दिव्यरत्नविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में ३१ उपवास (२); मासक्षमण (३); श्रेणि तप (१); सिद्धितप (३५); २१ उपवास (१); १७ उपवास (१); १६ उपवास (२३); १५ उपवास (१); ११ उपवास (१७); १० उपवास (२); ९ उपवास (१०); ८ उपवास (१२५); धर्मचक्र तप (१३) आदि तपश्चर्याएं सानंद सम्पन्न हुई। तपस्वियों को पारणा करवाने का लाभ आहोर निवासी शा रायचन्द छगनराज मांडोत ने लिया।

- **कोयम्बतूर** – साध्वीजी श्री मुक्तिश्रीजी की निश्रा में विविध धार्मिक अनुष्ठानों के साथ प्रवचन में श्राद्ध दिन कृत्य व विक्रम चरित्र चल रहा है।

- **अंजड़** – पर्युषण पर्व तप, जप के साथ आनंदपूर्वक मनाया गया। मूर्तिपूजक व स्थानक वासी जैनों का सामूहिक स्वामिवात्सल्य हुआ।

- **खाचरौद** – पू. साध्वीजी श्री कल्पलता श्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में शंखेश्वर पार्श्वनाथ तप के १२० तेले हुए। नवकार आराधना में ७६ आराधकों ने भाग लिया। जिला मंत्री परिषद के श्री ज्ञानचंद मेहता द्वारा मासक्षमण की तपस्या की गई एवं अनेकविध तपश्चर्याओं के साथ पंचरंगी तप की आराधना भी सानन्द सम्पन्न हुई।

- **पारोलातीर्थ** – पू. मुनिराज श्री सर्वोदयसागरजी

म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में पर्युषणपर्व आराधना, प्रौढ संस्कार शिबिर, महाराष्ट्र एकम अधिवेशन आदि कार्यक्रम संपन्न हुए।

- **घाटकोपर (बम्बई)** – आचार्य श्री राजेन्द्रसूरिजी की निश्रा में प्रति रविवार व छुट्टी के दिनों में जैन तत्वज्ञान वाचना शिबिर दोपहर २ से ५ बजे तक रखी गयी है, जिसमें ४०० जिज्ञासु भाग ले रहे हैं।
- **कोबा** – श्रीमद् राजचंद्र आध्यात्मिक साधना केन्द्र में नवनिर्मित श्री विद्या–भक्ति आनंदधाम (नूतन स्वाध्याय मंदिर) का त्रिदिवसीय मंगल प्रतिष्ठा महोत्सव कार्यक्रम ७–१२–१९९१ से ९–१२–१९९१ तक रखा गया है।
- **बड़नगर** – साध्वीजी श्री कनकप्रभाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में चातुर्मास मे विविध आराधनाऐं हुयी। नवकार की नव दिवसीय आराधना में ७५ आराधकों ने भाग लिया।
- **रायचूर** – आचार्य श्री वारिषेणसूरिजी आदि ठाणा की निश्रा में चातुर्मासांतर्गत विविध तपाराधनाएं, पूजन, जाप आदि अनुष्ठान चल रहे हैं। बालकों के उत्साहवर्धन हेतु स्तवन, रंगोली, भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। आचार्य श्री के ८८ वीं ओली चल रही है।
- **ब्यावर** – आचार्य श्री गुणरत्नसूरिजी आदि ठाणा का चातुर्मास भव्य चलसमारोह के साथ हुआ। इस अवसर पर पांच बड़ी दीक्षायें भी सम्पन्न हुयी। आचार्य श्री द्वारा जैन रामायण पर प्रति रविवार को प्रातः ८–३० बजे सार्वजनिक प्रवचन होता है। साथ ही तपस्वियों के भव्य चल समारोह का भी आयोजन किया जाकर तपस्वियों का बहुमान किया गया।
- **मद्रास** – आराधना भवन में विराजित पन्यासजी श्री विमलसेनविजयजी आदि ठाणा एवं साध्वीजी श्री अनंतकीर्तिश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में स्व. आचार्यदेव श्रीमद् विजयरामचंद्रसूरीश्वरजी के संयम जीवन अनुमोदनार्थ अष्टान्हिका महोत्सव विविध पूजनों के साथ २१ अगस्त से २८ अगस्त तक मनाया गया।
- **कर्नूल** – आचार्य श्री अशोकरत्नसूरिजी आदि ठाणा की निश्रा में व्याख्यान में आत्मप्रबोध एवं धन्यचरित्र चल रहा है। गौतमस्वामी छट्ठ, दीपक एकासणे, पंचपरमेष्ठि की आराधना अक्षयनिधि तप आदि तप–जप अनुष्ठान चल रहा हैं।
- **मलकापुर** – महासतिजी डा. मंजुश्रीजी म. अक्षयश्रीजी म. मल्लीश्रीजी म. आदि ठाणा के चातुर्मास प्रवेश के बाद विविध कार्यक्रमों मे 'जैन बुक बैंक' का उद्घाटन, आठ दिवसीय महिलाओं का आध्यात्मिक शिबिर, शाकाहार सम्मेलन, शाकाहार प्रदर्शन, शाकाहार चित्र व निबंध स्पर्धा, दृष्टि एकाग्रता स्पर्धा, नवपद एकासने, अष्ट दिवसीय ॲक्युप्रेशर शिबिर, मतिमंद बालक परीक्षण शिबिर, आचार्य श्री आनंदऋषिजी म. का ९२ वॉ जन्मदिवस आदि सम्पन्न हुए।
- **पुणे** – गणिवर्य श्री मणिप्रभसागरजी आदि ठाणा ३ की निश्रा में युवा शिक्षण उपक्रम के अंतर्गत अरिहंत ज्ञान शिबिर का प्रारंभ किया गया है। प्रति रविवार को महाभारत पर सार्वजनिक प्रवचन हो रहे हैं। विविध तपश्चर्याओं का क्रम भी जारी है।
- **विजयवाड़ा** – श्री महावीर संगीत मंडल के द्वितीय वार्षिक चुनाव में अध्यक्ष श्री भरत सोलंकी, सचिव श्री राजेन्द्र जैन, निर्देशक – श्री पारसमल गांधी व अन्य पदाधिकारी सर्वानुमति से चुने गये।
- **सियाणा** – मुनिराज श्री केवलविजयजी

वीररत्नविजयजी, हर्षितरत्नविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में अखंड अट्ठम व आयम्बिल के साथ ही विभिन्न तपश्चर्याएँ उल्लास पूर्वक की गयी।

- **भीनमाल** – पू. मुनिराज श्री जयानन्दविजयजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में शा. बाबूलाल अमीचंद बाफना द्वारा आयोजित नमस्कार महामंत्र आराधना एवं पर्यूषण पर्व आराधना सह चातुर्मासिक आराधना के कार्यक्रम निर्विघ्न सम्पन्न हुए।

- **पालीतणा** – पू. साध्वीजी श्री दमयंती श्रीजी म. सा. की निश्रा में दो मासक्षमण १६ उपवास, १७ उपवास, अट्ठाई, छट्ठ, अट्ठम उपवास, चौसठ पोहरी पौषध आदि तपश्चर्याएं निर्विघ्नता पूर्वक सम्पन्न हुई। तपस्वियों का एक चल समारोह आयोजित किया गया एवं अष्टान्हिका महोत्सव का आयोजन किया गया।

- **कुशलगढ़** – त्रिस्तुतिक जैन संघ द्वारा पर्युषणपर्व सानन्द भक्तिपूजन आदि विविध कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। संवत्सरी के दिन सामूहिक चल समारोह का आयोजन किया जाकर स्वामी वात्सल्य किया गया।

- **राजगढ़ (धार)** – अ. भा. श्री रा. जैन प. शाखा राजगढ़ द्वारा तपस्वियों का तपस्याओं के अनुमोदनार्थ बहुमान किया गया। पर्युषण पर्व के अवसर पर आठों दिन विविध कार्यक्रमों में जिन पूजनवंदन प्रतियोगिता भी आयोजित की गई जिसमें प्रतियोगीयों को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया गया।

- **पुणे** – पू. गणीवर्य श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. की निश्रा में तपश्चर्याओं का ठाट चल रहा है। मासक्षमण सिद्धितप, १६ उपवास अट्ठाईयां आदि विविध तपश्चर्याओं के साथ नवकार आराधना सम्पन्न हुई। सभी तपस्वियों का अभिनन्दन एवं बहुमान किया गया।

- **मदुराई** – यहाँ उवसगाहरं महापूजन और श्री पार्श्वनाथ भगवान तथा सुमतिनाथ भगवान के मन्दिर में अठारह अभिषेक का कार्यक्रम सहर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

- **मन्दसौर** – पू. साध्वीजी श्री दर्शित कलाश्रीजी आदि म. सा. की निश्रा में धर्माराधनाओं का ठाट चल रहा है। चातुर्मास प्रवेश के दिन से ही आयंबिल तप, शंखेश्वर पार्श्वनाथ तेला तप, नवकार महामंत्र आराधना, पर्युषण पर्व, कल्पसूत्रवांचन, बारसासूत्रवांचन नवदिनपूजा आदि विविध तपश्चर्या का कार्यक्रम चल रहा है। पू. साध्वी श्री जीवनकला श्रीजी म. सा. की अट्ठाई की तपश्चर्या, निम्बाहेड़ा निवासी सरजूबाई परमार के मासभक्षण की तपश्चर्या इसके अतिरिक्त २१ उपवास, ९३ उपवास की तपस्या, अट्ठाई, ६-५-४-अट्ठमतप, बेला, तेला, बीस स्थानक तप, वर्धमान तप आयंबिल आदि तपश्चर्याएं सुखसाता पूर्वक चल रही हैं। नवकार आराधना निर्विघ्न सम्पन्न हुई। पर्युषण पर्व के दिवस में तीनों मन्दिरजी के पालनों का एक ही स्थान पर एकत्रीकरण किया जाकर भगवान महावीर स्वामी का जन्मोत्सव मनाया गया।

- **इन्दौर** – श्री वर्धमान जैन श्रावक संघ खेरोदा (उदयपुर) द्वारा श्री मोतीलाल सुराणा इन्दौर को 'समाज रत्न' पद से विभूषित किया गया। श्री मोतीलाल सुराणा द्वारा नैतिक जीवन ग्रंथ माला की ३५ पुस्तकों का सम्पादन किया गया है।

- **थराद** – साध्वी श्री कोमललताश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में चातुर्मास में विविध तपश्चर्याएं हुई। साध्वीजी श्री यशोलताश्रीजी म. सा की १० दिवसीय उपवास की आराधना निर्विघ्न सम्पन्न हुई।

- **अहमदाबाद** – पू. आचार्य श्री विजयप्रद्योतसूरिजी म. सा. की शुभनिश्रा में स्व. पू. आचार्य श्री रामचन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. के संयमजीवन के अनुमोदनार्थ तथा श्री संघ में हुई विविध तपश्चर्याओं निमित्त ४५ आगम पूजा, श्री सिद्धचक्रपूजा, १०८ अभिषेक, श्री भक्तामर पूजन, श्री शांतिस्नात्र, श्री वृहत अष्टोत्तरी स्नात्र सहित एक्कीस दिवसीय २१ छोड़ का भव्य उद्यापन सहित जिनभक्ति महोत्सव का आयोजन दि. १६–९–९१ से ९–१०–९१ तक किया गया।

- **दिल्ली** – एस. एस. जैन सभा दिल्ली द्वारा तपस्वी मुनिराज श्री जिनेन्द्रमुनिजी म. सा. आदि ठाणा एवं महासतीजी श्री केशरदेवीजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में तपस्वी श्री महेताबरायजी के ३१ उपवास के अनुमोदनार्थ एवं तपस्वी श्री गोपीरामजी का अभिनन्दन समारोह १ सितम्बर को मनाया गया। एवं तपोत्सव दिवस को अहिंसा दिवस के रुप में मनाया गया। इस अवसर पर श्री बाबुलालजी सोवरिया ने धर्मपाल जैन बनकर अहिंसा की शपथ ली।

- **खीमेल** – पू. आचार्य श्री सुशील सूरीश्वरजी म. सा. के ७५ वें जन्मदिवस के निमित्त अमृतमहोत्सव एवं चतुर्विध श्री संघ में हुई विविध तपश्चर्याओं के अनुमोदनार्थ श्री पार्श्व पद्मावतीपूजन, श्री भक्तामर पूजन श्री अष्टोत्तरी शांतिस्नात्र महापूजा युक्त जिनेन्द्र भक्ति स्वरूप नवान्हिका महोत्सव दि. १३ सितम्बर से २१ सितम्बर १९९१ तक मनाया गया।

- **दिल्ली** – श्री श्वे. स्थानक वासी जैन श्रावक प्रबन्ध समिति दिल्ली द्वारा पू. उपाध्याय श्री कस्तुरचंदजी म. सा. की जन्मशताब्दी एवं ग्रंथ का विमोचन कार्यक्रम का आयोजन दि. १३ अक्टूबर को किया गया।

- **नीमच** – नीमच सीटी में स्थानकवासी एवं मन्दिरवासी दोनों सम्प्रदाय द्वारा सामुहिक रूप से पर्युषण पर्व मनाया जाकर एक ही दिन संवत्सरी प्रतिक्रमण सामूहिक रूप से किया गया।

- **यादगिरी** – प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी नमस्कार महामंत्र की आराधना की गई जिसमें अच्छी संख्या में आराधकों ने भाग लिया। नवकार आराधना के दिनों में शा. चम्पालालजी, चुन्नीलालजी तथा भूरमलजी द्वारा तीनों समय देववन्दन चैत्यवन्दन और प्रतिक्रमण करवाये गये। स्नात्रपूजन एवं नवाणुं प्रकार की पूजन का भी आयोजन किया गया।

- **माहिम (बम्बई)** – श्री जैन एक्टीव सोश्यल ग्रुप (माहिम) द्वारा निबन्ध प्रतियोगीता का आयोजन किया गया जिसमें प्रथम ग्रुप में कु. राखी रतनचंदजी जैन प्रथम (माहिम) तथा अशोक फतेलालजी पामेचा (ठाकुरद्वार) द्वितीय तथा द्वितीय ग्रुप में श्री शैलेषकुमार घेवरचंद (लोअर परेल) प्रथम एवं दिलीप कान्तिलाल संघवी (थाने) द्वितीय रहे।

  प्रथम प्रतियोगीयों को स्वर्ण ट्राफी तथा द्वितीय प्रतियोगीयों को रजत ट्राफी एवं प्रमाणपत्र से सम्मानित किया गया। पारितोषिक श्री लालचंद वीरचंद सोलंकी की ओर से तथा अल्पाहार का आयोजन श्री जेठमलजी लक्ष्मीचंदजी सेवाड़ी वालों की ओर से किया गया।

- **जावरा** – श्री महावीर संयुक्त जैन माध्यमिक विद्यालय में ४५ वें स्वीधीनता दिवस पर ध्वजारोहण एवं पी. टी. प्रदर्शन राष्ट्रीय गीत एवं अन्य कार्यक्रम श्री जे. के. संघवी (सम्पादक) शाश्वत धर्म ठाणे के मुख्यातिथ्य में एवं श्री शांतिलालजी सुराणा (पूर्व कोषाध्यक्ष अ. भा. श्री रा. जै. न. प.) की अध्यक्षता में

सम्पन्न हुए। कार्यक्रम का संचालन श्री मदन धारीवाल ने किया एवं अतिथियों का स्वागत संस्था के संचालक श्री नगीन सकलेचा ने किया। संचालक श्री राजमलजी मांडोत की ओर से मिठाई वितरित की जाकर श्री वर्धमान पावेचा द्वारा आभार प्रदर्शन किया गया।

• **पुणे** – गणिवर्य श्री. मणिप्रभ सागरजी आदि ठाणा की निश्रा में श्री करणराजजी लोढ़ा परिवार द्वारा चैत्य परिपाटी का आयोजन किया गया। करीबन दो हजार भाई बहन श्री पार्श्वनाथ चौक स्थित तीनों मंदिरों के दर्शन कर दादावाडी, आदिनाथ सोसायटी होकर कात्रज पहुंचे। जहाँ मुनिश्री का प्रवचन हुआ।

हिंसक टूथपेस्ट का इस्तेमाल न करें, अब उपलब्ध है, उसका विकल्प

शायद आप नहीं जानते होंगे कि बाजार में उपलब्ध लगभग सभी टूथपेस्टों में उपयोग में लाये जानेवाले फॉस्फेट व जिलेटिन की प्राप्ति मृत प्राणियों की हड्डियों से होती है। एक शाकाहारी एवं अहिंसा में विश्वास रखनेवाले व्यक्ति के लिये यह दुःखद घटना है।

किन्तु आप हिंसक वस्तुओं के इस्तेमाल से बच सकें, इसलिए शत प्रतिशत शाकाहारी व पूरी तरह जंड़ी बूटियों से बनाया हुआ **'अमर' टूथ पेस्ट** और **टूथ पाउडर** अब बाजार में उपलब्ध है। तुलनात्मक दृष्टि से भी बाजार में उपलब्ध किसी भी टूथपेस्ट या टूथ पावडर से इसकी शक्ति कम नहीं है। लगभग एक दशक तक शोध के परिणाम स्वरुप अहिंसक विकल्प की प्राप्ति हुयी है।

अतः सभी अहिंसा प्रेमियों से निवेदन है कि उपलब्ध अन्य हिंसक टूथपेस्ट के विकल्प के रूप में **अमर टूथपेस्ट / अमर टूथ पाउडर** का इस्तेमाल करें।

भेंट प्राप्त करें

आचार्य श्री वारिषेणसूरीश्वरजी की ८८ वीं ओली पूर्णाहुति निमित्ते टी. वी. या टी. बी., नारी तू नारायणी, पुण्यानंद पीयुष आदि पुस्तकें हेमराज प्रेमराज सोनी ट्रस्ट – हिंगोली द्वारा निम्नांकित पते पर एक रूपये के पोस्टेज स्टेम्प भेजने पर भेंट भेजी जायेगी

श्री भुवन तिलक कृपा मंदिर, बेरून किल्ला
जैनमंदिर – रायचूर (कर्नाटक) पिन – ५८४ १०१

अगला अंक परिषद अधिवेशन विशेषांक

शाश्वतधर्म का अगला अंक (नवम्बर + दिसम्बर) परिषद के १५ वें अधिवेशन के विषय में विशेष सामग्री लेकर प्रकाशित होगा।

जैन धर्म प्रचार हेतु विश्व व्यापी प्रयत्न

अमेरिका के केलिफोर्निया राज्य के सानफ्रांन्सिस्को में स्टेनफर्ड युनिवर्सिटी में आयोजित 'जैना' के छठे अधिवेशन के प्रारंभ में अतिथि विशेष के रुप में पधारे भारत के ब्रिटेन के राजदूत डॉ. अेल. एम. संघवी द्वारा इन्स्टिट्यूट ऑफ जैनोलॉजी (इंग्लैण्ड) द्वारा प्रकाशित 'अहिंसा' त्रैमासिक पत्रिका के प्रथमांक का विमोचन किया गया। इस संस्था द्वारा 'तीर्थंकर महावीर स्वामी' नामक गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा की एक घंटे की ऑडियॉ विझ्युअल कैसेट का भी विमोचन हुआ। संस्था द्वारा 'तत्वार्थसूत्र' के अनुवाद का कार्य चल रहा है।

आहोर प्रवासी बंधुगणों से निवेदन

आहोर नगर से बाहर बसे आहोर जैन प्रवासी बंधुगणों की कंप्युटराइज्ड अखिल भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एड्रस डायरी मद्रास के श्री आहोर जैन प्रवासी संघ एवं श्री आहोर यूथ फाउण्डेशन के तत्वावधान में शीघ्र ही छपने जा रही है। सर्व आहोर जैन प्रवासी बंधुगणों से निवेदन है कि अपने व्यापारिक प्रतिष्ठान एवं निवास स्थान के पते टेलीफोन नम्बर के साथ शीघ्रातिशिघ्र निम्न पते पर भिजावें।

AHORE YOUTH FOUNDATION
C/o. Talawat Trading Co., 145, F, NSC Bose Road,
Davey Complex, Madras - 600 079.

कत्लखाने के विरोध में सत्याग्रह

दिल्ली – यह गंभीर चिंता एवं चुनौती का विषय है कि आम प्रजा के विरोध के बावजूद सरकार बार–बार देश के पशुधन को नष्ट करने के लिए जगह–जगह कत्लखाने की योजना बनाकर संस्कृति के लिए कलंक का कदम उठाती रही है। २७ अगस्त को नई दिल्ली में श्री कमलमुनिजी, स्वामी दयानंद आदि अनेक संतो के आव्हान पर विविध संस्थाओं द्वारा विशाल रैली का आयोजन किया गया। अनेकों कार्यकर्ताओं ने गिरफ्तारियॉ दी। प्रधानमंत्री श्री पी. वी. नरसिंहराव को ज्ञापन दिया गया। सभी संस्थाओं, संघों व राजनैतिक, सामाजिक संगठनों को इस विषय में लोक जागृति कर विरोध पत्र सरकार के पास भिजवाने चाहिये।

जावरा के कांठेड परिसर में जैन मंदिर बनेगा

आचार्य श्री की प्रेरणा से सिव्हिल हॉस्पिटल कांठेड परिसर में जिनमंदिर निर्माण होगा। जमीन क्रय कर ली गयी है। मंदिर निर्माण में विशेष सहयोग श्री सेवंतीभाई मोरखीया एवं श्री आर. जी. भंडारी – बम्बई वालों ने देने की घोषणा की है।

साहित्य स्वीकार

- **शत्रुंजय वैभव** – लेखक – मुनि कांतिसारजी; प्रकाशक – कुशलसंस्थान, ३९६६ – मोतिसिंह भोमिया रस्ता, जयपुर – ३०२ ००३; प्रथम संस्करण; मूल्य – सजिल्द १२५ रुपये; पृष्ठ ३८८

  श्री शत्रुंजय गिरि (सिद्धाचलजी) पर प्रतिष्ठित प्रतिमा लेखों, प्रतिष्ठाचार्यों का परिचय एवं सभी गच्छों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

- **जैन आहार विज्ञान** – (पर्व प्रज्ञा – पुष्पांक ५) संपादिका – श्रीमती गीता जैन; (गुजराती – हिन्दी – अंग्रेजी); प्रकाशक – न्यू पब्लिकेशन्स, १२ हीरा भुवन, मुलुण्ड, बम्बई – ४०० ०८०, मूल्य बीस रुपये; पृष्ठ २३८

  चार रंगी आकर्षक आवरण पृष्ठ युक्त जैन आहार विज्ञान पर विभिन्न विद्वानों व लेखकों द्वारा लिखीत गुजराती, हिन्दी व अंग्रेजी में लेख प्रकाशित किये गये हैं।

- **श्री महावीर चरित्र सहस्त्र पदावली** – रचयिता व प्रकाशक व प्राप्तिस्थान – श्री सीताराम जैन, ७६ नीमडी कॉलोनी, दिल्ली – ११० ०५२; पृष्ठ १०४

  भगवान महावीर के जीवन चरित्र को १००० पदों में प्रस्तुत किया गया है। भाषा व शैली सुंदर है।

- **श्री जैन तत्वज्ञान चित्रावली प्रकाश** – विवेचक – पू. आचार्य श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी, प्रकाशक व प्राप्तिस्थान – सुसंस्कार निधि ट्रस्ट, भरतकुमार चतुरदास शाह, ८६८ कालुशीनी पोल, कालुपुर, अहमदाबाद – १; मूल्य – बीस रुपये; पृष्ठ ६०

  जैनतत्वज्ञान के अंतर्गत चौदह राजलोक, द्वीप समूह, कालचक्र, नवतत्व, चौदह गुणस्थानक, आठ कर्म, लेश्या आदि को चित्रों के साथ समझाया गया है।

- **मंडलाचार्य श्री कुशलचंद्र विजयजी गणिवर** – लेखक – मुनि श्री भुवनचंद्रजी; प्रकाशक व प्राप्तिस्थान – श्री कच्छ प्रदेश पार्श्वचंद्र गच्छ जैन संघ, द्वारा – शा. जखुभाई गेलाभाई, बिदडा – ३७० ४३५, कच्छ (गुजरात); मूल्य – पन्द्रह रूपये; पृष्ठ १६६

  जैन शासन में क्रियोद्धार की भव्य परम्परा है। एक सौ पचास वर्ष पूर्व श्री कुशलचंद्रजी गणिवर ने भी धर्मसुधार के इस उत्तरदायित्व को निभाया था। मेटर संकलन व साजसज्जा में श्रम लिया गया है।

- **समर्पण** – सम्पादक – मुनि श्री नित्यानंदविजयजी; प्रकाशक व प्राप्तिस्थान – श्री जयन्तसेनसूरि मित्र मंडल, जावरा, (जिला – रतलाम) म. प्र.; मूल्य – पांच रुपये, पृष्ठ ७४

  संयम दाता गुरुदेव जयन्तसेनसूरीश्वरजी मधुकर का जीवन चरित्र एवं जीवन पर आधारित भाववाही गहुंलियों का प्रकाशन किया गया है।

- **तब आंसु भी मोती बन जाते हैं** – लेखक – मुनि श्री रत्नसेनविजयजी; प्रकाशक स्वाध्याय संघ, इंडियन ड्राइंग इक्युपमेन्ट इंडस्ट्रीज, शेड नं २, सिडको इंडस्ट्रीयल स्टेट, अम्बेत्तूर, मद्रास – ९८; पृष्ठ २१०; मूल्य पन्द्रह रूपये

  सागर दत्त चरित्र के आधार पर उपन्यास रुप में कथानक आलेखित किया गया है।

- **THE LIGHT OF HUMANITY** – लेखक, प्रकाशक, प्राप्तिस्थान व मूल्य उपरोक्त अनुसार

- **चिन्तननिधि – चिन्तक** : आचार्य जयन्तसेनसूरिजी 'मधुकर', प्रकाशक – श्री राज राजेन्द्र प्रकाशन ट्रस्ट – अहमदाबाद/बम्बई; प्राप्तिस्थान – शाश्वतधर्म कार्यालय, जामलीनाका – थाने, पृष्ठ १२०; मूल्य – पांच रुपये

  चार रंगी आकर्षक कवरपृष्ठ एवं द्विरंगी मुद्रण ऑफसेट में – आचार्य श्री की निजी डायरी में अंकित चिन्तन को प्रकाशित किया गया है।

- **गुरु वंदना** – रचयिता, प्रकाशक, प्राप्तिस्थान व मूल्य उपरोक्त अनुसार; पृष्ठ ५४ गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी एवं यतीन्द्रसूरीश्वरजी को वंदना स्वरुप रचित पदों को प्रकाशित किया गया है।

- **भक्तिरंग** – रचयिता, प्रकाशक, प्राप्तिस्थान उपरोक्त अनुसार, मूल्य – तीन रुपये; पृष्ठ ८४

  आचार्य श्री द्वारा रचित चैत्यवंदन, स्तुति, स्तवन, सज्झाय का संकलन प्रकाशित किया गया है।

- **झेर पीधां तां जाणी जाणी –(गुजराती)** लेखक – गणिवर्य श्री हेमरत्नविजयजी म. सा.

  आज के विषम वातावरण में युवा पिढी जिन तीन व्यसनों का मुख्य रुप से शिकार हो रही है, उन जुआ, शराब, मांसाहार पर मननीय एवं हृदय वेधक प्रवचनों का संकलन प्रकाशित किया गया है। मुखपृष्ठ खूब आकर्षक बना है।

- **आत्मदर्शन** – लेखक : श्री. के. पी. शाह; प्रकाशक व प्राप्तिस्थान – श्री विद्योत्तेजक मंडल, सात रस्ता के सामने, जामनगर – ३६१ ००८ (गुजरात)

  आत्मा विषयक बातों को शिष्य गुरु के संवाद द्वारा सरल रुप में समझाया गया है।

- **अंगूठे अमृत वसे – (गुजराती)** सम्पादक : मुनिश्री अनंतचंद्रविजयजी, लेखक : डॉ. कुमारपाल देसाई; प्रकाशक : श्री वितराग धर्म प्रभावक ट्रस्ट, ५३ नगरसेठ मार्केट, अहमदाबाद – १, मूल्य – ४० रुपये

  आर्ट पेपर पर चार रंगी चित्रों के साथ प्रकाशित इस पुस्तक में गौतमस्वामी का जीवन चरित्र आलेखित किया गया है।

- **मुक्ति का मंगलद्वार** – लेखक : मुनिराज श्री जयानंदविजयजी; प्रकाशक व प्राप्ति स्थान – पी. साजी टेक्सटाईल्स लिमिटेड, ४१ एल. के. मार्केट, दूसरा माला, जवेरीबाझार बम्बई – २; पृष्ठ १४०

  नवतत्वों की विस्तृत व्याख्या समझायी जाकर स्वाध्याय हेतु पिछे प्रश्नोत्तरी दी गयी है।

- **श्री लक्ष्मी पूजन विधि** – प्रकाशक व प्राप्तिस्थान : श्री राम प्रसन्न ज्ञान प्रसार केन्द्र, चन्द्रपुर (महाराष्ट्र), मूल्य – तीन रुपये

विशेषांक

- **जिनवाणी (आचार्य श्री हस्तीमलजी श्रद्धांजली विशेषांक)** – मई – जून – जुलाई १९९१ सम्पादक – डा. नरेन्द्र भानावत, प्रकाशक – सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल, जयपुर, मूल्य – दस रुपये; पृष्ठ ४२२

- **सुशील सन्देश (आचार्य श्री हेमचंद्रसूरि विशेषांक)** – सितम्बर १९९१; सम्पादक – श्री नैनमल सुराणा; प्रकाशक व प्राप्तिस्थान – सुशील फाउण्डेशन; सुशील संदेश प्रकाशन मंदिर, सुराना कुटीर, रुपखान मार्ग, सिरोही (राज.)

- **दिव्यध्वनि (आचार्य श्री विद्यासागर विशेषांक)** – सम्पादक – श्री प्रकाश शाह; प्राप्तिस्थान – श्रीमद् राजचंद्र आध्यात्मिक साधना केन्द्र – कोबा – ३८२ ००९ (जि. गांधीनगर, गुजरात)

- **कथालोक (भक्ति – कथा विशेषांक)** – अगस्त – सितम्बर १९९१ सम्पादक प्रकाशक – हर्षचंद जैन ४०४ कुन्दन भवन आजादपुर कमर्शियल कॉम्पलेक्स – दिल्ली – ३३ पृष्ठ – १३० मूल्य – १० रुपये।

आपका पत्र मिला ———

- .....समस्त जैन सम्प्रदायों को आप अपनी पत्रिका में स्थान देते हैं यह श्लाधनिय है। शाश्वतधर्म की साजसज्जा सुहावनी और मुद्रण स्तरीय होता है। मैं समझता हूँ प्रत्येक जैन परिवार के लिए शाश्वत धर्म एक अनिवार्यता है। **– मुनि ललित प्रभसागर**

- .....शाश्वतधर्म में लेख बहुत अच्छे प्रकाशित हो रहे हैं। ''तब तू क्या करेगा'' लेख बहुत अच्छा लगा और आगे भी ऐसे लेख देते रहेंगे यही हमारी शुभ कामनाए हैं।
– जयंतीलाल जुगराजजी जैन–हुबली

- .....अगस्त अंक मिला आनेवाला हर अंक पहले से ज्यादा रोचक होता है। नमस्कार महामंत्र पर लेख ज्ञानवर्धक लगा। **– संघवी विमलचंद आनन्दराज – पूना**

- .....शाश्वत धर्म अगस्त ९१ का अंक काफी अच्छा व महत्वपूर्ण रहा। आपने सम्पादन का कार्य भार सम्भाला है पत्रिका में उत्तरोत्तर गजब का निखार आ रहा है। साज सज्जा व पठनीय सामग्री अति उत्कृष्ट प्रस्तुत कर रहे हैं। सभी अंक संजोकर रखने योग्य बन रहे हैं। आपके विशाल और व्यापक दृष्टिकोण के लिए अभिनन्दन।
– ललितकुमार जवेरचंद भंडारी – शहापुर (कर्नाटक)

- .....शाश्वत धर्म अगस्त ९१ का अंक प्राप्त हुआ महामंत्र नमस्कार का जप जपनेवाले को इससे लाभ प्राप्त हो इसी की जानकारी विशेष तौर पर ज्ञात हुई। आपको बधाई।
– बच्छराज भंसाली–धाणसा

- .....अगस्त मास का अंक मिला। सहर्ष धन्यवाद। इस अंक में नवकार मंत्र के बारे में जितने भी लेख छपे हैं एक से बढ़कर एक है। पढ़ने में बहुत ही रूची लगी।
– महेन्द्रजैन ॲण्ड कं. – भीमावरम्

- .....शाश्वत धर्म अंक मिला अंक की उत्तमता अपने आप में अद्वितीय है णमोकार मंत्र साहित्य श्रीमती गीता जैन का संकलन अत्याधिक सराहनीय है शोधार्थियों के लिये यह एक आलोक स्तम्भ है। शाश्वत धर्म नित्यप्रति निखरता जा रहा है। लेखों कविताओं का स्तर जहां समाज के लिये उदबोधक एवं संवादक है वही उत्कृष्ट मुद्रण एवं साज सज्जा की दृष्टि में भी पत्रिका अद्वितीय है। कृपया समन्वयात्मक इस उत्कृष्ट थाती के लिये साधुवाद स्वीकार करें।
– डॉ. एस्. एन. पाठक–भोपाल

- .....शाश्वत धर्म निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है विभिन्न प्रकार के समाचार एवं ज्ञान से परिपूर्ण लेख दिये जा रहे हैं। अतीव प्रसन्नता है। गुरुदेव प्रभु से शाश्वत धर्म एवं सम्पादक परिवार का जीवन मंगलमय हो, ऐसी शुभ प्रार्थना है। **– विमलचंद जैन–भरतपुर**

- .....पुस्तक का गेट अप व छपाई बहुत सुन्दर है तथा ज्ञान कसौटी व शब्द सागर इनामी स्पर्धा से इस पत्रिका के प्रति बच्चे बहुत आकर्षित होते हैं। **– हीराचंद जैन–भीनमाल**

- .....अगस्त ९१ के अंक में सभी लेख रुचिकर एवं उत्तम है यदि इस पुस्तक में बालोपयोगी

ज्ञानवर्धक शिक्षाप्रद कहानियों का समावेष होता रहे तो यह पुस्तक और भी रुचिकर हो सकती है। **– दिलीपकुमार जैन–धार**

- .....शाश्वत धर्म अगस्त मास का अंक प्राप्त हुआ। नवकारमंत्र की महिमा को बहुत श्रेष्ठ प्रकार के लेखों द्वारा चित्रित किया गया। पत्रिका बहुत ही आकर्षक, सुन्दर, रोचक व ज्ञानवर्धक है जो आपकी सम्पादकता पर मुनहसिर है। हमें हर मास पत्रिका का बेसब्री से इन्तजार रहता है। **– कु. प्रतिभा सकलेचा – महिदपुरसीटी**

- .....शाश्वत धर्म के जुलाई अंक में आपका सम्पादकीय (धर्मनिरपेक्षता एवं राष्ट्रीय अखंडता) पढ़कर प्रभावित हुई। आपने राष्ट्र की खास समस्या पर सभी का ध्यान आकृष्ट किया है – साधुवाद। **– मिनाक्षी जैन – रतलाम**

समस्त श्री संघो से जाहिर निवेदन

जावरा नगर में आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी आदि मुनिमंडल के चातुर्मासार्थ पधारने से अभूतपूर्व धर्म–जागृती छायी हुयी है। सारे धार्मिक अनुष्ठान सुखशान्ति एवं अपूर्व उत्साह के साथ चल रहे हैं। नित्य प्रवचनादि में भी सैकड़ों भाई–बहन लाभ ले रहे हैं। विभिन्न प्रान्तों व नगरों से प्रतिदिन श्री संघो व श्रद्धालुओं का आचार्य श्री के दर्शनार्थ/वंदनार्थ पदार्पण अविरत चालू है। आप सभी को पधारने का भी हमारा आग्रह युक्त भाव भरा निमंत्रण है।

कुछ विघ्नसंतोषी शरारती तत्वों द्वारा अपनी पुरानी आदत के अनुसार विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में बेबुनियाद व झूठे अशान्ति के समाचार प्रकाशित करवाये हैं, जो बिल्कुल भ्रामक व असत्य है। कृपया उन पर विश्वास न करें एवं जावरा नगर में स्वयं पधारकर सत्य की अनुभूति करें। जयजिनेंद्र।

निवेदक – श्रीमद् जयन्तसेनसूरि चातुर्मास समिति (जावरा)

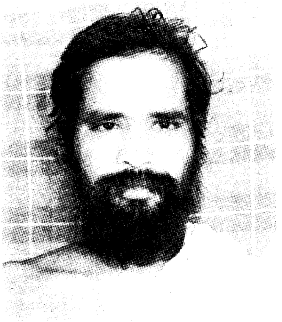

मुनिश्री पद्मरत्नविजयजी
[55 उपवास]

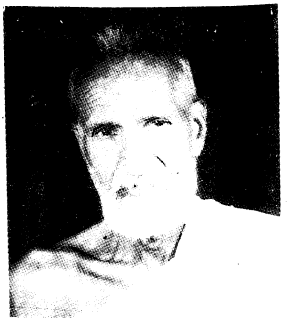

मुनि श्री नयरत्नविजयजी
मासक्षमण[30उपवास]

मुनिश्री अपूर्वरत्नविजयजी
[16उपवास]

मुनिश्री विरवरत्नविजयजी
(८उपवास)

साध्वीजी श्री
चारुदर्शनाश्रीजी
(21उपवास)

श्रीमति कमलाबाई सुराणा
(36उपवास)

श्रीमति प्रमीलाबाई पारसमलजी
चपड़ोद (31उपवास)

आचार्यश्री
जयन्तसेनसूरिजी
की निश्रा में जावरा
में विभिन्न
तपस्यायें

श्रीमति सोहनबाई दसेड़ा
(30उपवास)

શ્રી સદ્‌ગુરુ પ્રસાદ

શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર

જે જીવ પોતાને મુમુક્ષુ માનતો હોય, તરવાનો કામી માનતો હોય, સમજુ છું એમ માનતો હોય તેણે દેહને વિષે રોગ થતી વખતે આકુળવ્યાકુળપણું થયું હોય તો તે વખતે વિચારવું કે તારું મુમુક્ષુપણું, ડહાપણ, ક્યાં ગયાં ? તે વખતે વિચાર કેમ નહિ કરતો હોય ? જો તરવાનો કામી હોય તો તો દેહને અસાર જાણે છે, દેહને આત્માથી જુદી જાણે છે. તેને આકુળતા આવવી જોઈએ નહિ. દેહ સાચવ્યો સચવાતો નથી; કેમ કે તે ક્ષણમાં ભાંગી જાય છે. ક્ષણમાં રોગ, ક્ષણમાં વેદના થાય. દેહના સંગે દેહ દુઃખ આપે છે માટે આકુળવ્યાકુળપણું થાય છે તે જ અજ્ઞાન છે. શાસ્ત્રશ્રવણ કરી રોજ સાંભળ્યું છે કે દેહ આત્માથી જુદી છે, ક્ષણભંગુર છે; પણ દેહને વેદના આવ્યે તો રાગદ્વેષપરિણામ કરી બૂમ પાડે છે. દેહ ક્ષણભંગુર છે એવું તમે શાસ્ત્રમાં સાંભળવા શું કરવા જાઓ છો ? દેહ તો તમારી પાસે છે તો અનુભવ કરો. દેહ પ્રગટ માટી જેવો છે; સાચવ્યો સચવાય નહિ, રાખ્યો રખાય નહિ. વેદના વેદતાં ઉપાય ચાલે નહિ. ત્યારે શું સાચવે ? કંઈ પણ બની શકતું નથી. આવો દેહનો પ્રત્યક્ષ અનુભવ થાય છે. તો તેની મમતા કરી કરવું શું ? દેહનો પ્રગટ અનુભવ કરી શાસ્ત્રમાં કહ્યું કે તે અનિત્ય છે, અસાર છે, માટે દેહમાં મૂર્ચ્છા કર્યા જેવું નથી.

જ્યાં સુધી દેહાત્મબુદ્ધિ ટળે નહિ ત્યાં સુધી સમ્યક્ત્વ થાય નહિ. જીવને સાચ ક્યારેય આવ્યું જ નથી; આવ્યું હોત તો મોક્ષ થાત. ભલે સાધુપણું, શ્રાવકપણું અથવા તો ગમે તે લો, પણ સાચ વગર સાધન તે વૃથા છે. જે દેહાત્મબુદ્ધિ મટાડવા માટે સાધનો બતાવ્યાં છે તે દેહાત્મબુદ્ધિ મટે ત્યારે સાચ આવ્યું સમજાય. દેહાત્મબુદ્ધિ થઈ છે તે મટાડવા, મારાપણું મુકાવવા સાધનો કરવાનાં છે. તે ન મટે તો સાધુપણું, શ્રાવકપણું, શાસ્ત્રશ્રવણ કે ઉપદેશ તે વગડામાં પોક મૂક્યા જેવું છે. જેને એ ભ્રમ ભાંગી ગયો છે, તે જ સાધુ, તે જ આચાર્ય, તે જ જ્ઞાની. જેમ અમૃતભોજન જમે તે કાંઈ છાનું રહે નહિ, તેમ ભ્રાંતિ ભ્રમબુદ્ધિ મટે તે કાંઈ છાનું રહે નહિ.

લોક કહે છે કે સમકિત છે કે નહિ તે કેવળજ્ઞાની જાણે; પણ પોતે આત્મા છે તે કેમ ન જાણે ? કાંઈ આત્મા ગામ ગયો નથી, અર્થાત્ સમકિત થયું છે તે આત્મા પોતે જાણે. જેમ કોઈ પદાર્થ ખાવામાં આવ્યો તેનું ફળ આપે છે તે જ સમકિત આવ્યો, ભ્રાંતિ મટ્યે, તેનું ફળ પોતે જાણે, જ્ઞાનનું ફળ જ્ઞાન આપે જ.

આંખે ભર્યો સૂર્ય ત્યાગો પ્રકાશ

-મુનિ પ્રશાન્ત રત્ન વિજય

એકવાર એક ગુરૂએ પોતાના શિષ્યને કહ્યું, "હે શિષ્ય! તું મારી નિ:સ્વાર્થ ભાવે સેવા કરી રહ્યો છે. તેથી મને ઘણોજ સંતોષ થયો છે. ઘણાં વર્ષ તે મારી સેવા કરી અને એમાં જરાયે કચાશ આવવા દીધો નથી. આજે તારે જે જોઈએ તે માંગ."

શિષ્યે કહ્યું, "ગુરૂદેવ, આપની સેવા કરવાથી મારતો આખું જીવતર સુધરી ગયું તમારી સેવા એજ મારે મન બધું છે. આપના ઉચ્ચ ગુણો અને તપસ્વી જીવનની મારા મન પર ખૂબ ઉંડી અસર પડી છે. તમારા જેવું જ વિશુધ્ધ જીવન મારૂ બને તે માટે પ્રયત્નો કરૂ છું પણ મારે એક ઈચ્છા છે. તેથી જો તમે આજ ખરેખર મારા ઉપર પ્રસન્ન જ થયા હો તો તે પૂરી કરવા કૃપા કરો. મને એવી દષ્ટિ આપો કે જેથી હું માણસની અંદરનું બધું જ સ્પષ્ટપણે અવલોકી શકું. આટલી મારા પર કૃપા વરસાવો.

ગુરૂજી તો શિષ્યની માગણી સાંભળી અકળાઈ ગયા. "બેટા! આતો તેં બહુ ભારે વસ્તુ માંગી, આ દષ્ટિ મેળવવા માટે તો ઘોર તપશ્ચર્યા તપવી પડે. અને તપ વિના જો આવી આંતર નિરીક્ષણ દષ્ટિ મળે તો તેનો દુરૂપયોગ થવાનો સંભવ છે. માટે મારી ઈચ્છા છે કે તું કંઈક બીજી જ વસ્તુ માંગ."

પણ શિષ્યને તો એ સિવાય ગુરૂ પાસે થી બીજું કાંઈ ખપતું ન હતું.

તે એકનો બે ન થયો. જો આપ પ્રસન્ન થયા છો તો મારી એજ માંગણી છે. બાકી તો મારે કાંઈ જ આવશ્યકતા નથી.

એટલે ગુરૂએ ન છુટકે પાસે પડેલી એક નાની લાકડી આપી "લે આ લાકડી, તું જેની સામે એને ધરશે. એ માણસમાં જે કાંઈ સારુ-નરસું હશે તે સઘલુંયે તને દેખાશે." શિષ્યતો રાજી-રાજી થઈ ગયો.

પણ શિષ્યને એ ક્યાં ખબર હતી કે આ લાકડી મારા સાધક જીવન ને નષ્ટ ભ્રષ્ટ કરી નાંખશે.

એક વાત નિશ્ચિત છે કે

અનધિકારી ના હાથમાં અનાયાસે આવી પડે લો અધિકાર ભયંકર વિપત્તીનાં વાદળોને નોંતરે છે.

માટે સ્તો જ્ઞાની ભગવંતોએ રચેલા ગ્રન્થો ની શરૂઆતમાંજ તે ગ્રન્થોને ભણવાના અધિકારીનું સ્પષ્ટીકરણ કરે છે. મૂર્ખના હાથમાં જો એ ગ્રન્થ ચડી જાય તો અર્થનો અનર્થ કરે છે. જેનું જ્ઞાન મિથ્યાત્વના આવરણથી ઢંકાઈ ગયું છે તે આગમ ગ્રન્થોના પોતાને અનુકૂળ આવે તેવા અર્થો કાઢશે. અને એ અનર્થી ઉત્સૂત્રની પરંપરા સર્જા દઈ જીવને દુર્ગતિ તો મહેમાન બનાવી દેશે. ગુરૂજી તો નિત્યક્રમાનુસાર સમાધિમાં બેઠા. શિષ્યને થયું "લાવને આ લાકડી ગુરૂજી સામેજ ધરૂં પરીક્ષા તો કરૂં કે લાકડી કેવી પ્રભાવશાળી છે." ત્યાં તો ગુરૂની અંદર એક ખૂણામાં ક્રોધનો અંગારો જોયો, એક બાજુ લોભની રજકણ ઉડતો નજરે પડ્યો, બીજી બાજુ થોડાંક અહંકાર નજરે ચડ્યો, ઉંડે ઉંડે કામનો રાઈજેવડો દાણો પણ

દેખાણો.

શિષ્ય વિચારમાં પડી ગયો. "જ્યારે ગુરૂજીમાં જ હજી આવા દોષો ભરેલા છે. ત્યારે એમની નિશ્રામાં રહીને મારો શું ઉદ્ધાર થવાનો છે?"

વિચારોનું વિજ્ઞાન એવું છે કે ખરાબ વિચારો તત્કાલ અમલમાં આવી જાય છે. જ્યારે સારા વિચારોને અમલમાં લાવવા ઘણા પ્રયત્નો કરવા પડે છે.

ગુરૂ પ્રત્યેના આવા દુર્ભાવે હવે શિષ્યની ગુરૂ પ્રત્યેની શ્રદ્ધા ભક્તિ નાશ પામી. ગુરૂ તો ઘણા જ્ઞાની હતા. શિષ્યનો વ્યવહાર જોઈ બધું જાણી ગયા. આ પેલી લાકડીનોજ પ્રભાવ વર્તાય છે.

શિષ્ય મને લાગે છે. તારા મનમાંથી મારા પ્રત્યેની સેવાના ભાવ ગગડી ગયા છે. શિષ્યે કહ્યું, "ગુરૂજી, હવે હું તમને બરાબર ઓળખી ગયો છું. આટલા દિવસ સુધી હું મિથ્યા ભ્રમણામાં રાચ્યો. હવે મારે તમારૂં કાંઈ પ્રયોજન નથી."

જોયું ને! અનધિકારીના હાથમાં ગયેલી લાકડીએ કેવી તેની શ્રદ્ધાને ભ્રષ્ટ કરી નાંખી. જે ગુરૂ પ્રત્યે અડગ આસ્થા હતી જે ગુરૂ વિના તેને સંસારમાં ક્ષણ પણ કાઢવી વસમી લાગતી હતી. તેજ ગુરૂને કહે છે. હવે મારે મન તમારૂં કાંઈ પ્રયોજન નથી!

ગુરૂએ કહ્યું રે વત્સ! તારી વાત સંપૂર્ણ સત્ય છે. લાકડીના પ્રભાવે તેં મારાજીવનમાં જે દુર્ગુણી અવલોકયા તે બધાજ મારામાં છે. પણ....

મારી એક જ વાત તું માન. એ લાકડી હવે તારી સામે ધરીને થોડીવાર જો,. પછીએ તારે મને છોડીને જવું હોય તો ખુશીથી જજે.

શિષ્યે ગુરૂની ઈચ્છાને માન આપવા ખાતર પોતાની સામે ધરી દીધી. ત્યાં તો કામ, ક્રોધ, મોહ, મત્સર, માયા, અહંકારના કીડા ખદબદી રહ્યા હતા. બધેય અંધકારનું સામ્રાજ્ય વ્યાપ્ત થઈ ગયું. અજ્ઞાનદશાનો તો કોઈ પાર નથી.

શિષ્યતો આ બધું દેખી અકળાઈ ઉઠ્યો.

સત્ય સ્થિતિ સમજાઈ ગઈ.

સમજાઈ ગયેલા સત્યને સ્વીકારવામાં ઢીલ કોણ કરે? સીધો ગયો ગુરૂના ચરણે પડી માફી માંગી. ગુરૂએ કહ્યું, "શિષ્ય! માણસ માત્ર આવા દોષો કરે છે. અનેમાં થોડા કે વધારે અવગુણ રહેલાજ હોય છે. પણ આપણે બીજાના અવગુણ કે દોષ જોઈને તેનો તિરસ્કાર કરવો ન જોઈએ.

"હણો ના પાપીને, દ્વિગુણ બનશે પાપ જગનાં,
લડો પાપો સામે, વિમળ દિલના ગુપ્ત બળથી;
પ્રભુ સાક્ષી ધારી હૃદયભવને, શાન્ત મનડે,
પ્રતિ દ્વેષી કેરૂં હિત ચહી લડો, પાપ મટશે."

પાપીનો તિરસ્કાર કરવાથી જગતમાં પાપ ડબલ થશે. પ્રભુની સાક્ષી હૃદયભવનમાં રાખી શાંત મન વડે વિમળ દિલના ગુપ્તબળ વડે પ્રતિ દ્વેષીનું હિત ઈચ્છીને જો કાર્યસિદ્ધિનો પ્રયાસ કરાયતો અવશ્ય પાપ નાબૂદ થાય.

બીજાના અવગુણોની નિંદા કરવાથી આપણું ભલું ના થાય. સ્વશ્રેયાર્થે તો અન્યમાં વિકસેલા ગુણોજ જોતાં શિખવાની દૃષ્ટિ કેળવવી જોઈએ.

ચિત્તશુદ્ધિ : ધ્યાનને માટે અનિવાર્ય

વિનોબા ભાવે

- સર્વપ્રથમ ચિત્તનું સ્નાન થઈ જવું જરૂરી ચે.
- એક, ચિત્તશુદ્ધિ વગર ધ્યાન સધાતું નથી.
- બે, દઢ સંકલ્પશક્તિને કારણે ચિત્તશુદ્ધિ વગર પણ જો ધ્યાન સધાય તો જેને સંધાયું તેને અને દુનિયાને, બંનેને નુકસાન થાય.

ઘણા લોકો ચિત્તનો મળ ધોયા વિના ધ્યાનની, એકાગ્ર થવાની કોશિશ કરે છે અને તેમનું ચિત્ત દોડતું રહે છે. ભગવાનની પૂજા કરવા બેસતા પહેલાં આપરે સ્નાન કરીએ છીએ. સ્નાન કર્યા વગર પૂજામાં બેસતાં નથી. તે જ પ્રમાણે ધ્યાનને માટે પહેલાં ચિત્તનું સ્નાન થઈ જવું જોઈએ. ચિત્તમાં પડેલો કચરો પહેલાં વાળી લેવો જોઈએ. ત્યારે ધ્યાન સધાશે.

ધ્યાનને માટે ક્યારેક દીપક ક્યારેક જળધારાનો આશ્રય લે છે તે આલંબન છે. ભગવાન આપણી બહાર નથી. તે તો અંદર છે, હૃદયમાં તેના પર આવરણ છે બુદ્ધિનું હૃદયનું. ઉપર આ આવરણો છે અને એ આવરણોથી તે ઢંકાયેલો છે. ફાનસની અંદર જ્યોતિ છે પરંતુ ઉપરના કાચના ગોળાનું આવરણ મેલું છે. આ કાચના ગોળા પર મેશ હશે તો અંદરની જ્યોતિ સાફ નહિ દેખાય. મેલ લૂછી કાઢીશું તો જ્યોત સાફ દેખાશે. તે જ પ્રમાણે બુદ્ધિ ઉપર કચરો ખમ્યો છે. એટલે અંદરની પરમાત્માની જ્યોત દેખાતી નથી. કચરો સાફ કરીએ તો એકદમ પરમાત્મા દેખાશે.

આ ધ્યાનની મુખ્ય પ્રક્રિયા છે.

ચિત્ત મેલું છે તેથી ધ્યાનમાં એકાગ્રતા સધાતી નથી. તો દોષોને દૂર કરવા ચિત્તશુદ્ધિની સાધના કરવી એ ધ્યાન માટે ઉત્તમ સાધન છે. જ્યાં સુધી ચિત્ત શુદ્ધ નહિ થાય ત્યાં સુધી ધ્યાન સધશે નહિ. દસ-પંદર મિનિટ ધ્યાનને માટે બેસીએ, તે ઠીક છે. પરંતુ રાતદિવસ ધ્યાન થાય છે, ધ્યાન સિવાય બીજી કોઈ વૃત્તિ ચિત્તમાં ઊઠતી નથી, કામ કરતાં કરતાં પણ ધ્યાન થઈ રહ્યું છે, મનમાં બીજું કાંઈ આવતું જ નથી. આ બધાને માટે દોષશુદ્ધિ થવી જોઈએ.

ચિત્ત સ્થિર ત્યારે થાય, જ્યારે તે નિર્મળ થાય. જ્યાં સુધી ચિત્તનો મેલ પૂરો ધોવાયો નથી ત્યાં સુધી તેની દોડાદોડ ચાલુ રહેવાની. ચિત્તમાં અશુદ્ધિ હોય ત્યાં સુધી અશાંતિ રહેવાની જ્યાં-ત્યાં ફાંફાં મારવાનાં ચાલુ રહેવાનાં. ચિત્તમાં મેલ હોવાને કારણે દુ:ખ થાય છે. તે અસલી કારણ શોધવાને બદલે બહાર સમાધાનનાં ફાંફાં ચાલે છે. ચિત્તના સમાધાનનું કારણ પરિસ્થિતિ નથી, એની પ્રસન્નતા છે. પ્રસન્નચેતસો હ્યા શું બુદ્ધિ: વર્ય વતિષ્ઠતે પ્રસન્નતા એટલે ખુશ થવું નહિ. પ્રસન્ન એટલે શાંત, નિર્મળ. શંકરાચાર્યે તેને કહ્યું. સ્વાસ્થ્યમય. ચિત્ત પ્રસન્ન હોય તો સહજ શાંતિ પ્રાપ્ત થાય છે. એ મૂળ ઉપાય અજમાવવાને બદલે ભળતી રીતે ચિત્તને સ્થિર કરવાનો પ્રયત્ન કરીશું તો એની કમાન

છટકશે. દબાણ આવવાથી તીવ્ર પ્રત્યાઘાત આવે એ સ્વાભાવિક છે.

નંબર એક, ચિત્તશુદ્ધિ થયા વિના ધ્યાન સધશે નહિ. નંબર બે, જો સધાય તોપણ જેને સધાયું તેને પોતાને અને દુનિયાને નુકસાન થશે. રાવણનું ચિત્ત શુદ્ધ નહોતું. પરંતુ ધ્યાન સધાઈ ગયું. તેની એકાગ્રતા થઈ ગઈ અને ભગવાન પ્રસન્ન થયા. ભગવાને વરદાન માગવા કહ્યું. રાવણે સંહારશક્તિનું વરદાન માગ્યું. ભગવાને તે આપ્યું. પરિણામ શું આવ્યું? તે સંહારક બન્યો. તેનો પોતાનો પણ નાશ થયો. ચિત્તશુદ્ધિ કર્યા વગર ધ્યાન સધાયું, તેથી આવું વિનાશક પરિણામ આવ્યું.

તીવ્ર સંકલ્પશક્તિથી ચિત્તશુદ્ધિ વગર પણ ધ્યાન સધાય છે. તેનું આધુનિક ઉદાહરણ છે, આણુશસ્ત્રોની સૂક્ષ્મ શોધ. જેણે એ શોધ કરી તે અત્યંત એકાગ્ર થયો હતો. તેનું એ ધ્યાન પૂર્ણ હતું. તે સિવાય આટલા સૂક્ષ્મ શસ્ત્રની શોધ સંભવ નહોતી. સંકલ્પ બળવાન હતો અને બળવાન સંકલ્પને કારણે ચિત્ત શુદ્ધિ થયા વગર પણ એકાગ્રતા થઈ ગઈ. પરંતુ તે શસ્ત્રથી દુનિયાનો નાશ થશે ને તેનો પોતાનો પણ નાશ થશે. રાવણનું ઉદાહરણ પૌરાણિક છે. આધુનિક ચિત્તને તે કાલ્પનિક પણ લાગી શકે. તેથી આણુશક્તિની શોધ કરનારનું આધુનિક ઉદાહરણ આપ્યું. તેના પરથી ખ્યાલમાં આવશે કે દૃઢ સંકલ્પશક્તિથી ચિત્તશુદ્ધિ વગર પણ ધ્યાન સધાશે. તેના પરથી ખ્યાલમાં આવશે કે દૃઢ સંકલ્પશક્તિથી ચિત્તશુદ્ધિ વગર પણ ધ્યાન સધાશે. પરંતુ તેનાથી લાભ નહિ. નુકસાન થશે.

પીસ્તાળીશ આગમ નામ ગર્ભિત મહાવીર જિન સ્તુતિ જોડો.

પ્રથમ આચાર શ્રી સૂત્રકૃતાંગ, ઠાણાંગ સમવાય અંગજી,
વિરઆટ પન્નતિ જ્ઞાનધર્મકથા, સાતમુંઉપાશક દશાંગજી;
અંતગડ અનુત્તરોવવાઈ, પ્રશ્નવ્યાકરણ વિપાક ચંગજી,
એક એકાદશ અંગ પ્રરૂપક, મહાવીર નમીયે સુરંગજી ॥ ૧ ॥
ઉવવાઈ સૂત્રશ્રી રાયપસેણી, જીવાભિગમ પન્નવણાજી,
જંબુદ્વિપ સૂરચંદ પન્નતિ, નિરયાવલિ શુભ વરણાજી;
કપ્પવડંસંગ પુપ્ફિયા પુપ્ફચૂલિયા, વહિનદશા મુનિ ચરણાજી,
બાર ઉપાંગ અરથથી પ્રકાશ્યા, વંદું ચોવીશ જિન ચરણાજી ॥ ૨ ॥
ચઉસરણ આઉર પચ્ચકખાણ, ભત્તપરિન્ના સંથારજી,
તંદુલવિયાલી હે વિદથુઈ ધારો, મહાપચ્ચકખાણ વિચારજી;
ચંદા વિજય મરણ સમાધિ, ગણિવિજજા દિણધારજી,
દશ પયન્ના શ્રી જિનવાણી, સ્તવીય હર્ષ અપારજી ॥ ૩ ॥

(આધાર : "જૈન શાસન" વર્ષ-૩ અંક-૩૬)

રચનાકાર : **પૂ. આ. દેવશ્રી વિ. માનતુંગ સૂરિજી મ. સા.**

સંકલન : **મુનિ પ્રશાન્તરત્ન વિજયજી**

મૃગાવતી

-પં. શ્રીપૂર્ણાનન્દવિજયજી 'કુમારશ્રમણ'

"માનવજાતને માટે સર્વથા ઉત્તમોત્તમ ગુણ, સહન શક્તિ અને સ્વાર્થ બલિદાન છે! તે બંને ગુણોની સાક્ષાતકારિતા નારી જીવનમાં દૂધ અન સાકરની જેમ પ્રત્યક્ષ અનુભવાય છે." આ કારણે જ જગતના તિહાસમાં પિતાની પહેલા માતાનું સ્થાન સ્વીકાર્ય છે, જેમકે :-

સીતા રામ, રાધે શ્યામ, પાર્વતી પરમેશ્વર આદિ.

'દુઃખ અને રોગગ્રસ્ત માનવ માત્રના મોઢાથી' ઓ મારી મૉં. Oh my mother, આ શબ્દો જ નીકળે છે પણ પિતાનું નામ લેવાતું નથી.'

અભૂતપૂર્વ સહનતાના કારણે જ માતા પોતાની કુક્ષિમાં નવ મહિના સુધી સંતાનનું પોષણ કરે છે જ્યારે પિતાને કંઈ પણ કરવાનું હોતું નથી. તેથી જ અવસર આવ્યે પોતાના રોગ-શોક આદિની પરવા કર્યા વિના માતાથી સુરક્ષિત સંતાન જ સંસારને શાંતિ અને સમાધિ આપનારો બને છે. આ કારણે જ સ્ત્રીને જગદંબા માનવામાં આવે છે. જે પુરૂષજાતને માટે આધ્યાત્મિકતા, નૈતિકતા અને સદાચારતાનું મૂળ સ્થાન છે.

પરસ્ત્રીને માતૃસમાન નહિ માનનારા પુરૂષના જીવનમાંથી આધ્યાત્મિકતા ચાલી ગઈ હોય છે, નૈતિકતા પરવારી ગઈ હોય છે અને સદાચારિતાનું દેવાળું નીકળેલું હોય છે. માટે જ તેવા પુરૂષોમાં ધર્મના નામે અધર્મ, સદાચારના સ્થાને વિષયવાસના અને આધ્યાત્મિકતાના સ્થાને આડંબર, ધમાલ, પ્રપંચ વધે છે અને માનવ પોતાના વ્યક્તિત્વનો પણ દુશ્મન બને છે. તેમની પ્રચંડ શક્તિ અવળે રસ્તે ચડે છે, બુદ્ધિવૈભવ પરસ્ત્રીઓને લોભાવવામાં કામે આવે છે. જ્ઞાન વિજ્ઞાન પર દ્રાહાત્મક બને છે તથા તેમના રૂપ-રંગ અને ચાલાકી પોતાનું જ નાશ કરવા કામે આવે છે.

ભગવાન મહાવીરસ્વામીના મામા, વૈશાલી ગણતંત્રના અધિનાયક, (પ્રધાન મંત્રી) આર્હત ધર્મના પરમોપાસક અને ગૃહસ્થાશ્રમમાં પણ રાજર્ષિ તરીકે જીવન જીવનારા ચેટક (ચેડા) મહારાજાની સાત પુત્રીઓમાંથી એકને છોડી બીજી બધીય જૂદા જૂદા સ્થળે લગ્નગ્રન્થિથી જોડાયેલી હતી, જેમાં ધારીણી નામની કન્યા, ચંપા નગરીના દધિવાહન રાજાને, મૃગાવતી કૌશાંબીના શતાનિક રાજાને તથા શિવા માલવાધિપતિ ચંડપ્રદ્યોતને પરણી હતી. માટે જ ત્રણે રાજવીઓ પરસ્પર સાઢુના સંબંધથી સંબંધિત હોવા છતાં પર વેશ્યાની જેમ અવળગતિએ ચાલનારી રાજનીતિના અભિશાપે સગાઈ સંબંધો પણ સ્વાર્થપૂર્ણ જ હોય છે, તેથી શતાનિક રાજા વડે દધિવાહન રાજા હાર્યો અને ચંડપ્રદ્યોત રાજા વડે શતાનિક રાજા માર્યો ગયો. તથા ચેડારાજાની એક પુત્રી ચેલ્લણા જે શ્રેણિક (બિંબીસાર) રાજાને પરણી હતી તેના પુત્ર કોણિકે તો તે સમયના કેટલાય રાજા-મહારાજાના હાડકા જ ખોખરા કરી નાખ્યા હતાં. તીર્થંકર પરમાત્મા મહાવીરસ્વામીની વિદ્યમાનતા હોવા છતાં પણ તે રાજાઓનું ક્ષાત્રતેજ જૈન શાસનને રતિમાત્ર પણ મદદગાર બનવા પામ્યું નથી. ઈતિહાસકારો કહે છે કે આવનારા પાંચમા આરાના અભિશાપ સમજો, જેથી મહાવીરના

શાસનને કોણિક ન મળ્યો અને કોણિકને મહાવીરનું શાસન ન મળ્યું. યદિ તે મ ન થયું હોત તો સુવર્ણમાં સુગંધ મળવા જેવો ચમત્કાર સર્જાઈ ગયો હોત! યદ્યપિ જૈનશાસન લોકોત્તર શાસન હોવાથી તે પોતાના અહિંસા-સંયમ અને તપની અતિશયતાને લઈને સૌને માન્ય બને છે તથાપિ નિમિત્ત કારણોની અપેક્ષા રહે તેમાં ખોટું નથી.

મૃત્યુ પામેલા શતાનિક રાજાની મૃગાવતી રાણી બહારથી જેમ ઘણા સુંદર, રૂપાળા, ઘાટિલા અને મોહક હતાં તેમ આંતર જીવનમાં જૈન શાસનના રંગમાં પૂર્ણરૂપે રંગાયેલા હોવાથી ગૃહસ્થાશ્રમની શિયળ મર્યાદામાં ચૂસ્ત હતાં. આત્મામાં જ્ઞાન અને વૈરાગ્યની જ્યોત હતી. નિમિત્ત કર્મોની વક્રતા હશે. જેથી પોતાના બનેવી ચંડપ્રદ્યોત રાજાની કામુકી નજર તેમના પર પડી અને ગમે ત્યારે પણ પોતાના અંત:પુરમાં લાવી મૂકવાની આસુરી વૃત્તિ અને પ્રવૃત્તિનો પ્રારંભ થયો. આમ તો તે રાજાને ભગવાન મહાવીરસ્વામી પ્રત્યે પણ સીમાતીત પ્રેમ હોવાથી સમવસરણમાં બેસીને કલાકો સુધી ઉપદેશામૃતનું પાન કરનારો હતો, પણ હૈયાના મંદિરના ગર્ભદ્વારે કામ-ક્રોધ અને લોભ-માયાના તાંડવ નૃત્ય રમાતાં હોય ત્યારે કોરા ધાકોર હૈયામાં જ્ઞાનામૃતનો પ્રવેશ થતો નથી. સમવસરણમાં બેસે ત્યારે ધર્મનો રાગી બનતો અને ત્યાંથી નીચે ઉતરતાં જ મૃગાવતીને પોતાના પડખે કેવી રીતે લેવી તેના કાવાદાવા પણ સાથે જ રમાતા હતાં, પરંતુ ચેડા મહારાજાની સાતે પુત્રીઓ સતીત્વધર્મ સમ્પન્ન હતી માટે જ અવસર આવ્યે ગૃહસ્થાશ્રમની માયાને પણ છોડી દેવા માટે તૈયાર હતી.

કામનો નશો જ્યારે માનવને ઘેરી લે છે ત્યારે તેમની માનવતા, દાનવતામાં પરિણત થતાં વાર લાગતી નથી. ફળસ્વરૂપે સર્વથા નિર્લજ્જ બનેલા માલવાધિપતિએ પોતાની દાસી દ્વારા મૃગાવતી રાણીને મારા રંગમહેલમાં શય્યાસંગિની થવાનો સંદેશ પાઠવ્યો, જેને સાંભળીને મૃગાવતીના મનમાં વિચાર આવ્યો કે રાજાઓનો પહેલો ધર્મ, પોતાની પ્રજાનું પુત્રવત્ ગામની બેન બેટીઓનું પિતૃવત્, અને દીન-દુ:ખી તથા અનાથોનું રક્ષણ દયાળુ બનીને કરવાનો છે, પરંતુ રાજાઓના કે શ્રીમંતોના જીવનામાં જ્યારે શરાબપાનનો પ્રવેશ થાય છે ત્યારે ઘરમાં સુલક્ષણી, સત્કર્મવતી, રૂપાળી અને ધર્મશીલ પત્ની હોવા છતાં પણ તેમનું મન બીજાઓની રૂપાળી સ્ત્રીઓમાં ભમતું રહે છે. શરાબપાન અને માંસાહારનો ઘનિષ્ટ સંબંધ હોવાથી શરાબનો માશુક (પ્રેમી) માંસાહારી બન્યા વિના રહેતો નથી. પરિણામે ઈન્દ્રિયોના ઘોડા અને મનની શૈતાની કોઈ કાળે પણ મર્યાદિત થતી નથી. માટે જ તે વ્યક્તિ જ્યારે પોતાની ધર્મ પત્ની, પુત્ર, માતાપિતાનો પણ શત્રુ બની શકે છે તો તેના હાથે દેશનું રક્ષણ થશે, તે વાતને મૂર્ખ માણસ પણ માની શકે તેમ નથી, આવા ગુપ્ત પાપાચરણોમાં મૂળ કારણ અનિયત્રિત ઈન્દ્રિયો છે અને તેને તોફાને ચડાવનાર શરાબપાન, ભાંગ, અફીણ, ચરસ, ધુમ્રપાન, કોકાકોલા ઉપરાંત બીજા પણ અપેય પદાર્થો છે. આધ્યાત્મિકતાનું અજીર્ણ થયેલ ભારતદેશની કમનશીબી છે કે શરાબપાનમાં બેભાન બનીને પોતાનું સર્વનાશ નોતરેલા યાદવોનું ઉદાહારણ ધ્યાનમાં લેવાતું નથી.

અત્યારે હું સહાય વિનાની છું, પુત્ર સાવ નાનો છે, તેમ છતાં પણ શિયળધર્મ મારો પરમ ધર્મ છે, એટલું જ નહિં પરન્તુ સ્ત્રીમાત્રનું આભુષણ જ શિયલ છે, માટે 'આત્માનં સતતં રક્ષેત્" આ ન્યાયે મારે યુક્તિ પૂર્વક સમય પસાર કરવો જોઈએ તેમ સમજીને પ્રત્યુત્તર પાઠવતાં કહેવડાવ્યું કે 'અત્યારે હું તત્કાળ વિધવા બનેલી હોવાથી પતિના શોકમાં સંતપ્ત છું અને પુત્ર હજુ બાળક છે. તેથી અત્યારે હું આપશ્રીના સંદેશને માન્ય ન કરી શકું તો ખોટું લગાડશો નહિ.

રાજાએ સંદેશને માન્ય રાખ્યો, બાવલની શૂળનું કષ્ટ થોડું જ હોય પણ મનને

વળગેલું કામવાસનાનું શૂળ માનવના જીવનમાંથી સ્થિરતા, ધીરતા-ગંભીરતા અને ખાનદાનીના ધર્મોને અલવિદા દેનારા બને છે. સંદેશાથી રાજાને થોડા સમય માટે શાન્તિ રહી, પણ બધાય નશા કરતાં કામવાસનાનો નશો જબ્બર હોય છે. તેથી ફરીથી સંદેશો કહેવડાવ્યો અને મૃગાવતીએ પ્રત્યુત્તર પાઠવ્યો કે "નગરનો કિલ્લો ખૂબ જ મજબુત કરાવી દો જેથી મારો પુત્ર સુરક્ષિત રહી શકે." કામવશ બનેલા રાજાએ પોતાના રાજ્યના ખર્ચે કૌશામ્બી નગરનો કિલ્લો બધી રીતે મજબુત કરાવી લીધો. આટલા સમયમાં તો પોતાનો પુત્ર ઉદાયન પણ ઉંમરલાયક થઈ ગયો હતો. તેથી હવે ચંડપ્રદ્યોતનો સંદેશો આવે તે પહેલાં જ સર્વસ્વ ત્યાગ વિના બીજો માર્ગ નથી, તે વિના માલવાનો રાજા શાંત પણ થશે નહીં.

અને બનવાજોગ હતું કે-દયાના અવતારી, ભગવાન મહાવીરસ્વામી પણ ગ્રામાનુગ્રામ વિહાર કરતાં કૌશામ્બી નગરમાં પધાર્યાં. સમવસરણની રચના થઈ અને પૂર્વાભિમુખ પરમાત્માની દેશના સાંભળવા માટે નરનારીઓ તેમજ ચંડપ્રદ્યોત રાજા પણ આવી ગયો હતો. આ બાજુ પોતાના સર્વસ્વના ત્યાગનો નિર્ણય કરીને પોતાના પુત્ર તથા સામંતો સાથે મૃગાવતીજી પણ સમવસરણમાં આવી ગયા હતાં. પ્રસંગને અનુરૂપ અહિંતદેવની વાણી સાંભળ્યા પછી રાણી ઊભા થયા અને પરમાત્માના ચરણે દીક્ષિત થવાની ભાવના વ્યક્ત કરી. પ્રભુએ તથાસ્તુ કહ્યું. ત્યાર પછી ચંડપ્રદ્યોત રાજાને સંબોધિત કરતાં કહ્યું કે-રાજન્! તમે મારા પિતા તુલ્ય છો, માટે મારા પુત્રને તમારા ખોળામાં બેસાડીને તમારી પાસે દીક્ષાની અનુમતિ માગુ છું. આપ શ્રીમાન ઉદાર થઈને મને દીક્ષિત થવામાં મદદગાર બનશો. આંખના પલકારે જ રાજાનો કામનો નશો ઉતરી ગયો અને મૃગાવતીએ ચંદનબાળાનું શિષ્યત્વ સ્વીકારી લીધું. કરોડોની સંખ્યામાં સ્થિત દેવો-દેવીઓ, ઈન્દ્રોઈન્દ્રાણીઓ, ગણધર ભગવંતો તથા મુનિરાજોએ પણ મૃગાવતીના સર્વસ્વ બલિદાનની ભૂરિ ભૂરિ અનુમોદના કરી તથા નારી જીવનામાં છુપાયેલી સ્વાર્થ બલિદાનની શક્તિના પેટ ભરીને વખાણ કર્યાં.

ચોવીશમાં તીર્થંકર પરમાત્માના નિર્વાણ પછી તત્કાલ જ બેસનારા પાંચમાં આરાના એંધાણ હશે જેથી લોકોત્તર શાસનમાં પણ પરમાત્માનો જ પ્રથમ શિષ્યાભ્યાસ ગોશાળો, અને ઉત્કૃષ્ટતમ વૈરાગ્યથી દીક્ષિત થનારા જમાલી, આ બંનેના કારણે શાસનને ધક્કો લાગ્યો હતો, તે ઉપરાંત શ્રેણિક પુત્ર કોણિકે ચેડા મહારાજા સાથે ભયંકરતમ યુદ્ધ રમીને એક કરોડ એંશી લાખ માનવોને મોતનાં ઘાટે ઉતાર્યા હતાં. મૃગાવતી મહાવીરસ્વામીના મામાની પુત્રી હતી. કદાચ ભવિતવ્યતાના કારણે કંઈક અજુગતું થઈ ગયું હોત તો શાસનની અવહેલના થવામાં વાર લાગવાની ન હતી. પરંતુ તે કટોકટીના સમયને પારખી મૃગાવતીનું દીક્ષા ગ્રહણ શાસનને બચાવવાનું કારણ બન્યું છે.

વ્યવહાર પક્ષે ચન્દનબાળા ભાણેજ છે અને મૃગાવતી માસી છે. જ્યારે આધ્યાત્મિક દૃષ્ટિએ ચન્દનબાળા ગુરુણી છે અને મૃગાવતી શિષ્યા છે. શિષ્યમાં યદિ ખાનદાની જ હોય તો તેનું સર્વસ્વ બલિદાન ગુરુણી તથા ગુરુને પણ તારનારૂં બને છે. અહિ પણ એમ જ થયું છે કે મૃગાવતી શિષ્યાને પ્રથમ કેવળજ્ઞાન થયું હતું તો પણ ગુરુણીની સેવા કરવાનું ચૂક્યાં નથી. પરિણામે શિષ્યાનું કેવળજ્ઞાન ગુરુણીના કેવળજ્ઞાનનું નિમિત્ત બનવા પામ્યું છે.

આવા પ્રસંગોને જોયા પછી અને તે પ્રત્યે શ્રદ્ધાન્વિત થયા પછી નારી અબલા છે, નરકની ખાણ છે, તથા અદિઠ કલ્યાણી છે ઈત્યાદિ શબ્દોને બોલનાર, લખનાર તથા સાંભળનારને ક્યા શબ્દોથી નવાજવા?

★ ★ ★

ज्ञानसूर्य — श्रीमद् यतीन्द्र जयन्त ज्ञानपीठ — जीवन प्रभात

धार्मिक ज्ञान का सूर्य हम सभी के परिवारों में
जीवन प्रभात का उदय करे इस हेतू
अ. भा. श्री राजेंद्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा
पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी महाराज की
प्रेरणा से संस्थापित –

श्रीमद् यतीन्द्र जयन्त ज्ञानपीठ

के धर्म–शिक्षा प्रचार अभियान में सहयोग दीजिए।

समाज संगठन, धार्मिक शिक्षा प्रसार, समाज सुधार तथा आर्थिक विकास के दिव्य उद्देश्यों पर स्व. गुरुदेव श्रीमद् यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज द्वारा स्थापित

अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद
को सुदृढ बनाइये।

परिषद के सदस्य बनिए, अपने यहां परिषद शाखा का गठन कीजिए।
धार्मिक पाठशाला स्थापित कीजिए।

सुरेन्द्र लोढ़ा — महामंत्री

सेवन्तीभाई एम. गोरखिया — अध्यक्ष

अ. भा श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद

सम्पर्क–सूत्र :– **सुरेन्द्र लोढ़ा**, राष्ट्रीय महामंत्री,
अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद –
मन्दसौर ४५८ ००२ (म. प्र.)

- शाश्वत धर्म के संरक्षक -

* शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया - सुरा निवासी , * शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी, * कटारिया संघवी भंवरलाल, उगमचंद, विरेन्द्रकुमार राजेन्द्रकुमार बेटा पोता तोलाजी धाणसा निवासी, * शा. तिलोकचंद, नरसींगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, बेटा पोता प्रतापचंदजी - सरत निवासी, * संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हिरालाल शांतिलाल जिनेशकुमार, बेटा पोता कन्नाजी कटारिया-जाखल निवासी. * नैनावा श्री जैन श्वेतांबर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा, * श्री समकित गच्छीय जैन श्वेतांबर संघ-धानेरा, स्व. मयाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपूत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जडावबेन कातरेला वोहरा आहोर निवासी, * मेहता तेजराज, जयंतीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी, * मोरखीया चंदुलाल, बाबुलाल, रसिकलाल मेहशकुमार, परेशकुमार, अल्पेशकुमार, रुपेशकुमार, पुत्रपौत्र स्व. मोरखीया नानचंद मूलचंद भाई-थराद निवासी, * स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ठेलीबाई सुपुत्र बाबुलाल, सुमेरमल, अशोककुमार - रमणिया निवासी,
* श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट - मद्रास, * स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतीलाल, किशोरकुमार, बेटा पोता खुशालजी रामाणी-गुडा बालोतान (फर्म. शांतिलाल ज्वेलर्स, नेल्लोर) * शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेशकुमार, किशोरकुमार, कमलेशकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता सांकलचंद जेरूपजी - भैंसवाड़ा निवासी (गोल्डन ज्वेलरी, नेल्लोर), * स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र कांतिलाल प्रपौत्र रमेशकुमार बागरा निवासी, * श्री श्वेताम्बर जैन संघ - सियाणा, * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - थराद * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - चौराऊ, * दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी ह. गुमानमल सावलचंदजी चेरिटेबल ट्रस्ट, बम्बई , सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांशकुमार, श्रेणिककुमार बेटापोता बेचरदासजी छाजेड़ - नैनावा निवासी हाल मु. सांचोर (राज), * श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी - सोनारी सेरी - थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा. * स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में चंदनमल, कैलाशचन्द, हंसराज, शीतलकुमार, अश्विनकुमार परिवार बागरा निवासी, फर्म : राजस्थान फायनेन्स कार्पोरेशन - काकीनाडा, * श्री विमलनाथ जैन डोसी दहेरासर - थराद. • श्री सौधर्मवृहत्पागच्छ जैन संघ-आणंद

डाक पंजीयन क्रमांक MH/THN १६१ पहले से डाक चुकाये बिना भेजने की
अनुमति प्राप्त लायसेन्स नं. ३५

क्या आप जानते हैं?

कि आज के प्रचलित टूथपेस्टों में उपयोग में लाये जाने वाले फॉस्फेट और जिलेटिन का निर्माण मृत प्राणी की हड्डिओं से किया जाता है? कई लोगों को इस का पता नहीं है. मृत प्राणी की हड्डियों का इस्तेमाल जिस टूथपेस्ट या टूथ पाउडर में किया जाता हो, इसको उपयोग में लाना उचित नहीं है.

अमर टूथपेस्ट — टूथपाउडर में

किसी भी अभक्ष्य पदार्थ का इस्तेमाल नहीं होता. आयुर्वेदिक जड़ी बुट्टियों का इन में बहुत ही सावधानीभरा उपयोग किया जाता है

आयुर्वेदिक
अमर
टूथपेस्ट-टूथपाउडर

**नये युग की हर्बल-लहर
जो दांतों को निरोगी, मज़बूत और
चमकता रखे.**

अमर टूथपाउडर, एक्स्ट्रा स्ट्राँग के नियमित उपयोग से पायोरिया तक के दांत और मसूड़ों के विविध रोग मिट सकते हैं. और श्वास की दुर्गंध भी दूर होती है.

आदर्श दंत-रक्षक — रेग्युलर टूथपेस्ट. रु. ७.५०
आदर्श दंतरोग-निवारक — स्ट्राँग टूथपेस्ट. रु. ८.५०
पायोरिया के इलाज के लिए आदर्श — एक्स्ट्रा स्ट्राँग टूथपाउडर. रु. ११.५०

भारत का एकमात्र अहिंसक आयुर्वेदिक उत्पादन.

निर्माता: स्वामि औषधालय प्रा. लि., ४९७, एस.वी.पी. रोड, बम्बई-४०० ००४.
फैक्ट्री: ४६४, न्यू जी.आई.डी.सी.; कतारगाम, सुरत-३९५ ००८.

संपादक - जे.के.संघवी अ.भा. श्री. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के लिये
डपूजी आर्ट प्रिन्टर्स- थाने में मुद्रित।